25 वर्ष संवाद

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र
स्वर्ण जयंती
Golden Jubilee
50 Years of Bridging Space & Earth
National Remote Sensing Centre
1974 - 2024

सामान्य अंक, 2024

इसरो isro
एन आर एस सी
nrsc
50 वर्ष Years

23 August
NATIONAL SPACE DAY
Touching lives while touching the Moon: India's Space Saga

अनुक्रमणिका....

विषय	पृष्ठ सं.
♦ आमुख	4
♦ संदेश	5
1. राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र : स्वर्ण-जयंती की यात्रा...	5
2. संवाद : रजत-जयंती से स्वर्ण-जयंती की राह में सह-यात्री	10
3. जमीन से छत तक : शहरी खेती के लिए जल-कृषि (हाइड्रोपोनिक्स) का उपयोग	13
4. मस्तिष्क और मानसिकता: प्लेसबो प्रभाव के रहस्य	16
5. दंत स्वास्थ्य : मिथक और वास्तविकताएं	18
6. भारत का झील-पुरुष - आनंद मल्लिगावड	20
7. एनआरएससी की प्रमुख गतिविधियां	22
8. उपलब्धियां	32
9. क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र -(पूर्व) कोलकाता	34
10.क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - (पश्चिम) जोधपुर	36
11.क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - (मध्य) नागपुर	38
12.क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - (उत्तर) दिल्ली	40
13. क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-(दक्षिण) बेंगलुरू	42
14. नाविक और सुदूर संवेदन भू –केंद्र	43
15. 2047 की हिंदी	44
16. डुआर्स की एक अनोखी यात्रा...	46
17. होली के रंग / आओ, दीप जलाएं	48
18. देश के वैज्ञानिकों के नाम-शुभ संदेश	49
19. मनुष्य तू बड़ा महान	50
20. पिता का आशीर्वाद –विश्वास बड़ी चीज है	51
21. स्ट्रोक का साक्षी: अपने प्रियजनों की जान बचाने का आह्वान	53
22. विनम्रता और धैर्य	55
23. धर्म और विकास	56
24. सफलता की राह	57
25. सायोनारा	58
26. विश्वास की ताकत...	60
27. भारतीय समाज पर अंबेडकर का प्रभाव	61
28. जीवन में असफलताओं से निपटना	62

*प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो। संवाद के प्रकाशन में संपादक मंडल के साथ-साथ एनआरएससी की सामान्य फोटोग्राफी और मुद्रण सुविधा का विशेष योगदान है। अतः संवाद, मुद्रण सुविधा एवं फोटोग्राफी प्रति आभारी है। पत्रिका पूर्ण रूप से हिंदी अनुभाग द्वारा तैयार कर आंतरिक रूप से मुद्रित की गई है। यह पत्रिका www.nrsc.gov.in पर उपलब्ध है।

इसरो isro nrsc

संवाद
सामान्य अंक, 2024

संरक्षक
डॉ. प्रकाश चौहान
निदेशक एवं अध्यक्ष, राभाकास

सलाहकार
श्री अंकुर श्रीवास्तव, भा.रे.भं.से.
नियंत्रक

मुख्य संपादक
डॉ. एन. अपर्णा
उप निदेशक, एसआर एवं क्यूए

संपादक
श्री राम प्रकाश यादव
सहा. निदेशक (रा.भा.)

संपादक मंडल
श्रीमती भावना सहाय
डॉ. जया सक्सेना
श्री सत्येंद्र सिंह रघुवंशी
श्री सोनू सिंह तोमर
श्रीमती रीधि शुक्ला

मुखपृष्ठ, पार्श्व पृष्ठ एवं पत्रिका डिज़ाइन
श्री रामराज रेड्डी

पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं पार्श्व पृष्ठ एनआरएससी के 50 वर्ष (स्वर्ण जयंती समारोह) एवं संवाद के 25 वर्ष को ध्यान में रख कर डिज़ाइन किया गया है।

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
बालानगर, हैदराबाद-500037

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351
तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,
केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि
अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से;
अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से
अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे,
उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे;
अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए;
अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल
और प्रभावशाली बनाते हुए
राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे।
हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति
सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

चलो मिलकर
मुहिम चलाये,
आज ही से.

14 सितंबर

हिंदी अपनाए

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
बालानगर, हैदराबाद-500 037, तेलंगाना, भारत
टेलिफोन : +91 40 23884001 / 04

इसरो isro

Government of India
Department of Space
National Remote Sensing Centre
Balanagar, Hyderabad-500 037, Telangana, India
Telephone: +91 40 23884001 / 04

डॉ. प्रकाश चौहान / Dr. Prakash Chauhan
उत्कृष्ट वैज्ञानिक & निदेशक
Outstanding Scientist & Director

आमुख

एनआरएससी ने हाल ही में स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान विविध हिंदी एवं द्विभाषी तकनीकी साहित्यों का प्रकाशन किया है। अब एनआरएससी हिंदी गृह-पत्रिका **संवाद**-2024 (सामान्य अंक) का प्रकाशन किया जा रहा है। एनआरएससी की रजत-जयंती (सहस्राब्दी- वर्ष 2000) के अवसर पर संवाद पत्रिका की शुरुआत की गई थी। मुझे बेहद खुशी है कि पिछले 24 साल से संवाद पत्रिका का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है, जो राजभाषा (हिंदी) की प्रगति में मील के पत्थर साबित हो रहे हैं। संवाद-पत्रिका एनआरएससी की सामान्य गतिविधियों के साथ तकनीकी कार्यकलापों एवं तकनीकी विषय-वस्तुओं को प्रकाशित एवं प्रसारित कर वैज्ञानिक / तकनीकीविदों के ज्ञान / शोध / उपलब्धियों को आमजन तक पहुंचाने में सेतु का काम करती है।

पिछले महीने, एनआरएससी की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 1970 दशक के प्रारंभ में हमारे दूरदर्शी-पूर्वजों ने सिकंदराबाद के किराए के परिसर से रिमोट सेंसिंग गतिविधियों की शुरुआत की थी। तत्कालीन एनआरएसए की स्थापना विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत 02 सितंबर 1974 को एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में की गई थी। सोसायटी के शासी-निकाय की पहली अध्यक्षता कोई और ने नहीं, बल्कि भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने की थी। 1980 के दशक में शादनगर में अर्थ स्टेशन बनाकर उपग्रह डेटा अभिग्रहण किया जाने लगा। क्रमशः भू-केंद्र, शादनगर में डेटा अभिग्रहण, संसाधन और वितरण के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं स्थापित की गईं। 2008 में एक स्वायत्त संगठन से इसरो के सरकारी संगठन में परिवर्तित किया गया और अब एनआरएससी के मुख्य कार्यस्थल - बालानगर, शादनगर, जेडीमेटला और बेगमपेट हवाई अड्डा के साथ 05 क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र में अवस्थित हैं। डेटा अभिग्रहण के लिए ग्राउंड स्टेशन शादनगर के अलावे, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई ग्राउंड स्टेशन स्थापित किए गए हैं।

आज एनआरएससी जिओ-पोर्टल **"भुवन"** के माध्यम से 195 से अधिक अनुप्रयोगों के साथ 24 से अधिक मंत्रालयों और राज्य विभागों की सहायता कर रहा है। भारत सरकार के कई विशिष्ट (Flagship) कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में भी मदद कर रहा है, जिसमें SIS-DP, NDEM, NICES, भुवन, भूनिधि, भू-संसाधन, वन, शहर, समुद्र, कृषि, जल, खनिज, आपदा प्रबंधन आदि शामिल हैं। हमलोग प्राकृतिक आपदाओं को नहीं रोक सकते हैं, लेकिन अपने ज्ञान और सुदूर संवेदन तकनीक के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए आपदा-पूर्व, आपदा के दौरान और आपदा के बाद कई आयामों से सुसज्जित हो सकते हैं। इसी उद्येश्य से राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न आपदाओं को संबोधित करने लिए बाढ़ जोखिम क्षेत्रीकरण एटलस, भूस्खलन एटलस, गंगा/ ब्रह्मपुत्र/सिंधू नदी घाटियों के हिमनद एटलस तैयार कर संबंधितों को प्रदान किए जाते हैं। देश में आपदा से निपटने के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के साथ मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशालाएं एवं अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय वचनबद्धताओं के तहत इंटरनेशनल चार्टर स्पेश एंड मेजर डिजास्टर, सेंटिनल एशिया, नासा-नौआ-इसरो सहयोग के माध्यम से विभिन्न आपदा घटनाओं से संबंधित भारतीय रिमोट सेंसिंग डेटा प्रदान कर आपातकालीन सहायता की जाती है। इसरो, विश्व में अंतरिक्ष और प्रमुख आपदाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय चार्टर में अग्रणी संगठनों में से एक है। रणनीतिक योजना तथा चार्टर और सेंटिनल एशिया की अन्य सभी गतिविधियों के लिए भी एक सक्रिय सदस्य है। हाल ही में बॉन, जर्मनी में हुई चार्टर बोर्ड की बैठक में, इसरो को चार्टर गतिविधियों के संचालन और बोर्ड की बैठक आयोजित करने के लिए अग्रणी देश के रूप में चिन्हित किया गया है।

एनआरएसी को प्राकृतिक आपादाओं के सभी फेज में अखिल भारतीय स्तर पर आपातकालीन प्रबंधन हेतु राष्ट्रीय डेटाबेस प्रदान करने के लिए **जिओस्मार्ट इंडिया उत्कृष्टता पुरस्कार-2023** तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), मुम्बई द्वारा **राष्ट्रीय भूस्थानिक पुरस्कार-2024** प्रदान किया गया है।

एनआरएससी **विकसित भारत @ 2047** को साकार करने की दिशा में केंद्र / राज्य सरकारों के विभागों / आमजनों को अंतरिक्ष-आधारित सूचनाएं / अगली पीढ़ी को उनकी भाषा में सूचना पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी कड़ी में स्वर्ण जयंती के अवसर पर (i) राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन में इसरो की भूमिका (हिंदी) (ii) कॉफी टेबल बुक : 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा-1974-2024 (द्विभाषी), भारत का कॉफी बगान एटसल (द्विभाषी) के साथ विकसित भारत की ओर @ 2047 : अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के माध्यम से भारत परिवर्तन - समाज को प्रभावित करने वाली 50 प्रमुख उपलब्धियां आदि का भी प्रकाशन किया गया है।

आपके हाथ में एनआरएससी हिंदी गृह-पत्रिका **संवाद**-2024 के सामान्य अंक के माध्यम से एनआरएससी के वैज्ञानिकों / कर्मचारियों एवं परिवार के सदस्यों की सृजनात्मक कला और एनआरएससी के 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा से रुबरु होंगे। मैं सभी लेखकों एवं संपादक-मंडल को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि पाठकगण इन लेखों से लाभान्वित होंगे।

शुभकामनाओं के साथ ...

(डॉ. प्रकाश चौहान)
निदेशक एवं अध्यक्ष (राभाकास), एनआरएससी

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
बालानगर, हैदराबाद-500 037, तेलंगाना, भारत
टेलिफोन : +91 40 23879572-76
+91 40 23879261-65
फैक्स : +91 40 23878648

इसरो isro

Government of India
Department of Space
National Remote Sensing Centre
Balanagar, Hyderabad-500 037, Telangana, India
Telephone : +040-23879572-76
+040-23879261-65
Fax : +040-23878648

संदेश....

भारत विभिन्न बोलियों एवं भाषाओं वाला देश है और विभिन्नता होते हुए भी हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा है हमारी 'हिंदी'। हिंदी मात्र एक भाषा न होकर भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर वृद्धि कर रही है। भारत आज अनवरत रुप से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है और इस विकास यात्रा में भाषा और विज्ञान दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि निज भाषा में प्राप्त ज्ञान व्यक्ति के अन्तर्मन तक पहुंचता है जो व्यक्तित्व को और अधिक प्रखर बनाता है।

"संवाद" एनआरएससी की गृह-पत्रिका ही नहीं, बल्कि अब हमारी पहचान बन गई है। प्रत्येक वर्ष संवाद के दो अंक प्रकाशित किए जाते हैं, जिसमें जीवन-जगत् के विविध रंगों के साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों के लेख प्रकाशित किए जाते हैं। एनआरएसी अनवरत, अविरल, अविराम संवाद-पत्रिका का प्रकाशन पिछले 24 वर्ष से कर रहा है। पत्रिका की लोकप्रियता और देश में रिमोट सेंसिग की उभरती तकनीक की बढ़ती मांग को देखते हुए 2013 से संवाद-पत्रिका के तकनीकी अंक प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। अब प्रतिवर्ष संवाद पत्रिका के दो (सामान्य एवं तकनीकी) अंक नियमित रुप से प्रकाशित किए जाते हैं।

संवाद-पत्रिका एनआरएससी की तकनीकी एवं प्रशासनिक गतिविधियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। देश में रिमोट सेंसिंग की व्यापकता और उभरती तकनीक को कर्मचारियों / आमजन / स्कूल / कॉलेजों तक पहुंचाने में संवाद महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। एनआरएससी के पांच क्षेत्रीय केंद्र हैं, जो राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से "क", "ख" और "ग" तीनों क्षेत्रों में हैं और राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार लक्ष्य पूरे कर रहे हैं। वर्ष 2022 और 2023 में एनआरएससी हैदराबाद, क्षेत्रीय केंद्र-नागपुर, क्षेत्रीय केंद्र-जोधपुर और क्षेत्रीय केंद्र-कोलकाता में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किया गया और माननीय समिति ने एनआरएससी और इसके क्षेत्रीय केंद्रों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की सराहना की है। एनआरएससी में हिंदी कार्यान्वयन के साथ-साथ, तकनीकी साहित्य सृजन की ओर विशेष पहल की जा रही है, इसी श्रृंखला में पत्रिका और स्वर्ण जयंती के अवसर पर कई हिंदी/द्विभाषी पुस्तकों को विमोचन भी किया गया है, जिसके माध्यम से अंतरिक्ष जैसे जटिल विषयों को समझना आसान होगा और पाठकों को हिंदी या अंग्रेजी में पढ़ने का विकल्प मिलेगा।

वर्तमान परिस्थिति में जहां विश्व और भारत डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहा है। हमने भी पत्रिकाओं को ई-पत्रिका के रुप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। अब हमारी संवाद और पी2पी (द्विभाषी) संबंधितों तक ई-पत्रिका के रुप में पहुंच रही हैं। हर अंक की तरह, इस अंक में भी साहित्य के विविध विधाओं को शामिल किया गया है। आशा है कि यह पाठकों के लिए रुचिकर और ज्ञानवर्धक होगा।

संवाद पत्रिका के सामान्य अंक के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं

(अंकुर श्रीवास्तव) भा.रे.भं.से.
नियंत्रक, एनआरएससी

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन **Indian Space Research Organisation**

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र : स्वर्ण-जयंती की यात्रा...

भावना सहाय, राम प्रकाश यादव, एनआरएससी, हैदराबाद

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन एजेंसी (NRSA) की स्थापना 02 सितंबर 1974 को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा (13 दिसम्बर 1973 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी के आधार पर) एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में की गई थी। संगठन का उद्देश्य देश में सुदूर संवेदन गतिविधियों को आरंभ करना और सुविधाएं प्रदान करना था। शुरुआत में हवाई सर्वेक्षणों पर जोर दिया गया, तथा एनआरएसए ने बाद में रक्षा मंत्रालय की अनुसंधान उड़ान सुविधा के कार्यों को अपने हाथ में ले लिया। एनआरएसए ने 16 अप्रैल 1975 को आंध्र प्रदेश (तत्कालीन) / तेलंगाना के सिकंदराबाद में किराए के परिसर से काम करना शुरू किया। NRSA सोसायटी के शासी-निकाय की अध्यक्षता कोई और ने नहीं, बल्कि भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने की थी। विंग कमांडर के. आर. राव, अति विशिष्ट सेवा मेडल (सेवानिवृत्त) को 15 जनवरी 1975 को निदेशक और मुख्य कार्याकारी के रूप में नियुक्त किया गया। पहली तकनीकी गतिविधि के रूप में एक हवाई भूभौतिकीय सर्वेक्षण शुरू किया गया।

आंध्र प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) ने जनवरी 1976 के दौरान एनआरएससी को 25 एकड़ भूमि हस्तांतरित की, और आवश्यक भवनों के निर्माण के लिए एक मास्टर प्लान तैयार किया गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून के भारतीय फोटो- निर्वचन संस्थान (IPI) को 1977 में एनआरएसए में विलय किया गया।

भारत और अमेरिका के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अनुसार नासा द्वारा लॉन्च किए गए उपग्रहों की लैंडसैट श्रृंखला से सीधे पृथ्वी संसाधन डेटा प्राप्त करने के लिए एक अर्थ स्टेशन को अधिकृत और स्थापित करने की योजना बनाई गयी। 1977-78 के दौरान आंध्र-प्रदेश सरकार ने हैदराबाद के दक्षिण में शादनगर के पास 316 एकड़ भूमि आवंटित की, और 01 जनवरी 1980 को अर्थ स्टेशन के परिचालन की घोषणा की गयी। इसके साथ ही एनआरएसए ने देश में पहली परिचालन उपग्रह डेटा अभिग्रहण (रिसेप्शन) सुविधा की स्थापना की।

एनआरएसए को 1980 में एक स्वायत्त केंद्र के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से नव-निर्मित अंतरिक्ष विभाग में हस्तांतरित कर दिया गया। 1983 में भारतीय फोटो निर्वचन संस्थान (IPI) का नाम बदलकर भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (IIRS) कर दिया गया। राष्ट्रीय स्तर के उपयोग कार्यक्रम के तहत वन और गैर-वन क्षेत्रों का मानचित्रण तथा बंजर भूमि का मानचित्रण प्रारंभ किया गया। सुदूर संवेदन अनुप्रयोग मिशन (RSAM) शुरू किया गया, जिसके अंतर्गत भूमि उपयोग/भूमि कवर, महासागर, सूखा, बाढ़ आदि के क्षेत्रों में राष्ट्रीय परियोजनाएं शुरू की गईं। 1988 में पहले भारतीय रिमोट सेंसिंग (IRS) उपग्रह IRS-1A से डेटा अभिग्रहण किया गया। इसी दौरान NRSA ने अंतरराष्ट्रीय विपणन (मार्केटिंग) क्षेत्र में भी कार्य शुरू किया। संयुक्त राज्य अमेरिका में EOSAT से IRS डेटा रिसेप्शन और संसाधन सुविधा स्थापित की गई। इसके अलावा पूरे विश्व में भी अंतर्राष्ट्रीय ग्राउंड स्टेशन स्थापित किए गए।

01 नवंबर 1995 को संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा मान्यता प्राप्त एशिया और प्रशांत क्षेत्र में अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा केंद्र (CSSTE-AP) को भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, देहरादून में स्थापित किया गया। भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (IIRS) को 30 अप्रैल, 2011 को इसरो के तहत स्वतंत्र इकाई बनाया गया। दिसंबर 2009 के दौरान देहरादून, कोलकाता, जोधपुर, नागपुर, और बेंगलुरू में अवस्थित क्षेत्रीय सुदूर संवेदन सेवा केंद्रों (RRSSC) को एनआरएससी के साथ विलय किया गया और उनका नाम बदलकर क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (RRSC) कर दिया गया। क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - देहरादून को 01 नवंबर, 2011 को भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (IIRS) देहरादून में विलय कर दिया गया। 2012 में सार्वजनिक उपयोग के लिए उपग्रह रिमोट सेंसिंग डेटा से संबंधित सेवाएं और

अनुप्रयोग प्रदान करने के लिए इसरो के जियोपोर्टल भुवन की स्थापना की गई। पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों के लिए एकीकृत मल्टी मिशन ग्राउंड सेगमेंट (IMGEOS) सुविधा, शादनगर परिसर में स्थापित की गई, जो विभिन्न उपग्रहों से डेटा अभिग्रहण के लिए अत्याधुनिक प्रणालियों से सुसज्जित है। राज्य और केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के लिए कृषि, जल संसाधन, भूमि संसाधन सूची और निगरानी, वानिकी और पारिस्थितिकी, भूविज्ञान, शहरी अध्ययन और भू-सूचना विज्ञान तथा आपदा प्रबंधन सहायता के लिए कई राष्ट्रीय मिशन परियोजनाएं की जा रही हैं।

वर्तमान में एनआरएससी देश के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सुदूर संवेदन डेटा और अनुप्रयोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई परिसरों के माध्यम से कार्य करता है। निम्न परिसरों/क्षेत्र/समूह में सुदूर संवेदन क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं :

हैदराबाद के मुख्य परिसर बालानगर में प्रशासन, सुदूर संवेदन अनुप्रयोग, हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं। रिमोट सेंसिंग अनुप्रयोगों का दृष्टिकोण अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी उपयोग के तरीकों को विकसित करना और राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों की सूची और निगरानी को संचालित करना, तथा आउटरीच के माध्यम से मॉडलिंग और आपदा प्रबंधन और क्षमता निर्माण के लिए समय पर इनपुट प्रदान करना है। इसलिए विषयगत डेटाबेस का निरंतर निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए: भूमि उपयोग/लैंडकवर, भू-आकृति विज्ञान, फसल मानचित्र, जल निकायों की जानकारी आदि उपयुक्त स्थानिक, वर्णक्रमीय, रेडियोमेट्रिक और कालिक रिज़ॉल्यूशन पर की जाती है। अनुप्रयोग के अलग अलग विषयों लिए अंतर-विषयक टीमें हैं - कृषि, जल संसाधन, भूमि संसाधन सूची और निगरानी, वानिकी और पारिस्थितिकी, भूविज्ञान, शहरी अध्ययन और भू-सूचना विज्ञान, आपदा प्रबंधन सहायता, अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर विकास और बुनियादी ढांचे का विकास। प्रणाली विश्वसनीयता और गुणवत्ता आश्वासन हमारे सभी उत्पादों और सेवाओं में गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

एनआरएससी टीम द्वारा विकसित इसरो का जियो-पोर्टल **"भुवन"** 195 से अधिक अनुप्रयोगों के साथ 24 से अधिक मंत्रालयों और राज्य विभागों की सहायता कर रहा है और भारत सरकार के कई विशिष्ट (Flagship) कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में भी मदद पहुंचा रहा है। एनआरएससी द्वारा विकसित डेटा हब **"भूनिधि"** भारतीय और कुछ विदेशी मिशनों से भू-अवलोकन उपग्रह डेटा उत्पादों हेतु 1986 से वर्तमान में 44 उपग्रहों के सुदूर संवेदन डेटा प्रदान कर देश को सक्षम बना रहा है। विकेंद्रीकृत नियोजन हेतु अंतरिक्ष आधारित सूचना सहायता (SISDP) के लिए भुवन पंचायत पोर्टल की सुविधा से सभी राज्य सरकारों को मदद मिल रही है। एनआरएससी भारत के अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी परिदृश्य को आकार देने और भू-अवलोकन में वैश्विक नेतृत्व स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) के माध्यम से शहर-नियोजन, पर्यावरण प्रबंधन, आपदा प्रतिक्रिया, व्यापार और विपणन, परिवहन, सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्रों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की जाती है। मछुआरों के लिए नाविक अवस्थिति एवं संदेश प्रदान कर संभावित खतरे की सूचना दी जाती है।

आपदा प्रबंधन अनुप्रयोगों के माध्यम से केंद्रीय और राज्य आपदा प्रबंधन सहायता संगठनों को लगभग वास्तविक-समय में मानचित्रण और निगरानी कर बाढ़, चक्रवात, स्थानिक बाढ़ पूर्व-चेतावनी प्रणालियां, हिमनद झील विस्फोट बाढ़ (GLOF) जोखिम मूल्यांकन, भूकंप, वनाग्नि, आकाशीय बिजली, आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए भूस्खलन सूची आदि के बारे में आपदा से पूर्व, आपदा के दौरान और आपदा के बाद सूचना प्रदान कर राहत, बचाव कार्य में मदद किया जाता है।

एनआरएससी द्वारा विकसित राष्ट्रीय स्तर पर लगभग वास्तविक समय में प्राकृतिक आपदाओं और आपदा जोखिम न्यूनीकरण में सहायता प्रदान करने के लिए आपातकालीन प्रबंधन हेतु राष्ट्रीय डेटाबेस (NDEM) 5.0 संस्करण का लोकार्पण किया गया है, जिसका उद्देश्य अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न आपदा सेवाओं के लिए एकल प्लेटफार्म प्रदान करना है।

अन्तर्राष्ट्रीय पहल : आपदा प्रबंधन सहायता एवं जोखिम न्यूनीकरण के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी -
इंटरनेशनल चार्टर स्पेश एंड मेजर डिजास्टर, इंडियन ओशन रिम एसोसियएशन-आपदा जोखिम न्यूनीकरण जोखिम वर्किंग ग्रुप,

एशिया-पेसिफिक रिजनल ऐजेंसी फोरम (APRSAF), अंतर्राष्ट्रीय सेंटिनल एशिया, नासा-नौआ-इसरो सहयोग, आपदा प्रबंधन एवं आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए अंतरिक्ष आधारित सूचना हेतु संयुक्त राष्ट्रसंघ प्लेटफार्म-UNSPIDER, UNESCAPE के माध्यम से विभिन्न आपदा घटनाओं से संबंधित भारतीय रिमोट सेंसिंग डेटा के माध्यम से आपातकालीन सहायता प्रदान की जाती है।

ग्राउंड स्टेशन (भू-केंद्र), शादनगर परिसर में उपग्रह डेटा अभिग्रहण, डेटा संसाधन (प्रसंस्करण) और वितरण, पृथ्वी और जलवायु अध्ययन और आपदा प्रबंधन सहायता - एनआरएससी IRS और गैर-IRS उपग्रहों के उपग्रह डेटा प्राप्त करने और संसाधन के लिए नोडल केंद्र है। ग्राउंड स्टेशनों पर प्राप्त उपग्रह डेटा स्वचालित रूप से उच्च-स्तरीय डेटा संग्रह और भंडारण प्रणालियों में स्थानांतरित हो जाता है। उपग्रह / संवेदक विशिष्ट एल्गोरिदम का उपयोग स्वचालित डेटा संसाधन के लिए किया जाता है, जिसमें प्रारंभिक सुधार और ज्यामितीय और रेडियोमेट्रिक सुधार शामिल हैं। उपग्रह डेटा उत्पादों को "भूनिधि" पोर्टल (https://bhoonidih.nrsc.gov.in/bhoonidih/) के माध्यम से प्रयोक्ता समुदाय तक प्रसारित किया जाता है। विश्व स्तरीय कैल-वैल सुविधा का उपयोग कर सेंसर अंशांकन द्वारा उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाती है।

भू-अवलोकन उपग्रहों के लिए एकीकृत बहु-मिशन ग्राउंड सेगमेंट (IMGEOS) सुविधा का उपयोग रिसोर्ससैट-2 और RISAT-1 की अवधि से किया जा रहा है। IMGEOS एक एंटरप्राइज़ इंफ्रास्ट्रक्चर है, जिसमें भौतिक मीडिया की जगह 3-स्तरीय SAN स्टोरेज पर अत्याधुनिक कंप्यूटिंग संसाधन हैं। इसने प्रतिदिन 1500 उत्पादों तक डेटा प्रसार बढ़ाया है। इसके अलावा एक घंटे के भीतर आपातकालीन डेटा आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है।

अंटार्टिका के पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों हेतु ग्राउंड स्टेशन (AGEOS) का संचालन और रखरखाव इसरो के इंजीनियरों द्वारा

लगातार किया जाता है, जो नियमित आधार पर भारती स्टेशन, अंटार्कटिका में प्रतिनियुक्ति पर होते हैं। एनआरएससी शादनगर और अंटार्टिका के बीच सीधे विडियो कॉन्सफ्रेंस की सुविधा उपलब्ध है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्राजिल, जर्मनी, स्वालवर्ड, ट्रोमसो, अल्जीरिया, भूटान इत्यादि में ग्राउंड स्टेशन स्थापित हैं। भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र और सार्क देशों को कवर करने के लिए जोधपुर में भी एक ग्राउंड स्टेशन स्थापित किया गया है।

बेगमपेट हवाई अड्डा, हैदराबाद में विमान संचालन सुविधा, मानव रहित वायुयान / ड्रोन / मोबाइल मानचित्रण प्रणाली (MMS) का संचालन किया जाता है। बड़े पैमाने पर मानचित्रण और भू-स्थानिक डेटाबेस निर्माण, प्रौद्योगिकी की सीमाओं से परे (विदेशों में) विस्तार (मालदीव की राष्ट्रीय मानचित्रण परियोजना), उद्योग मार्गदर्शन हेतु भू-स्थानिक डेटाबेस निर्माण और फील्ड सर्वेक्षण की सुविधा है।

जीडीमेटला, हैदराबाद में प्रशिक्षण, सामान्य जनसंपर्क (आउटरीच) - प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में रिमोट सेंसिंग, GIS और अनुप्रयोगों के साथ उपयोगकर्ता/हितधारक संगठनों के लिए संस्थागत क्षमता विकसित करने के लिए अनुकूलित और थीम-उन्मुख पाठ्यक्रम के साथ-साथ उन्नत भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों पर लघु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। शिक्षा-जगत, गैर-सरकारी

संगठनों, जनता, उद्योगों आदि के लिए ज्ञान, विशेषज्ञता और संसाधनों के प्रसार के लिए एक केंद्रीकृत सुविधा है, जिसमें प्रशिक्षण, आउटरीच, आउटसोर्सिंग, प्रदर्शनी, सूचना प्रसार, वेब सेवाओं और विकास केंद्र (इन्क्यूबेशन) से संबंधित सभी गतिविधियां शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण सरकारों और नीति-निर्माताओं को सुविज्ञ निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने हेतु

जलवायु और पर्यावरण अध्ययन के लिए राष्ट्रीय सूचना प्रणाली (NICES) की स्थापना की गई है। देश के विभिन्न राज्यों/ क्षेत्रों के लिए सुदूर संवेदन अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने के लिए 05 क्षेत्रीय केंद्र- कोलकाता (पूर्व), जोधपुर (पश्चिम), नागपुर (मध्य), नई दिल्ली (उत्तर) और बैंगलोर (दक्षिण) में स्थित हैं।

क्षेत्रीय केंद्र-पूर्व (कोलकाता) **:** क्षेत्रीय केंद्र-पूर्व (कोलकाता) : यह केंद्र देश के पूर्वी राज्यों - बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगला और ओड़िशा में रिमोट सेंसिंग गतिविधियों का संचालन करता है। इसे 2011 में खड़गपुर से कोलकाता में पुनर्स्थापित किया गया।

क्षेत्रीय केंद्र-पश्चिम (जोधपुर) : देश के पश्चिमी राज्यों (राजस्थान, गुजरात, पंजाब, हरियाणा) और संघ राज्य-क्षेत्रों (चंडीगढ़, दादर एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव) की आवश्यकताओं को पूरा करता है, जहां मुख्य रुप से शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में मरुस्थलीकरण, जल संसाधन एवं सहायक शोध एवं विकास जैसे- जल संसाधन (इंडिया-वारिस) एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य संसाधन भंडार (NHRR), सरस्वती पैलियोचैनल, संबंधित राज्यों के लिए विभिन्न पैमानों पर LULC, बंजर-भूमि, भू-क्षरण आदि का मानचित्रण शामिल हैं।

क्षेत्रीय केंद्र-मध्य (नागपुर): यह केंद्र देश के मध्य भाग के राज्यों- छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, विकासात्मक योजना और ई-गवर्नेंस के लिए सुदूर संवेदन और GIS आधारित भू-स्थानिक समाधान प्रदान करता है। केंद्र में सुदूर संवेदन डेटा संसाधन, विश्लेषण और अनुप्रयोग विकसित करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं और प्रयोगशालाएं हैं।

क्षेत्रीय केंद्र-उत्तर (दिल्ली) : देश के उत्तरी राज्यों जैसे- उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर (लद्दाख) में रिमोट सेंसिंग से जुड़े गतिविधियों के साथ-साथ मंत्रालयों को भू-स्थानिक समाधान, राष्ट्रीय परियोजनाओं/ मंत्रालय-स्तरीय परियोजनाओं, अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन, ई-गवर्नेंस, आपदा प्रबंधन समर्थन, क्षेत्र सर्वेक्षण, बड़े पैमाने पर मानचित्रण और जागरूकता जैसी गतिविधियों में भारत सरकार को मदद करता है। प्रारंभ में क्षेत्रीय केंद्र-उत्तर को देहरादून में स्थापित किया गया था, जिस मई 2017 में दिल्ली स्थांतरित किया गया।

क्षेत्रीय केंद्र-दक्षिण (बेंगलुरु) : यह देश के दक्षिणी राज्यों- कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गोवा, पुडुचेरी तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह को कवर करता है। यहां मुख्य रुप से बागवानी, कृषि/ मिट्टी विज्ञान, वानिकी, ग्रामीण विकास, पुरातत्व, शहरी अध्ययन, जल संसाधन, भू-सूचना विज्ञान और कंप्यूटर अनुप्रयोग, मशीन लर्निंग/डीप लर्निंग आदि विषयक परियोजनाओं पर कार्य कियाजाता है।

वर्तमान में एनआरएससी हैदराबाद में सुदूर संवेदन गतिविधियों का संचालन मुख्यतः उपग्रह डेटा अर्जन, वायुयान सेवा एवं डिजिटल मानचित्रण, डेटा संसाधन एवं वितरण, आपदा प्रबंधन सहायता, रिमोट सेंसिंग एप्लिकेशन, भू-स्थानिक सेवाएं, क्षमता निर्माण क्षेत्रों द्वारा किया जाता है।

एनआरएससी उत्पाद निर्माण के विभिन्न चरणों में गुणवत्ता मानक स्थापित करने में गुणवत्ता प्रमाणन एजेंसी द्वारा फरवरी, 2005 में मानक परीक्षण एवं गुणवत्ता प्रमाणन (STQC) के माध्यम से एनआरएससी प्रक्रियाओं के लिए ISO 9001:2000 प्रमाणन प्रदान किया गया। वर्ष 2017 में अंतर्राष्ट्रीय मानकों के संशोधन के आधार पर ISO 9001:2008 से ISO 9001:2015 में परिवर्ति किया गया। 2017-18 में एनआरएससी में गुणवत्ता आश्वसासन (QA) प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और मजबूत करने के लिए प्रासंगिक मानकों और दिशानिर्देशों का निर्माण किया गया।

एनआरएससी को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं, जो निम्नवत है-
भुवन को लोकप्रिय भू-स्थानिक पोर्टल पुरस्कार : 2012 में पंजाब हेरिटेज एंड टूरिज्म बोर्ड, अमृतसर पर्यटन भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) के लिए भुवन को प्रथम प्रयोक्ता केंद्रित अनुप्रयोग (एप्लिकेशन) घोषित किया गया और भुवन को 2012 में लोकप्रिय भू-स्थानिक पोर्टल पुरस्कार प्रदान किया गया।

IMGEOS और NDEM भवनों के लिए प्लेटिनम पुरस्कार: 2014 में हैदराबाद अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र (HICC), हैदराबाद में आयोजित ग्रीन बिल्डिंग कांग्रेस के दौरान एनआरएससी ने पृथ्वी अवलोकन के लिए एकीकृत बहु-मिशन ग्राउंड सेगमेंट (IMGEO) और आपातकालीन प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस (NDEM) बिल्डिंग के लिए प्लेटिनम पुरस्कार प्राप्त किया।

जियो-मनरेगा के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार : 2017 में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना अधिनियम (MNREGA) के तहत जियो-मनरेगा के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में बहुमूल्य सहायता के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्रदान किया गया।

भू-स्थानिक उत्कृष्टता पुरस्कार-2023: आपातकालीन प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस (NDEM), इसरो को भू-स्थानिक उत्कृष्टता पुरस्कार-2023 प्राप्त हुआ है।

राष्ट्रीय भू-स्थानिक पुरस्कार 2024 : एनआरएससी को 'राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022' और 'भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023' के अनुरूप प्रयोक्ता समुदाय को मुफ्त उपग्रह डेटा संसाधन प्रदान करने में योगदान के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई द्वारा राष्ट्रीय भू-स्थानिक सक्षमता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय भू-स्थानिक पुरस्कार 2024 प्रदान किया गया । यह पुरस्कार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई (IIT Bombay) द्वारा "ओपन सोर्स जीआईएस दिवस" समारोह के दौरान प्रदान किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार :

ESRI द्वारा GIS-2023 पुरस्कार: भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) में भूस्खलन सूची, अवस्थिति आसूचन (लोकेशन इंटेलिजेंस) और मानचित्रण के क्षेत्र में अग्रणी योगदान के लिए पर्यावरण प्रणाली अनुसंधान संस्थान, निगमित (ESRI) द्वारा GIS में विशेष उपलब्धि (SAG)-2023 पुरस्कार प्रदान किया गया।

एशिया-पेसिफिक क्षेत्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार- डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक, एनआरएससी को एशिया-पेसफिक क्षेत्र में अंतरिक्ष विकास एवं अंतरिक्ष संबंधी गतिविधियों पर गहरे प्रभाव छोड़ने, अगली पीढ़ियों को प्रेरित करने में उत्कृष्ट योगदान के लिए एशिया-पेसिफिक रिजनल ऐजेंसी फोरम (APRSAF) जकार्ता, इंडोनेशिया द्वारा अंतरिक्ष के क्षेत्र में एशिया-पेसफिक क्षेत्रीय उत्कृष्टता

संवाद : रजत-जयंती से स्वर्ण-जयंती की राह में सह-यात्री

राम प्रकाश यादव, एनआरएससी, हैदराबाद

1974 में राष्ट्रीय सुदूर संवेदन एजेंसी के स्वायत्त संस्था के रुप में स्थापना के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन की शुरुआत हुई। विविध क्षेत्रों में हिंदी के कार्यान्वयन के साथ वार्षिक प्रतिवेदन हिंदी में जारी किया जाने लगा। प्रारंभ में संस्था के कार्मिकों एवं परिवार के सदस्यों के बीच आंतरिक जन-संपर्क, हिंदी में सृजनात्मक कला को उभारने और सूचना आदान-प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान करने हेतु संवाद पत्रिका का शुभारंभ राष्ट्रीय सुदूर संवेदन एजेंसी के रजत-जयंती (सहस्राब्दी-2000) वर्ष से किया गया।

मानवीय संबंधों में स्थिरता व मिठास पैदा करने में पारस्परिक संवाद अपरिहार्य है। सामाजिक विकास और चेतना के विस्तार में पारस्परिक संवाद निर्विवादित है। ज्ञान-विज्ञान के उत्तरोत्तर विकास और जन-जन तक सुदूर संवेदन के उपयोग का आधार भी पारस्परिक संवाद है। संवाद के महत्व को समझते हुए हमारे दूरदर्शी पथ-प्रदर्शकों (निदेशकों) ने संवाद पत्रिका का आरंभ कर अपने आशीर्वचनों से सिंचित और संवर्धित किया।

डॉ. के. कस्तूरीरंगन, तत्कालीन अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग ने अपने संदेश में कहा कि संवाद हिंदी के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

एनआरएसए (NRSA) के तत्कालीन निदेशक डॉ. डी. पी. राव ने संवाद के प्रथम अंक के संदेश में कहा कि गृह पत्रिका संवाद हमारे संबंधों में मिठास व चेतना के विस्तार को नए व सार्थक आयाम प्रदान करने में सक्षम होगी। संवाद सुदूर संवेदन को लोकप्रिय विज्ञान के रुप में प्रतिष्ठित करने में मदद करेगी। सुदूर संवेदन तकनीक को विज्ञान की प्रयोगशालों से निकलकर आम जनमानस तक पहुंचने से ही सही अर्थों में देश की प्रगति संभव होगी। उभरती तकनीक को जनमानस तक पहुंचाने के लिए 2002 से एनआरएसए की वेबसाईट को हिंदी में चालू किया गया। इसी वर्ष से सुदूर संवेदन डेटा अनुप्रयोग के लिए तकनीकी विकास भी प्रारंभ किया गया।

तत्कालीन निदेशक, श्री रंगनाथ आर नवलगुंद ने अपने संदेश में कहा कि संवाद अर्थात (Communication), बातचीत (Conversion) से अलग है। बातचीत में हम एक दूसरे से तर्क-वितर्क कर सकते हैं, जबकि संवाद के द्वारा हम विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, दूसरों को कुछ देते हैं और दूसरों से कुछ लेते हैं।

प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र ने अपने उपन्यास में लिखा है कि "जीवन के अज्ञात पथ में मनुष्य के साथ मनुष्य का गहरा परिचय कब, किस दिन, किस माध्यम से, कैसे हो जाता है, यह कोई नहीं जानता "।

उसी प्रकार वास्तव में सुदूर संवेदन तकनीक का उपयोग कब, कहां, कैसे और किन-किन क्षेत्रों में हो रहा है, हम सब इसके गवाह हैं- भारत सरकार/राज्य सरकार के विभाग/एजेंसियां सुदूर संवेदन तकनीक का उपयोग डेटा अभिग्रहण, संसाधन, वितरण, भूस्थानिक सेवाएं-भुवन, भूनिधि, हवाई सेवाएं एवं डेटा प्रबंधन, सुदूर संवेदन अनुप्रयोग, क्षेत्रीय विशिष्ट सेवाएं, क्षमता निर्माण एवं जनसंपर्क, ई-प्रशासन (e.governance) - भुवन पंचायत, जिओ मनरेगा, विकेंद्रीकृत योजना हेतु अंतरिक्ष आधारित सूचना सहायता (सिसडीपी), कॉफी बगान-जिओकप, जलशक्ति अभियान मिशन, इंडिया-वारिश (भारतीय जल संसाधन प्रणाली), प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना-एकीकृत जलाशय प्रबंधन कार्यक्रम (PMKSY-IWMP), शहरी विकास के लिए राष्ट्रीय नगर विकास प्रणाली, अमृत योजना, जैव ऊर्जा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य-NHRR, आपातकालीन प्रबंधन सहायता हेतु NDEM, हिमनद विस्फोट बाढ़ जोखिम आकलन (GLOF), वनाग्नि निगरानी, सतत विकास हेतु एकीकृत मिशन (IMSD), न्याय विकास, मछली पकड़ने हेतु संभावित क्षेत्र, जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण हेतु राष्ट्रीय सूचना प्रणाली आदि क्षेत्रों में किया जा रहा है।

इसी क्रम में 26 दिसम्बर 2004 को हिंद महासागर क्षेत्र में भयंकर भूकंप और विनाशकारी सुनामी लहरों ने भारतीय समुद्र के तटवर्ती इलाकों में महा-प्रलय ला दिया, जिसमें जान-माल की भारी क्षति हुई। लेखक स्वयं इसका गवाह रहा है। सुनामी के दिन टीवी पर समाचार प्रदर्शित हो रहा था कि कारनिकोबार द्वीप के एयर फोर्स बेस का 70% हिस्सा पानी में बह गया। उस पल मुझे महसूस हो रहा था कि जैसे मेरे पैर तले जमीन खिसक रही है। सुनामी के बाद पुनः एयर फोर्स बेस (कारनिकोबार) जाना पड़ा। अब वहां की रंगीन दुनिया त्रासदी में बदल चुकी थी। प्रकृति निर्जन और निस्तब्ध हो चुकी थी, माहौल डरावना था। एनआरएसए/एनआरएससी ने लगभग वास्तविक काल में सुनामी प्रभावित इलाकों के विस्तार और क्षति के बारे में उपग्रह द्वारा प्राप्त जानकारियां राहत एवं बचाव कार्य में लगें एजेंसियों को उपलब्ध कराईं। एनआरएसए के राहत एवं बचाव तथा पुनर्वास कार्यक्रमों को देखते हुए अंतरिक्ष विभाग द्वारा एनआरएसए परिसर में निर्णय सहायता केंद्र (Decision Support Centre) स्थापित किया गया। आज सुदूर संवेदन तकनीक एनआरएससी प्रयोगशाला से निकलकर देश में लोकप्रिय विज्ञान के रुप में प्रतिष्ठित हो गई है

और विविध क्षेत्रों में उपयोगी सिद्द हुई है तथा आगे भी विस्तार जारी है। संसदीय राजभाष समिति ने 11 फरवरी 2006 को एनआरएसए में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण किया, जिसमें तत्कालीन निदेशक, डॉ. के. राधाकृष्णन द्वारा हिंदी के क्रियाकलापों और अन्य गतिविधियों के बारे में समिति के समक्ष प्रस्तुती दी गई। 2007 में अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी, खजुराहो के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वियन के लिए तत्कालीन निदेशक डॉ. के. राधाकृष्णन को **राजभाषा श्री** सम्मान से सम्मानित किया गया।

संसदीय राजभाष समिति द्वारा पुनः 17 जून 2022 को एनआरएससी में निरीक्षण किया गया, जिसमें वर्तमान निदेशक, डॉ. प्रकाश चौहान ने एनआरएससी की गतिविधियों और राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित जानकारी माननीय सदस्यों को दी। माननीय समिति ने एनआरएससी में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की सराहना करते हुए समिति के माननीय अध्यक्ष ने कहा कि इसरो बहुत ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगठन है, यदि एनआरएससी हिंदी में प्रशंसनीय काम करने में सक्षम है तो अन्य संस्थान क्यों नहीं कर सकते हैं।

वर्ष 2009-10 में एनआरएससी के साथ क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्रों के समागम से एनआरएससी परिवार एवं शक्ति में विस्तार हुआ है। इसी वर्ष के दौरान भुवन पोर्टल का शुभारंभ किया गया।

वर्ष 2011-15 के दौरान हिंदी में कई मैनुअल/एटलस (भारत का भूमि निम्नीकरण एटलस, राजीव गांधी पेयजल मिशन, जलसंभरों की निगरानी के लिए भूस्थानिक प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से एकीकृत जलसंभर प्रबंधन कार्यक्रम (IWMP) के तहत सृष्टि एवं दृष्टि नामक प्रयोक्ता मैनुअल) तैयार किए गए।

एनआरएससी भू-प्रेक्षण डेटा एकत्र कर विविध प्रयोक्ताओं को विविध प्रयोग हेतु डेटा वितरण करता है, जिनमें वैज्ञानिक एवं तकनीकी पहलु होते हैं। सुदूर संवेदन की उभरती तकनीक और समाज में बढ़ती मांग को देखते हुए 2013 में तत्कालीन निदेशक, डॉ. विनय कुमार डढ़वाल ने निर्णय लिया गया कि तकनीकी विषयों को समाहित करते हुए विशिष्ट रुप से तकनीकी अंक का भी प्रकाशन किया जाए। जिससे उभरती तकनीकी और आम लोगों के बीच दूरियां कम हो सके और उनकी भाषा में तकनीकी ज्ञान का प्रसार हो सके।

अब हर वर्ष संवाद-पत्रिका के (सामान्य और तकनीकी) अंक प्रकाशित किए जाते हैं, जिसमें कर्मचारी एवं परिवार के सदस्यों के लेख होते हैं। ये पत्रिकाएं संपादक मंडल की देखरेख में हिंदी अनुभाग द्वारा आंतरिक रुप से प्रकाशित किए जाते हैं, पिछले 24 वर्ष की झलकियां निम्नवत है।

एनआरएससी न्यूज़लेटर-पिक्सेल 2 पीपल (P2P) - सुदूर संवेदन तकनीक के क्षेत्र में तकनीकी विकास/अनुसंधान के बारे में विवरण देने वाली छमाही पत्रिका है। पहला अंक अपडेट@एनआरएसए-2004 में प्रारंभ किया गया था। डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक एनआरएससी एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सुझाव के अनुसार अब पी2पी द्विभाषी में प्रकाशित किए जा रहे हैं, जिसे स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रकाशित किए जाते हैं।

संवाद और पी2पी के अंकों को हैदराबाद के विभिन्न केंद्रीय विद्यालयों, कॉलेजों / विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के साथ-साथ अंतरिक्ष विभाग / इसरो केंद्रों / कर्मचारियों में वितरित किए जाते हैं। इसकी ई-प्रतियां एनआरएससी की आंतरिक पोर्टल डिक्ट्रा तथा एनआरएससी की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराई गई है। इनकी ई-प्रतियों को राजभाषा विभाग के ई-पुस्तकालय पर भी उपलब्ध कराई गई है, जिससे अधिक से अधिक नागरिकों तक पहुंच सके। इसके अलावा, अंतरिक्ष विभाग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी का भी आयोजन किया जाता है और तकनीकी विषयों पर लेख संग्रह प्रकाशित किया जाता है।

अब, एनआरएससी में तकनीकी ज्ञान को कॉफी टेबल बुक के माध्यम से प्रेषित करने का प्रचलन बढ़ा है, जिसमें चित्र के साथ हिंदी और अंग्रेजी एक साथ प्रकाशित किए जाते हैं, जिससे पाठकगण को हिंदी या अंग्रेजी पढ़ने में विकल्प मिलता है। हाल के वर्षों में, एनआरएससी द्वारा कई कॉफी टेबल बुक- ***भारत का भू-परिदृश्य, इसरो की मुख्य गतिविधियां*** आदि द्विभाषी में तैयार किए गए हैं।

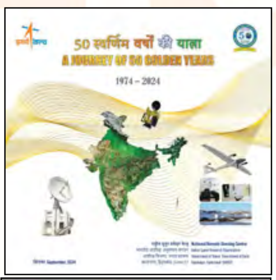

डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक एनआरएसी का मानना है कि अपने संग्रहित ज्ञान को प्रलेख के माध्यम से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित किया जा सकता है, जिससे अगली पीढ़ी को कम मेहनत के साथ ज्ञान सहज सुलभ हो पाएगा और उपयोग बढ़ेगा। इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए एनआरएससी की स्वर्ण जयंती के अवसर पर (i) राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन में इसरो की भूमिका (हिंदी) (ii) कॉफी टेबल बुक - 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा (द्विभाषी), भारत का कॉफी बगान एटसल (द्विभाषी) तथा विकसित भारत की ओर @ 2047- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के माध्यम से भारत परिवर्तन: समाज को प्रभावित करने वाली 50 प्रमुख उपलब्धियां और पांच दशकों के संस्मरण (1974-2024) आदि का विमोचन अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग एवं मंचासीन गणमान्यों के कर-कमलों द्वारा किया गया।

कहना अनुचित न होगा कि उभरते रिमोट सेंसिग तकनीक के साथ संवाद पत्रिका एवं अन्य तकनीकी साहित्य एनआरएससी की तकनीकी गतिविधियों के साथ कदम से कदम मिलाकर सह-यात्री के रुप में चल रही है। एनआरएसए / एनआरएससी की रजत-जयंती से एनआरएससी की स्वर्ण-जयंती की यात्रा में सहयोग प्रदान कर रही है। इसके अलावे, राजभाषा हिंदी में अन्य तकनीकी साहित्य/पुस्तकें आमजनों को रिमोट सेंसिग तकनीक समझने और उपयोग करने में सक्षम बना रही है। आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि विकसित भारत की संकल्पना @ 2047 पूरा करने में राजभाषा हिंदी सहायक सिद्ध होगी।

तारीक मित्रन, शुभदीप कारक, जानकी रामसुरेश के जी, एनआरएससी, हैदराबाद

1. जल-कृषि (Hydroponics)

1.1 हाइड्रोपोनिक्स (जल-कृषि)

यूनानी शब्द "हाइड्रो" यानि जल और "पोनोस" यानि परिश्रम से लिया गया है, जहां बिना मिट्टी के पौधे उगया जा सकता है। जिसमें पौधे को जल में पोषक तत्वों के घोल में उगाए जाते हैं, जिससे पौधे के जड़ों को सीधे आवश्यक खनिज पहुंचते हैं। जल-कृषि का मूल सिद्धांत पौधों में पोषक तत्वों, जल और ऑक्सीजन की मात्रा नियंत्रित कर पौधे की वृद्धि को अनुकूलित करना है, जिससे पारंपरिक मिट्टी आधारित खेती की तुलना में अधिक तेजी से पौधों की वृद्धि और उत्पादन हो सके।

1.2 जल-कृषि प्रणाली के प्रकार :

जल-कृषि प्रणाली के प्रकार :
जल-कृषि प्रणाली कई प्रकार की होती हैं, जो अलग-अलग परियोजनाओं के लिए विशेष लाभ और उपयुक्तता प्रदान करती हैं :

- **डीप वॉटर कल्चर (DWC)**: पौधे पोषक घोल में लटके होते हैं और जड़ें जलमग्न होती हैं, जिससे पौधे को निरंतर पोषक-तत्व और ऑक्सीजन प्राप्त होते रहते हैं।

पोषक-तत्व फिल्म तकनीक (NFT): पोषक-तत्व के घोल संकीर्ण चैनल के माध्यम से बहता है, जिससे जल के आवश्यक पोषक-तत्व पतले फिल्म द्वारा पौधे के बढ़ने में सहायक होते हैं।

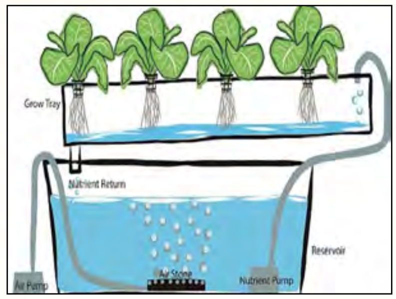

हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली मॉडल

वायु प्रक्रिया (Aeroponics): पौधे की जड़े हवा में लटके होते हैं और नियमित रूप से पोषक-तत्वों की छींटे जड़ों पर पड़ती रहती हैं, जिससे ऑक्सीजन और पोषक-तत्व प्राप्त होते रहते हैं।

1.3 जल-कृषि के मुख्य घटक एवं तत्व - सामान्यतः जल-कृषि प्रणाली कई महत्वपूर्ण घटकों से मिलकर बनी होती है:

- **जलाशय:** पोषक घोल के लिए कंटेनर।
- **उगाने का माध्यम**: पौधों की जड़ों के लिए सहायता संरचना (उदाहरण के लिए, रॉकवूल, पर्लाइट, मिट्टी के बर्तन)।
- **पोषक घोल**: पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक वृहद और सूक्ष्म स्तर पर जल आधारित घोल।
- **पंप और ट्यूबिंग**: पोषक-तत्वों के घोल को पौधों की जड़ों तक पहुंचाने और घोल को प्रसारित करने के लिए संचालन।

pH और EC मीटर: पौधों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए घोल की एसिडिटी (pH) और पोषक तत्वों के सांद्रण (EC) का अनुकूलन और निगरानी।

2. हाइड्रोपोनिक शहरी कृषि के लाभ

2.1 शहरी क्षेत्रों में जगहों का उपयोग - घने जनसंख्या वाले शहरी क्षेत्रों में पारंपरिक मिट्टी आधारित कृषि के लिए भूमि की उपलब्धता सीमित होती है। जल-कृषि प्रणालियां वर्टिकल-कृषि और छत के ऊपर बागवानी संभव बनाती हैं, जिससे वर्टिकल जगहों और बेकार पड़े जगहों का उपयोग कर शहर में भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती हैं।

2.2 पानी का इष्टतम उपयोग और संसाधन संरक्षण - जल-कृषि प्रणालियां पारंपरिक मिट्टी आधारित खेती की तुलना में लगभग 90% कम पानी का उपयोग करती है, क्योंकि उसी पानी का उपयोग बार-बार किया किया जाता है, जिससे पानी का वाष्पीकरण और पानी के बह जाने से नुकसान कम होता है। इसके अलावा, पौधे की जरुरतों के अनुसार पोषक-तत्वों को अनुकूलित किया जा सकता है, जिससे पोषक-तत्वों के अपव्यय को कम किया जा सकता है।

2.3 कार्बन और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना - मिट्टी आधारित खेती से बचने तथा पानी और रासायनिक खादों का प्रयोग कम कर पारंपरा की खेती की तुलना में शहरी क्षेत्र में जल-कृषि से पर्यावरणीय प्रभाव और कार्बन उत्सर्जन (उदाहरण के लिए जोताई और रासायनिक खाद द्वारा उपजाऊ बनाने की विधि) को कम किया जा सकता है।

2.4 जलवायु अनुकूल वर्षभर उत्पादन - पौधों की वृद्धि के लिए जल-कृषि प्रणालियां नियंत्रित परिवेश प्रदान करती हैं, जो बाह्य मौसमी स्थितियों के बावजूद साल भर उत्पादन को संभव बनाते हैं। जल-कृषि प्रणाली जलवायु अनुकूलन खेती और बदलते मौसम के प्रभाव को कम कर निरंतर भोजन की आपूर्ति सुनिश्चित करती है।

2.5 स्थानीय खाद्य उत्पादन और समुदायों में सामाजिक समरसता की संभावना - शहरी जल-कृषि द्वारा उपभोक्ता बाजeर के अनुसार विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जा सकती हैं, जिससे परिवहन के लिए दूरी कम हो जाएगी और स्थानीय खाद्य सुरक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अलावा, शहरी बागवानी परियोजनाओं में समुदाय की भागीदारी से सामाजिक समरसता, शिक्षा और टिकाऊ खाद्य उत्पादन प्रथाओं के बारे में जागरूकता बढ़ेगी।

3. शहरी क्षेत्रों में जल-कृषि प्रणाली की स्थापना के घटक :

3.1 उपयुक्त स्थान का चयन :- शहरी वातावरण में जल-कृषि प्रणालियों की स्थापना करते समय, सूर्य प्रकाश की अवधि, संरचनात्मक समर्थता और पहुंच क्षमता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे विचार किया जाना चाहिए। छतें, वर्टिकल बागवानी और इंडोर स्थानों के लिए जल-कृषि क्षेत्र स्थापित करने के लिए विकल्प प्रदान करते हैं, जो जगहों के उपयोग के लिए उत्तम होते हैं और भूमि की आवश्यकताओं को कम करते हैं।

3.2 निर्माण और संरचनात्मक जरुरतें:-

जल-कृषि खेती के लिए संरचनात्मक स्थिरता, अधिक जल और जल-निकासी सुविधा महत्वपूर्ण घटक होते हैं। दीर्घकालीन संभावना और टिकाऊ खेती के लिए जल-कृषि की स्थापना हेतु सहायक संरचनाएं, वाटरप्रूफिंग और अन्य उपाय करने की आवश्यकता है।

3.3 जल-कृषि उत्पादन के लिए फसलों और प्रजातियों का चयन :- जल-कृषि खेती के लिए सभी फसलें अच्छी नहीं होती हैं, खासकर जो फसलें मिट्टी में उगाने के लिए उपयुक्त होती हैं। कुछ फसलें जो कम समय में अधिक उत्पादन देती हैं जैसे-पत्तेदार हरी सब्जियां, जड़ी-बूटी, टमाटर और स्ट्रॉबेरी जल-कृषि शहरी खेती के लिए लोकप्रिय विकल्प हैं।

4. केस अध्ययन और सफलता की कहानियां

4.1 छतों पर जल-कृषि : ऊंची इमारतों पर शहरी खेती के उदाहरण - दुनिया भर के शहरों में छतों पर जल-कृषि ने बंजर छतों को हरे-भरे स्थलों में बदल दिया है। जिससे स्थानीय समुदायों को ताजा सब्जियां और जड़ी-बूटियों प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए न्यूयॉर्क शहर में गॉथम ग्रीन्स और सिंगापुर में स्काई ग्रीन्स शामिल हैं, जो वर्टिकल-कृषि की संभावना को प्रदर्शित करता है और पर्यावर्णीय निरंतरता के साथ शहरी खाद्य सुरक्षा को संबोधित करते हैं।

4.2 समुदायिक जल-कृषि, बागवानी : निवासियों को खाद्य पदार्थ के उत्पादन में शामिल करना - समुदाय के नेतृत्व वाली जल-कृषि, बागवानी परियोजनाएं- जैसेकि लंदन के ग्रोअप बॉक्स परियोजना और कंसा सिटी में शहरी कृषि व्यवस्था द्वारा शहरी निवासी और प्रकृति के बीच सामांजस्य स्थापित करते हुए खाद्य सामग्री की आपूर्ति को नियंत्रित किया जा सका है, जिससे संप्रभुता, शिक्षा और सामाजिक ताने-बाने को सुदृढ किया जा सका है।

4.3 इंडोर जल-कृषि (खेती) : उत्पादन के लिए बेकार स्थानों का उपयोग - इंडोर जल-कृषि (खेती) जैसेकि न्यूयॉर्क शहर में बोवेरी फार्मिंग और सैन फ्रांसिस्को में प्लेंटी जैसे उन्नत प्रौद्योगिकी और वर्टिकल कृषि तकनीकों का उपयोग कर नियंत्रित पर्यावरण में उच्च गुणवत्ता, कीटनाशक मुक्त हरि-भरी सब्जियां उगाने में मदद मिली है। ये नवाचारी प्रयास, कारखानों और परित्यक्त इमारतों का पुनः उपयोग कर इंडोर कृषि की संभावनाओं को प्रदर्शित किया है, जिससे शहरी क्षेत्रों में खाद्य प्रणाली की आपूर्ति में क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा है और सभी को खाद्य-सामग्री (भोजन) हेतु पहुंच आसान बना दिया है।

4.4 व्यावसायिक जल-कृषि प्रयास : व्यापार मॉडल और आर्थिक संभावनाएं - ताजी सब्जियों और स्थानीय उत्पन्न उत्पाद की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए व्यावसायिक जल-कृषि प्रयास जैसेकि ब्राइटफार्म्स, एयरोफार्म्स और फ्रेट फार्म्स आदि द्वारा बड़े पैमाने पर शहरी कृषि को बढ़ावा दे रहे हैं। ये कंपनियां छोटे-छोटे वितरकों, रेस्तारां और भोजन विक्रेता के माध्यम से शहरी खेती में नवाचार, मिट्टी रहित कृषि द्वारा शहरी-कृषि को आर्थिक रुप में मजबूती प्रदान कर रही है।

5. भविष्य के दिशानिर्देश और अवसर :

5.1 तकनीकी नवाचार और जल-कृषि प्रणालियों में वृद्धि - जल-कृषि प्रौद्योगिकी, स्वचालन, और सेंसर नेटवर्कों में चल रहे अनुसंधान और विकास ने शहरी खेती प्रथाओं में नवाचार और दक्षता सुधार को प्रेरित किया है। शहरी कृषि में उभरते प्रवृत्तियों जैसेकि वर्टिकल-कृषि, एक्वापोनिक्स और नियंत्रित पर्यावरण कृषि ने जल-कृषि की उत्पादकता, टिकाऊ खेती और संभावना से नई राहें खुलने लगी हैं।

5.2 स्मार्ट कृषि और IoT तकनीकों के साथ एकीकरण - जल-कृषि प्रणालियों में स्मार्ट कृषि समाधानों और इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IoT) तकनीकों के एकीकरण द्वारा वास्तविक समय निगरानी, डेटा विश्लेषण और सटीक निर्णय लेना संभव हो पाया है। शहरी कृषि में सेंसर, ड्रोन, और AI एल्गोरिदम आधारित उपाय ने संसाधन प्रबंधन, फसल प्रबंधन और निर्णय निर्धारण प्रक्रियाओं को अनुकूलित करना संभव बनाया है। जिससे शहरी कृषि प्रथाओं में क्रांति आई है और उत्पादकता बढ़ी हैं।

वाणिज्यिक हाइड्रोपोनिक प्रणाली

5.3 शहरी क्षेत्र में भोजन सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जल-कृषि को बढ़ावा - शहरी जनसंख्या लगातार बढ़ रही है और टिकाऊ भोजन प्रणाली स्थापित करना आवश्यक हो गया है। शहरी क्षेत्र में सार्वजनिक -निजी साझेदारी द्वारा निवेश को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे भोजन की सुरक्षा, लोगों में भोजन की कमी को दूर किया जा सकता है और शहरी भोजन श्रृंखला पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी कम किया जा सकता है।

5.4 शहरों में जल-कृषि को बढ़ावा देने के लिए सहकारी प्रयास और साझेदारी - जल-कृषि सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों और निजी क्षेत्र के स्तरीय सहभागिता, नवाचार फैलाव और शहरी कृषि में क्षमता निर्माण के लिए जानकारी का आदान प्रदान, नवाचार के प्रसार और निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये बहु-हितैषी सहयोग और साझेदारी कृषि उत्पादन, न्यायसंगत और सतत् खाद्य प्रणालियों को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्य प्रेरक हैं।

निष्कर्ष

शहरी क्षेत्र में जल-कृषि एक नई अवधारणा का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे हम घने आबादी वाले शहरों में खाद्य उत्पादन, वितरण और उपभोग को कैसे परिवर्तन कर सकते हैं। हम शहरों में नवाचारी उगाने की तकनीकों का लाभ उठाते हुए बेकार शहरी जगहों का उपयोग कर और समुदाय को शामिल करते हुए जल-कृषि (हाइड्रोपोनिक्स) को अपना सकते हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा, संसाधन की कमी, और पर्यावरणीय गिरावट की चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। हम भविष्य के लिए आदर्श भोजन प्रणाली के निर्माण में प्रयासरत रहते हैं। शहरी क्षेत्रों में जल-कृषि (शहरी-कृषि) शहरों को पोषण प्रदान करने और शहरी समुदायों को प्रकृति के साथ समन्वय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

कलाकृति

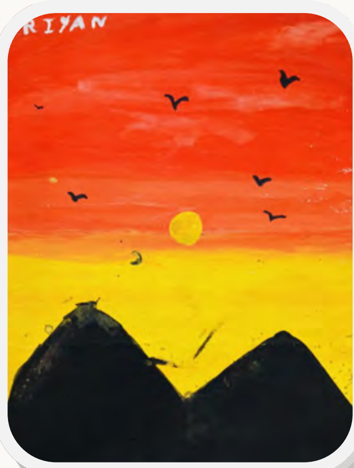

कु. श्रियन जी
पौत्र, श्रीमती के भवानी

मस्तिष्क और मानसिकता: प्लेसबो प्रभाव के रहस्य

डॉ. प्रभजोत कौर, आरआरएससी, दिल्ली

मन के हारे हार है,मन के जीते जीत। कहे कबीर हरि पाइए, मन ही की परतीत। यानी जब हम किसी कार्य के शुरू में ही हार मान लेते हैं तो हम सचमुच में ही हार जाते हैं। कबीर जी के ये अनमोल वचन हमारे मन की शक्ति का उल्लेख करते हैं। मस्तिष्क हमारी भावनाओं, विचार और कार्य हमारे शरीर को नियंत्रित करता है। एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अगर हम देखें तो मस्तिष्क इंसानों को शानदार जीवन जीने में मदद कर सकता है या उनकी क्षमताओं को बाधित कर सकता है। ये तो हम सबने अपने रोज़मर्रा की जिंदगी में अनुभव भी करते हैं। मानसिक शक्ति का मनोविज्ञान अध्ययन करना और इसके हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर सीधे प्रभाव को देखना दिलचस्प है। मौका मिलने पर आपका दिमाग एक शक्तिशाली उपचार उपकरण हो सकता है। मस्तिष्क की शक्ति को समझाने के लिए दो प्रमुख विचारधाराएँ हैं।

केंद्रीय गवर्नर सिद्धांत (Tim Noakes): यह सिद्धांत कहता है कि आपका मस्तिष्क आपको सुरक्षित रखने के लिए भविष्य का अनुमान लगाता है। उदाहरण के लिए, अगर आप गर्म दिन में दौड़ रहे हैं, तो आपका मस्तिष्क सोचता है कि आप ओवरहीट हो सकते हैं, इसलिए आप धीमे हो जाते हैं, भले ही आपका तापमान अभी खतरनाक स्तर पर न हो। यह सिद्धांत कहता है कि मस्तिष्क आपको नुकसान से बचाने के लिए सावधान रहता है।

प्रेरणा और प्रयास सिद्धांत (Samuele Marcora): इस सिद्धांत के अनुसार, सहनशक्ति का संबंध व्यायाम की कठिनाई से होता है और यह बताता है कि शरीर कैसे इस कठिनाई को सहन करता है और इसे कैसे प्रभावित करता है। आपके शरीर में हो रही सभी चीजें, जैसे तापमान और ऑक्सीजन स्तर, केवल इस हद तक महत्वपूर्ण हैं कि वे व्यायाम को आपके लिए कठिन बनाते हैं। जब यह कठिनाई उस सीमा तक पहुँच जाती है जिसे आप सहन करने के लिए तैयार हैं, तो आप धीमे हो जाते हैं या रुक जाते हैं।

चिकित्सा शब्दों में, जहाँ मस्तिष्क और शरीर दोनों समन्वय में होते हैं और किसी व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार में मदद कर सकते हैं, इस प्रभाव को **प्लेसिबो प्रभाव (Placebo Effect)** कहा जाता है । प्लेसबो प्रभाव वे सकारात्मक परिणाम हैं जो दवा या हस्तक्षेप की क्रिया के बजाय मनोवैज्ञानिक संदर्भ और व्यक्तिगत उपचार अपेक्षाओं के कारण होते हैं। **प्लेसबो प्रभाव** दिमाग द्वारा नियंत्रित लक्षणों पर काम करता है जैसे कि किसी बीमार व्यक्ति को उलटी, चक्कर आना लक्षणों को नियंत्रित करता है। हमारा दिमाग ही इस प्रभाव को ट्रिगर करता है क्योंकि मस्तिष्क शरीर को उस परिणाम के बारे में आदेश देगा जिसकी वह उम्मीद करता है। इसलिए, मानसिकता का धारणा और व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। प्लेसिबो प्रभाव सकारात्मक सोच से कहीं अधिक है। यह किसी उपचार या प्रक्रिया पर विश्वास करने का परिणाम होता है। जब व्यक्ति किसी उपचार पर विश्वास करता है, तो उसका मस्तिष्क और शरीर उस विश्वास के अनुरूप प्रतिक्रिया करते हैं, चाहे वह उपचार वास्तव में प्रभावी हो या नहीं। यह दिखाता है कि हमारी मानसिक स्थिति और विश्वास हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

मेडिकल उपचार में **प्लेसबो इफेक्ट** की महत्वपूर्ण भूमिका है और बहुत सारे मेडिकल उपचार प्लेसबो प्रभावों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। हावर्ड हेल्थ पब्लिशिंग वेबसाईट पर प्रकाशित एक लेख में विस्तार से समझाया गया है। प्लेसबो हमारे कोलेस्ट्रॉल को कम नहीं करेंगे या ट्यूमर को नहीं घटाएंगे, बलिक उन लक्षणों पर काम करते हैं जो दिमाग द्वारा नियंत्रित होते हैं, जैसे -दर्द सहनशक्ति। प्रोफेसर टेड कैप्चुक (Harvard-affiliated Beth Israel Deaconess Medical Center) के मुताबिक प्लेसबो हमें बेहतर महसूस करा सकते हैं, लेकिन वे आपको ठीक नहीं करेंगे। रिसर्च में पाया गया है प्लसीबो दर्द प्रबंधन, तनाव से संबंधित अनिद्रा, और कैंसर उपचार के दुष्प्रभाव जैसे थकान और जी मिचलाना के लिए सबसे प्रभावी हैं। प्लेसबो प्रभाव उपचार की अपेक्षा और क्लिनिकल परिणामों के "बूस्टर" के रूप में कार्य करते हैं। दर्द निवारक दवाइयों के साथ प्लेसिबो दिए जाते हैं, जिससे दवा जैसे प्रभाव उत्पन्न होते हैं (जैसे, खुराक-विस्तार प्लेसिबो)। यह दिखाता है कि प्लेसिबो का उपयोग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है, जब इसे सही तरीके से उपयोग किया जाए।

वही जब मस्तिष्क यह मान लेता है कि दवाई या चिकित्सीय हस्तक्षेप उन्हें नुकसान पहुंचाएगा, जिसे **नोसीबो प्रभाव** (**nocebo effect**) कहा जाता है। अध्ययन से पाया गया है कि मस्तिष्क की शक्ति बहुत महत्वपूर्ण होती है और जो सीधा हमारे शारीरिक स्वास्थ्य से गहराई से जुड़ी हुई है और उसे प्रभावित करती है ।

मानसिकता स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। कठिन बीमारी से लड़ने के लिए मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समर्थन प्रदान करने से रोगी को सकारात्मक परिणाम मिलते हैं। रिसर्च ने साबित किया है की हमारे मानसिकता की शक्ति शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभावशाली प्रभाव डालती है। यह किसी बीमारी को रोक या ठीक नहीं कर सकता, लेकिन जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता

है। सकारात्मक मानसिकता का प्रभाव तो हर इंसान एवं रोगी की प्रवृत्ति या वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति के बावजूद, कई तरीकों से शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, किसी भी जीवन में किसी भी समस्या खासकर बीमारी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना आवश्यक है, ताकि रोगी के उपचार में मदद मिल सके।

एक बहुत ही दिलचस्प उदाहरण प्लेसिबो प्रभाव की शक्ति में **साइंस ट्रांसलेशनल मेडिसिन** में प्रकाशित किया गया है । इस बात की जांच की कि लोग माइग्रेन के दर्द की दवा पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। एक समूह ने माइग्रेन की दवा ली, जिस पर दवा का नाम लिखा था; दूसरे ने प्लेसिबो लिया, जिस पर "प्लेसिबो" लिखा था; और तीसरे समूह ने कुछ नहीं लिया। शोधकर्ताओं ने पाया कि माइग्रेन दर्द कम करने में प्लेसिबो असली दवा के 50% जितना प्रभावी था। शोधकर्ताओं ने बताया कि गोली लेने से इंसान सकारात्मक उपचार प्रभाव से जोड़ते हैं। भले ही उन्हें पता हो कि यह दवा नहीं है, फिर भी यह हमारे मस्तिष्क को संकेत देती है कि शरीर ठीक हो रहा है।

आप खुद को प्लेसिबो कैसे दे सकते हैं बिना नकली गोली लिए? सेल्फ हेल्प मेथड्स (Self Help Methods) का अभ्यास करना ही तरीका है। स्वस्थ जीवन जीने - सही भोजन करना, व्यायाम करना, योग करना, गुणवत्तापूर्ण सामाजिक समय बिताना, ध्यान करना –ये सब प्लेसिबो प्रभाव को बढ़ाते है। आशा है कि हम सब गोली पर निर्भर नहीं होकर सेल्फ-हेल्प मेथड्स को ज्यादा अपनाएंगे, जो हमारे स्वास्थ्य और विकास में सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

कलाकृति

कु. ऋचा त्रिवेदी
बहन श्रीमती शिवम् त्रिवेदी

दंत स्वास्थ्य : मिथक और वास्तविकताएं

डॉ. पूजा यादव, दंत चिकित्सक, सुपुत्री श्री राम प्रकाश यादव, एनआरएससी,हैदराबाद

दांतों की देखभाल और स्वास्थ्य को लेकर हमारे समाज में कई प्रकार की मान्यताएं, धारणाएं और भ्रांतियां व्याप्त हैं। इनमें से कुछ धारणाएं सटीक और वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित होती हैं, जबकि कई अन्य पूरी तरह से मिथकों पर आधारित होती हैं। इन मिथकों के चलते लोग अक्सर गलत तरीके से अपने दांतों की देखभाल करते रहते हैं, परिणामस्वरूप उन्हें दांतों और मसूड़ों से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन मिथकों का प्रभाव इतना व्यापक है कि लोग दंत चिकित्सक के पास जाने से भी हिचकिचाते हैं और घरेलू उपायों पर निर्भर हो जाते हैं, जो हमेशा प्रभावी नहीं होते हैं। दांतों के स्वास्थ्य को लेकर फैले भ्रम न केवल आपके मौखिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं, बल्कि आपकी समग्र सेहत पर भी असर डाल सकते हैं, क्योंकि ***मुंह का स्वास्थ्य शरीर के अन्य अंगों के साथ गहराई से जुड़ा*** होता है।

इस लेख में, हम दंत स्वास्थ्य से जुड़े 15 प्रमुख मिथकों और उनके पीछे छिपे वास्तविक तथ्यों पर विस्तार से चर्चा करेंगे। हमारा उद्देश्य है कि आप इन मिथकों से जुड़ी सच्चाई को समझ सकें और अपने दांतों की देखभाल सही ढंग से कर सकें। ये तथ्य आपको न केवल सही जानकारी देंगे, बल्कि आपको यह समझने में भी मदद करेंगे कि किस प्रकार से दांतों और मसूड़ों की देखभाल की जानी चाहिए। इस जानकारी को अपनाकर आप अपने और अपने परिवार के मौखिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं और उन गलतफहमियों से बच सकते हैं जो आपके दांतों और मसूड़ों के लिए हानिकारक हो सकती हैं। सही जानकारी और नियमित देखभाल से आप अपने दांतों को लंबी उम्र तक स्वस्थ और मजबूत रख सकते हैं।

मिथक 1 : मीठा (चीनी) खाने से ही दांतों में कैविटी (Cavity) होती है?
वास्तविकता : कैविटी किसी भी प्रकार के कार्बोहाइड्रेट्स जैसे- रोटी, फल या मिठाई खाने से हो सकती है। जब ये खाद्य पदार्थ दांतों पर चिपक जाते हैं और ठीक से साफ नहीं होते हैं तो बैक्टीरिया इनका उपयोग कर एसिड बनाते हैं, जो कैविटी का कारण बनते हैं।

मिथक 2 : अगर दांत में दर्द नहीं हो रहा है, तो दांतों की कोई समस्या नहीं है?
वास्तविकता : कई बार दांतों की समस्याएं जैसे- कैविटी, मसूड़ों की बीमारी (periodontitis, Gingivitis) आदि के शुरुआती चरणों में दर्द नहीं होता है। नियमित चेकअप से ही इन समस्याओं का समय रहते पता लगाया जा सकता है।

मिथक 3 : कठोर ब्रश से दांत अधिक साफ होते हैं?
वास्तविकता : कठोर टूथब्रश का उपयोग दांतों की बाहरी परत (enamel) को नुकसान पहुंचा सकता है और मसूड़ों में चोट लग सकती है। नरम ब्रिसल ब्रश और हल्के हाथ से ब्रश करना अधिक सुरक्षित है।

मिथक 4 : मसूड़ों से खून आना सामान्य है और इसे नजरअंदाज किया जा सकता है?
वास्तविकता : मसूड़ों से खून आना, लाल होना, सूजन आदि मसूड़ों की बीमारी (Gingivitis) का संकेत हो सकता है, जो समय पर इलाज न मिलने पर गंभीर हो सकता है। इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और जल्द से जल्द दंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

मिथक 5 : नींबू या बेकिंग सोडा से दांत सफेद हो जाते हैं?
वास्तविकता : नींबू और बेकिंग सोड़ा का उपयोग दांतों की बाहरी परत (enamel) को नुकसान पहुंचा सकती है, जिससे दांत कमजोर हो जाते हैं।

मिथक 6 : दांतों का पीलापन केवल दांतों की सफाई न करने का परिणाम होता है?
वास्तविकता : दांतों का पीलापन कई कारणों जैसेकि उम्र बढ़ना, दवाईयों का सेवन या आनुवांशिक (Genetic) से हो सकता है। यह केवल सफाई की कमी का परिणाम नहीं होता है।

मिथक 7 : सफेद दांत हमेशा स्वस्थ दांतों का संकेत होता है?
वास्तविकता : अक्सर लोग चमकदार मुस्कान को सुंदर और जीवंत मानते हैं। सफेद दांत हमेशा स्वस्थ दांतों का संकेत नहीं होते। दांतों का रंग आनुवांशिक हो सकता है या खाद्य पदार्थों और तंबाकू के सेवन से प्रभावित हो सकता है।

मिथक 8 : डेंटल एक्स-रे हानिकारक होते हैं और इन्हें टालना चाहिए?
वास्तविकता : डेंटल एक्स-रे से होने वाला विकिरण बहुत कम होता है और यह पूरी तरह से सुरक्षित है। यह दंत समस्याओं का समय पर पता लगाने और उचित उपचार के लिए आवश्यक होता है।

मिथक 9 : दांतों की सफाई (Scaling) से दांत कमजोर हो जाते हैं?

वास्तविकता : दांतों की सफाई (Scaling) से दांत कमजोर नहीं होते, बल्कि यह मसूड़ों की सेहत को बेहतर बनाने और बैक्टीरिया को हटाने के लिए आवश्यक होती है। यह प्रक्रिया दांतों को स्वस्थ और मजबूत बनाए रखने में मदद करती है।
गर्भावस्था के दौरान दांतों का इलाज नहीं कराया जाना चाहिए?

वास्तविकता : गर्भावस्था के दौरान दांतों की देखभाल और उपचार सुरक्षित है। दंत चिकित्सक को आपकी गर्भावस्था के बारे में जानकारी होनी चाहिए, ताकि वह उचित सलाह और उपचार दे सके। हाल ही के अध्ययनों से पुष्टि हुई है कि गर्भावस्था के दौरान मसूड़ों की सूजन और बच्चे के जन्म के बीच संबंध है। मसूड़ों की सूजन से पीड़ित महिलाओं के इलाज नहीं कराने पर कम वजन वाले बच्चे के जन्म का जोखिम बढ़ जाता है।

मिथक 11 : बच्चों के दूध के दांतों की देखभाल की आवश्यकता नहीं होती है?

वास्तविकता : दूध के दांत स्थायी दांतों के लिए मार्गदर्शन करते हैं। उनकी अच्छी देखभाल से बच्चों के मौखिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। स्थायी दांत सही स्थिति में आते हैं और दांत की विसंगति (टेढ़े-मेढ़े दांत) से बचा जा सकता है।

मिथक 12 : ब्रेसेस (Braces) केवल बच्चों के लिए होते हैं?

वास्तविकता : ब्रेसेस किसी भी उम्र में लगाए जा सकते हैं, बशर्ते मसूड़े और दांत स्वस्थ हों। आमतौर पर 9-14 साल के बच्चों को ब्रेसेस लगवाए जा सकते हैं, क्योंकि इस उम्र में बच्चों के स्थायी दांत निकल चुके होते हैं। हलांकि, वयस्क भी ब्रेसेस का उपयोग कर अपने दांतों को सीधा करवा सकते हैं।

मिथक 13 : अगर आपके माता-पिता के दांत खराब थे,तो आपके दांत भी खराब होंगे?

वास्तविकता : हलांकि, कुछ दंत समस्याएं आनुवांशिक (Genetic) हो सकती हैं। सही मौखिक देखभाल, आहार और जीवन-शैली अपनाकर आप अपने दांतों को स्वस्थ रख सकते हैं। चाहे आपके माता-पिता के दांत कैसे भी रहे हों।

मिथक 14 : बुढ़ापे में दांतों का सड़ना सामान्य है?

वास्तविकता : उम्र के साथ दांतों का सड़ना सामान्य नहीं है। उचित मौखिक देखभाल और नियमित दंत चेकअप से वृद्धावस्था में भी दांतों को स्वस्थ रखा जा सकता है। खराब ओरल हाइजीन और मसूड़ों की बीमारी से कैंसर का जोखिम बढ़ सकता है।

मिथक 15 : दांतों का गिरना अनिवार्य है?

वास्तविकता : दांतों के गिरने के सबसे आम कारण खराब दंत स्वास्थ्य है। दांतों का गिरना किसी बीमारी या चोट के कारण हो सकता है, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है। दांतों की सही देखभाल से उन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

एक सुंदर मुस्कान
आपके लिए अनेक अवसरों के
दरवाजे खोलती है।

भारत का झील-पुरुष - आनंद मल्लिगावड

बी महबूब बाशा ,आरआरएससी, बेंगलुरु

भारत का IT हब कहे जाने वाला बेंगलुरु एक वक़्त पर 'झीलों के शहर' के नाम से भी जाना जाता था। लेकिन, तेज़ी से होते शहरीकरण के बीच यहां की पहचान गुम सी हो गई। इस पहचान को बचाने के लिए एक मैकेनिकल इंजीनियर ने अपनी नौकरी छोड़कर झीलों को जिंदा करने का अभियान शुरू किया। आज उन्हें लोग 'lake man' के नाम से जानते हैं। आनंद मल्लिगावड दावा करते हैं कि 2017 से अब तक वह 16 से भी अधिक झीलों को पुनर्जीवित कर चुके हैं। बेंगलुरु से शुरू हुए उनके इस सफ़र को आज पूरे देश भर में सराहना मिल रही है। बेंगलुरु को अक्सर 'नए भारत' के एक हिस्से के रूप में देखा जाता है। देश भर से लोग नौकरी की संभावनाओं, शिक्षा और बेहतर जीवन की तलाश में कर्नाटक की राजधानी, बेंगलुरू में आते हैं।

मल्लिगावाड द्वारा जीर्णोद्धार की गई झीलें

लेकिन बेंगलुरु, जिसने IT दिग्गजों की प्रसिद्ध उपस्थिति के कारण भारत की सिलिकॉन वैली भी कहा जाता है, अब पानी की भारी कमी से जूझ रहा है। इसके कारण भारत की सिलिकॉन वैली अब लगभग रहने लायक नहीं रह गई है। पहले, बड़ी संख्या में झीलों की मौजूदगी के कारण, इसे झीलों का शहर भी कहा जाता था। अब ऐसा नहीं है, क्योंकि तकनीकी राजधानी पानी के लिए संघर्ष कर रही है। हालांकि प्रशासन इस समस्या को हल करने के लिए थोड़ी देर से जागा है, लेकिन पानी की कमी की समस्या से निपटने के लिए पहला कदम झीलों को पुनर्जीवित करना है, जो अपनी मृत्युशैया पर हैं। आनंद मल्लिगावाड नामक एक व्यक्ति की सेना ऐसी स्थिति में बदलाव लाने के लिए तैयार है। पेशे से मैकेनिकल इंजीनियर मल्लिगावाड को अब द न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा "भारत का झील पुरूष" कहा जाता है, उन्होंने बेंगलुरु की 33 झीलों को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी दिलचस्प कहानी बेंगलुरु में ही खत्म नहीं होती। मल्लिगावाड ने अयोध्या के मंदिर शहर में 07 झीलों, लखनऊ में 09 और ओडिशा में 40 जलाशयों को पुनर्जीवित किया है। बचपन में, घर के पास एक झील के प्रति मल्लिगावाड का आकर्षण झीलों को पुनर्जीवित करने की उनकी खोज में सहायक बन गया।

बचपन का वह शौक एक जुनून बन गया, जिसकी वजह थी 2016 में मल्लिगावाड द्वारा पढ़ी गई एक अख़बार की रिपोर्ट। रिपोर्ट का सार यह था कि भारत के 21 बड़े शहरों में 2030 तक पानी की भारी कमी होगी। उन्हें एहसास हुआ कि बेंगलुरु उन शहरों में से एक है। इसने उन्हें शहर और उसके आस-पास की झीलों के बारे में और जानने और उनकी वर्तमान स्थिति पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

1960 के दशक में, बेंगलुरु में करीब 290 झीलें थीं। 2017 तक उनकी संख्या भी तेजी से घटकर 90 रह गई। उन 90 झीलों में से केवल 10 प्रतिशत ही सिंचाई के लिए उपयोगी थीं। मल्लिगावाड ने इन जल निकायों के बारे में कुछ करने की कसम खाई, जो बेंगलुरु के पानी की जरूरतों को पूरा करने वाली महत्वपूर्ण जीवनरेखा हैं। यह उनका एक अनिवार्य कर्तव्य था जिसे उन्हें पूरा करना था। मैकेनिकल इंजीनियर ने अपनी शामें इस नेक काम के लिए समर्पित कीं। उन्होंने झीलों की स्थिति के बारे में साहित्य पढ़ा और इस मुद्दे का विस्तार से अध्ययन किया। उनका प्रयास इन जल निकायों को पुनर्जीवित करने के लिए कॉरपोरेट्स की मदद लेना था। अथक प्रयास के बाद, मल्लिगावड़ ने जिस कंपनी के लिए काम किया था, उससे इसके लिए 1 करोड़ रुपये जुटाने में कामयाब रहे। उन्होंने 36 एकड़ की क्यालासनहल्ली झील को पुनर्जीवित करने के प्रयास शुरू किया, जो कि जर्जर हो चुकी थी। जब उन्होंने आस-पास रहने वालों के लिए जागरूकता शिविर शुरू किया, तो उनके पसंदीदा प्रोजेक्ट में लोगों की भागीदारी बढ़ गई।

स्थानीय लोगों और मजदूरों की मदद से, वह झील के सूखे तल से चार लाख क्यूबिक मीटर कीचड़ हटाने में कामयाब रहे। उस कीचड़ का इस्तेमाल करके, उन्होंने झील के भीतर छोटे-छोटे द्वीप बनाए। ये द्वीप अब हजारों-पक्षी प्रजातियों और पेड़ों से भरे हुए हैं क्योंकि बोम्मासंद्रा में क्यालासनहल्ली झील बहाली परियोजना ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया है।

अगली बारिश में झील का जलस्तर, जहां से मिट्टी का विशाल ढेर हटाया गया था, फिर से पानी से भर गया। झील को उसका प्राकृतिक आवास वापस मिल गया और उसके प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को नया जीवन मिला। इसी तरह के प्रयासों से उन्होंने कई सूखी झीलों में जीवन का संचार किया, जो सिर्फ़ सूखी मिट्टी के ढेर में सिमट कर रह गई थीं। मल्लिगावड़ की झील

बेंगलूरु में आनंद मल्लिगावड द्वारा जीर्णोद्धार तालाब

कीचड़ से भरी झील को साफ करने के बाद

बहाली परियोजनाओं में निवेश करने के लिए कॉर्पोरेट्स उमड़ पड़े, जिससे बहुत ज़रूरी वित्तीय पूंजी उपलब्ध हुई। मल्लिगावड़ की कार्यप्रणाली यह सुनिश्चित करना है कि झीलों की नींव बरकरार रहे और प्राचीन ज्ञान का सहारा लेकर उन्हें पुनर्जीवित किया जाए। वह इस प्रक्रिया के ज़रिए जलीय प्रजातियों के साथ-साथ स्थानीय वनस्पतियों की भी रक्षा करने में सक्षम हैं। विलुप्त होने की कगार पर खड़े जल निकायों को पुनर्जीवित करने के लिए मल्लिगावड़ का आदर्श वाक्य सरल है- ***हमारे प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान करना सीखें*** और प्रकृति के साथ दोस्ताना तरीके से तालमेल बिठाते हुए जीवन जिएं। प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों का उपयोग केवल उतना ही करें जितना हमें ज़रूरत है। पानी को बचाएँ। अगर संभव हो तो अपने जीवन का आधा हिस्सा अपने लिए और बाकी समय संरक्षण के लिए बिताएँ। यह एक महान दृष्टिकोण है।

कलाकृति

कु. असद
सुपुत्र श्री बी महबूब बाशा

एनआरएससी की मुख्य गतिविधियां...
स्वर्ण जयंती समारोह

एनआरएसए / एनआरएससी स्वर्ण जयंती समारोह (1974-2024) की पूर्विका (Curtain Raiser) कार्यक्रम का उद्घाटन 29 सितम्बर 2023 को पूर्व के निदेशकों की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया और 24 सितम्बर 2024 को डॉ. एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो/ सचिव, अंतरिक्ष विभाग, डॉ. के राधाकृष्णन एवं डॉ. ए.एस. किरण कुमार, पूर्व अध्यक्ष, इसरो / सचिव, अंतरिक्ष विभाग और एनआरएसए/ एनआएससी के पूर्व निदेशकों की गरिमामयी उपस्थिति में स्वर्ण जयंती समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के दौरान कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 100 सीटर सम्मेलन कक्ष में गणमान्यों के स्वागत के साथ सभागार तक शहनाई की धुन के साथ अतिथियों की अगुआई की गई। पूर्व के निदेशकों/अध्यक्षों द्वारा उदगार एवं अनुभव साझा किए गए। डॉ. ए.एस. किरण कुमार द्वारा "भू-प्रेक्षण प्रणाली में भविष्य के ट्रेंड" एवं संभावनाओं के साथ अगली पीढ़ी की रिमोट सेंसिंग पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान कई हिंदी/द्विभाषी पुस्तकों को विमोचन भी किया गया।

आपदा प्रबंधन में इसरो की भूमिका (हिंदी), कॉफी टेबल बुक - 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा (द्विभाषी) एवं भारत का कॉफी बागान एलटस (द्विभाषी) का विमोचन करते हुए अध्यक्ष, इसरो एवं अन्य मंचासीन गणमान्य

अध्यक्ष, इसरो द्वारा ओशनसैट-3 से पृथ्वी अवलोकन/ स्वर्ण जयंती स्मारिका का लोकार्पण

सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्वर्ण जयंती समारोह - पूर्विका (Curtain Raiser) कार्यक्रम

29 सितंबर 2023 को पूर्व निदेशकों एवं मंचासीन गणमान्यों के कर-कमलों द्वारा स्वर्ण जयंती लोगो का विमोचन

पूर्व निदेशकों एवं वर्तमान निदेशक के कर कमलों द्वारा स्वर्ण जयंती समारोह-पूर्विका के अवसर पर स्मारिका का विमोचन

स्वर्ण जयंती समारोह की पूर्विका के दौरान एनआरएससी गृह पत्रिका संवाद (सामान्य अंक) का विमोचन

गणतंत्र दिवस - 2024

शादनगर परिसर में गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए निदेशक, एनआरएससी

बालानगर परिसर में गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए सह- निदेशक

जीडिमेट्ला परिसर में उप निदेशक, ईसीएसए द्वारा ध्वजारोहण

नव वर्ष / प्रयोक्ता संपर्क बैठक - 2024

बालनगर परिसर में नव वर्ष के अवसर पर कैलंडर का विमोचन एवं कार्मिकों को संबोधित करते हुए निदेशक, एनआरएससी

जवाहरलाल नेहरू तकनीकी विश्वविद्यालय (JNTU), हैदराबाद में प्रयोक्ता संपर्क बैठक
एनआरएससी गृह पत्रिका संवाद (तकनीकी अंक) का विमोचन करते हुए मंचासीन गणमान्य

राजभाषा समारोह - 2023

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, हैदराबाद में हर वर्ष की तरह राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के दौरान कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में केंद्र के सभी पदाधिकारियों एवं परिवार के सदस्यों विशेषकर छोटे बच्चों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। समापन समारोह के अवसर पर उन्हें पुरस्कृत किया गया। कार्यालय में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन कार्यान्वयन के लिए प्रशासनिक क्षेत्र में प्रभागों और तकनीकी क्षेत्र में समूहों तथा क्षेत्रीय केंद्रों को निदेशक, एनआरएस के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन प्रभाग को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए निर्माण एवं अनुरक्षण समूह (CMG) को द्वितीय एवं क्षे.सु.सं. केंद्र -दक्षिण को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

"हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता" – डॉ. लोथार लुत्से

सतर्कता जागरूकता सप्ताह / स्वच्छता पखवाड़ा

सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम के दौरान बच्चों की सहभागिता

एनआरएससी हस्सतपेट आवासीय परिसर में स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान परिसर की साफ सफाई करते हुए कर्मचारीगण

जीडीमेट्ला परिसर में विद्यालय के छात्रों द्वारा स्वच्छता अभियान के दौरान स्वच्छता कार्यक्रम एवं सेल्फी स्टेंड

स्वच्छता पखवाड़ा समापन समारोह

अंतर-केंद्र खेलकूद प्रतियोगिता

एनआरएससी में अंतरिक्ष विभाग-इसरो अंतर केंद्र खेदकूद (एथलेटिक्स -इंडोर खेदकूद) प्रतियोगिता का आयोजन 16-26 नवंबर 2023 के दौरान दो फेज में किया गया, जिसका उद्‌घाटन निदेशक, एनआरएससी, गणमान्य खिलाडियों, केंद्रों के प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में श्री महेश्वर राव, आईएएस, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार द्वारा किया गया। अंतरिक्ष विभाग में अंतरिक्ष खेदकूद एवं मनोरंजन संवर्धन बोर्ड (SSRPB) की स्थापना 1 अक्तूबर 1983 को की गई थी जिसका उदेश्य इसरो के केंद्रों एवं यूनिटों में खेलकूद गतिविधि को बढावा देना है। सभी केंद्र यूनिटों के खिलाडियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और मेडल प्राप्त किया। सभी विजेताओं को द्विभाषी मेडल और प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

एथलेटिक्स एवं इंडोर खेल-कूद प्रतियोगिता

दोनो फेजों के दौरान सांसकृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

मुख्य गतिविधियां

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

एनआरएससी में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 को मनाया गया ।

डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती

डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती

महिला दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती कुंतला माधवी लता, अध्यक्ष, विरिंची अस्पताल

स्वर्ण जयंती स्मारिका

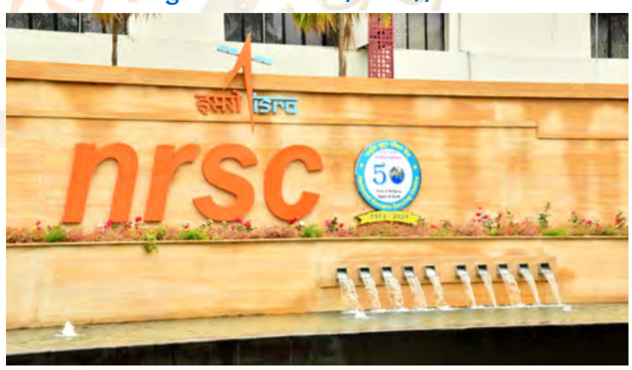

एनआरएससी स्वर्ण जयंती स्मारिका / फव्वारे / सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन करते हुए निदेशक, एनआरएससी

नवीनीकृत सभागार का उद्घाटन

नवीनीकृत सभागार का उद्घाटन करते हुए निदेशक, एनआरएससी

मुख्य गतिविधियां

एनआरएससी स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन

डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त होने पर अध्यक्ष, इसरो का सम्मान

नाइसेस त्रैमासिक पत्रिका का विमोचन

"एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं, विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी" - गणेश शंकर विद्यार्थी

स्वतंत्रता दिवस - 2024

15 अगस्त 2024 के अवसर पर बालानगर परिसर में निदेशक, एनआरएससी द्वारा ध्वजा-रोहण एवं द्विभाषी पी2पी का विमोचन

शादनगर परिसर में सह निदेशक, एनआरएससी द्वारा ध्वजा-रोहण एवं संबोधन

जीडीमेट्ला परिसर में उप निदेशक, ईसीएसए द्वारा ध्वजा-रोहण एवं संबोधन

उपलब्धियां

डॉ. एस सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो को जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (JNTU) हैदराबाद द्वारा डॉक्टरेट की उपाधी प्रदान की गई। इस उपलब्धि के लिए अध्यक्ष, इसरो को संपादक मंडल की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

भौगोलिक सूचना प्रौद्योगिकी संघ (Union of Geographic Information Technologist (UGIT)) ने 14 मार्च, 2024 को बेंगलुरु विश्वविद्यालय में UGIT अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक, एनआरएससी, हैदराबाद को **UGIT उत्कृष्टता पुरस्कार 2024** प्रदान किया गया। इस उलब्धि के लिए संपादक मंडल की ओर से निदेशक महोदय को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं...

उपलब्धियां

एनआरएससी को प्राकृतिक आपादाओं के सभी फेज में अखिल भारतीय स्तर पर आपातकालीन प्रबंधन हेतु राष्ट्रीय डेटाबेस प्रदान करने के लिए जिओ स्मार्ट इंडिया (Geo Smart India) उत्कृष्टता पुरस्कार-2023 प्राप्त हुआ है। इस उलब्धि के लिए एनआरएससी टीम को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं...

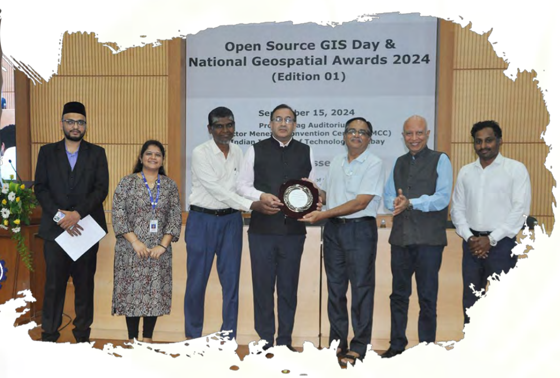

एनआरएससी को 'राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022' और 'भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023' के अनुरूप प्रयोक्ता समुदाय को मुफ्त उपग्रह डेटा संसाधन प्रदान करने में योगदान के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई द्वारा राष्ट्रीय भू-स्थानिक सक्षमता प्रदान करने के लिए **राष्ट्रीय भू-स्थानिक पुरस्कार 2024** प्रदान किया गया । यह पुरस्कार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई (IIT Bombay) द्वारा "ओपन सोर्स GIS दिवस" समारोह के दौरान प्रदान किया गया। इस उलब्धि के लिए एनआरएससी टीम को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं...

मुख्य गतिविधियां -

स्थापना के बाद से अब तक क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र –पूर्व , कोलकाता की प्रमुख गतिविधियां और उपलब्धियां कालक्रमिक रूप से इस प्रकार हैं :-

- 1989 बिहार और उड़ीसा के लौह अयस्क बेल्ट के कुछ हिस्सों में अनुप्रयोग सत्यापन कार्यक्रम
- 1989 नैटमो (NATMO), कोलकाता के लिए स्थानिक डेटा रिपोजिटरी का निर्माण (आरंभ)
- 1991 वर्षा आधारित क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय जलग्रहण विकास परियोजना
- 1991 दामोदर बेसिन पर अनुप्रयोग सत्यापन परियोजना
- 1992 सतत विकास के लिए एकीकृत मिशन
- 1994 दीघा-शंकरपुर तटीय क्षेत्र के तटीय क्षेत्र प्रबंधन हेतु पहल
- 1999 सुदूर संवेदन और जीआईएस (GIS) का उपयोग करते हुए सिमलीपाल जैवमंडल (बायोस्फीयर) रिजर्व प्रबंधन
- 2000 झारखंड राज्य के लिए भूमि सूचना प्रणाली (बिरसा वसुधा)
- 2003 सिक्किम के उत्तरी जिले, चांगमे-खांगपु ग्लेशियर का ग्लेशियो-जियोमॉर्फोलॉजिकल मानचित्रण और स्नाउट मानचित्रण
- 2004 सुदूर संवेदन और GIS का उपयोग करके हुगली मुहाना और डॉक सिस्टम में हाइड्रो-मॉर्फोलॉजिकल प्रक्रिया की निगरानी
- 2004 बिहार और झारखंड में स्थानिक और गैर-स्थानिक कालाजार केंद्रों में सैंडफ्लाई वितरण की पहचान और मानचित्रण में सुदूर संवेदन और GIS का अनुप्रयोग (आरंभ)
- 2009 कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट के एस्टेट और नदी प्रणाली को कवर करते हुए बंदरगाह संचालन पर सुदूर संवेदन आधारित अध्ययन
- 2010 सुदूर संवेदन और GIS का उपयोग करके चाय क्षेत्र का विकास और प्रबंधन
- 2011 बिहार और झारखंड में स्थानिक और गैर-स्थानिक कालाजार केंद्रों में सैंडफ्लाई वितरण की पहचान और मानचित्रण
- 2013 विकेंद्रीकृत योजना के लिए अंतरिक्ष आधारित सूचना समर्थन
- 2015 ओशनसैट 2 स्कैटरोमीटर से वैश्विक पवन वैक्टर का निर्माण
- 2015 विरासत केंद्रों का साइट प्रबंधन और सूची
- 2017 पश्चिम बंगाल का डिजिटल तटीय मानचित्रण
- 2019 विकेंद्रीकृत योजना के लिए अंतरिक्ष आधारित सूचना समर्थन
- 2020 रायगडा और सिद्दीपेट कस्बों के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करके सीवेज उपचार संयंत्रों और रूटिंग की साइट उपयुक्तता

2021 असम के जोरहाट जिले के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी और AI का उपयोग करके कृषि वानिकी संसाधनों की स्थानिक सूची और विकेन्द्रीकृत योजना के लिए अंतरिक्ष आधारित सूचना सहायता ।

IRS मिशनों के तहत सफलतापूर्वक पूरी की गई महत्वपूर्ण उपयोगकर्ता परियोजनाओं में कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट के बंदरगाह संचालन पर अध्ययन और तटीय सुरक्षा, पश्चिम बंगाल के लिए पश्चिम बंगाल के डिजिटल तटीय मानचित्रण शामिल हैं। ईओ मिशनों और नई प्रौद्योगिकियों के आगमन के साथ, समुद्र विज्ञान, कृषि, सुंदरबन मैंग्रोव और भूविज्ञान के क्षेत्र में परियोजनाओं ने धीरे-धीरे प्रमुखता प्राप्त की है ।

28 दिसंबर 2023 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किया गया । माननीय अध्यक्ष ने राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उठाए गए कदमों के लिए केंद्र की सराहना की ।

10 जनवरी को केंद्र में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी पखवाड़ा का पुरस्कार वितरण समारोह

पर्यावरण दिवस के दौरान पद्मश्री श्री नारायण चक्रवर्ती जी का स्वागत एवं अभिभाषण कार्यक्रम

मौजूदा सेवाओं के अलावा महासागरों से केंद्र की निकटता को देखते हुए CAL-VAL और विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला स्थापित करने का लक्ष्य है। पूर्वी क्षेत्र की विविधता और क्षेत्रीय मुद्दों को संबोधित करने की दिशा में पहले के प्रयासों से प्राप्त अनुभव, केंद्र को महासागर-तटीय और पृथ्वी विज्ञान में विकसित होने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम के समापन समारोह

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - (पश्चिम) जोधपुर

मुख्य गतिविधियां-

शुष्क क्षेत्र में प्रतिरोधकता मीटर के अनुप्रयोग:प्रतिरोधकता सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग भू-जल समन्वेषण से संबंधित कई मुद्दों को संबोधित करने के लिए किया जाता है, जिसमें जलभृत (एक्वीफर) के स्तर, गहराई, मोटाई और सीमाओं का आकलन शामिल हैं। प्रतिरोधकता सर्वेक्षण का उपयोग विभिन्न शोध व विकास अध्ययनों के लिए किया गया। 2D एवं 3D टॉमोग्राम तैयार किए गए, जो भू-जल संभाव्यता, जलभृत पदार्थों, भू-जल स्तर की गहराई व इसकी गुणवत्ता, मूल धातु डिपोजिट एवं भूमिगत पुरातात्विक स्थल के विश्लेषण में अत्यधिक उपयोगी पाए गए।

उपलब्धियां: भारत के जल संसाधन सूचना प्रणाली (इंडिया-वारिस) का विकास: यह देश के जल संसाधनों के आकलन, नियोजन एवं प्रबंधन के लिए तैयार किया गया वेब -GIS पोर्टल है। जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन विभाग, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग द्वारा प्रायोजित परियोजना को राष्ट्रीय जल सूचना केंद्र (NWIC) को सुपुर्द किया गया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य संसाधन भंडार (NHRR) पोर्टल के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को राष्ट्रव्यापी (10 लाख से अधिक) स्वास्थ्य प्रतिष्ठानों की पूर्णतः डिजिटल गणना में सहायता प्रदान की गई। इन आंकड़ों का प्रयोग डिजिटल स्वास्थ्य मिशन के लक्ष्यों में किया जा रहा है। इसके अलावा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी द्वारा टिड्डी निगरानी, उपग्रहीय प्रतिबिंबकी के प्रयोग द्वारा वैदिक सरस्वती नदी के पैलियोचैनल का मानचित्रण, थार मरुस्थल क्षेत्र में आनेवाली धूल भरी आंधियों के लिए Automated Analyzer of Dust storm Hazards in India-AAnDHI) के माध्यम से निगरानी एवं जोखिम का आकलन, संबंधित राज्यों के विद्यालयों / महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं विभिन्न विभागों के पदाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

राजभाषाई निरीक्षण: वर्ष 2022-23 हेतु वार्षिक निरीक्षण श्री एन. पट्टाभिरामन, वरि. प्रधान, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन यूआरएससी, बेंगलुरू द्वारा दिनांक 22 नवंबर, 2023 को किया गया। वार्षिक राजभाषाई निरीक्षण के दौरान केंद्र में राजभाषा गतिविधियों की सराहना की गई।

पूल 'ई' स्तरीय हिंदी तकनीकी संगोष्ठी: क्षेत्रीय केंद्र जोधपुर में दिनांक 16.02.2024 को **"जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक आपदाओं में अंतर्संबंध: प्रतिरोधी क्षमता निर्माण में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका"** विषय पर पूल 'ई' स्तरीय हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पूल 'ई' के अंतर्गत एनआरएससी एवं क्षेत्रीय केंद्रों के साथ एनएआरएल, एड्रिन, एसडीएससी-शार एवं आईएलसी, चेन्नई आते हैं, जिनमें कार्यरत पदाधिकारियों से लेख आमंत्रित किए गए थे। इन कार्यालयों से कुल 49 तकनीकी लेख प्राप्त हुए। तकनीकी, मूल्यांकन एवं संपादन समिति द्वारा प्राप्त लेखों की गहन जांच के बाद 32 लेख प्रस्तुति हेतु चुने गए, जिन्हें संकलित कर लेख-संग्रह के रूप में प्रकाशित किया गया। संगोष्ठी के दौरान 18 लेख वैयक्तिक रूप से और 13 लेख ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का उद्घाटन एवं लेख संग्रह का विमोचन निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, डॉ. प्रकाश चौहान के कर कमलों

द्वारा किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में आपदा प्रबंधन और पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व प्रो. सूर्य प्रकाश, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान द्वारा अभिभाषण दिया गया। निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान परिपेक्ष्य में "जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक आपदाएं" समसामयिक विषय है और तकनीकी संगोष्ठी के दौरान आपदा प्रबंधन से संबंधित कई महत्वपूर्ण पहलु उभारकर सामने आने की उम्मीद करता हूं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस-2024: 07 मार्च, 2024 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया है। सभी महिलाओं/छात्राओं (कर्मचारीगण-नियमित/संविदाकर्मी एवं परियोजना प्रशिक्षु) ने आयोजित प्रतियोगिताओं / कार्यक्रम में बढ़चढ़ कर भाग लिया।

उपलब्धियां : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या.-2), जोधपुर द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पश्चिम, जोधपुर को द्वितीय पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

विश्व हिंदी दिवस-2024 : 10 जनवरी, 2024 को कार्यालय में विश्व हिंदी समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, सूचना-पट्ट पर हिंदी पोस्टर प्रदर्शित किए गए व ई-मेल के माध्यम से भी इन्हें परिचालित किया गया तथा कार्यालय-कर्मियों हेतु दो प्रतियोगिताओं क्रमशः 'प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' एवं 'अनुवाद प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर द्वारा "राजभाषा नीति, कार्यान्वयन और हमारे दायित्व" विषय पर एक अतिथि-व्याख्यान भी दिया गया।

विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम के दौरान "राजभाषा नीति, कार्यान्वयन एवं हमारे दायित्व" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान

हिंदी पखवाड़ा- सितंबर माह में हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं / गतिविधियों का आयोजन किया गया। जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बासनी स्टेशन जोधपुर में छात्रों को वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी भाषा के माध्यम से इसरो/एनआरएससी/क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-पश्चिम के कार्यों, परियोजनाओं एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई। समापन समारोह के अवसर पर सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह स्वतंत्रता दिवस / स्वच्छता पखवाड़ा की झलकियां

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - (मध्य) नागपुर

मुख्य गतिविधियां-

हिंदी पखवाड़ा : विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन 18-27 सितंबर 2023 के दौरान किया गया। इन हिंदी प्रतियोगिताओं में केंद्र के सभी पदाधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। समापन समारोह के दौरान हिंदी प्रतियोगिता के विजेताओं को डॉ. जी श्रीनिवासन, महाप्रबंधक द्वारा पुरस्कृत किया गया।

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह : विश्व अंतरिक्ष सप्ताह, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और मानव स्थिति की बेहतरी में उनके योगदान को एक अंतरराष्ट्रीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व अंतरिक्ष सप्ताह का विषय "अंतरिक्ष और उद्यमिता" था। हमारे केंद्र में स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें लगभग 1500 छात्रों, शिक्षकों और अन्य आम जनता ने भाग लिया। इस दौरान **अंतरिक्ष जागरूकता कार्यक्रम, अंतरिक्ष प्रदर्शनी, 'Think India' Meet the Scientist programme** आदि का आयोजन किया गया।

आउटरीच / अंतरिक्ष प्रदर्शनी / प्रशिक्षण - 24-26 मार्च 2023 के दौरान डिंडोरी में मध्य प्रदेश के गोंड क्षेत्र के आदिवासियों के सशक्तिकरण के लिए "मध्य प्रदेश वैज्ञानिक साक्षरता महोत्सव" में अंतरिक्ष प्रदर्शनी लगाई।

आरआरएससी-मध्य ने 15 से 18 सितंबर 2023 के दौरान भोपाल, मध्य प्रदेश में 10वें भोपाल विज्ञान मेले में अंतरिक्ष प्रदर्शनी लगाई।

श्री ए.एस. किरण कुमार, सदस्य, अंतरिक्ष आयोग एवं पूर्व अध्यक्ष, इसरो द्वारा 'साइंस ऑन स्फीयर' सुविधा पर 'ब्लू प्लैनेट' शो की समीक्षा की गई।

अंतरिक्ष महायात्रा - विज्ञान भारती और इसरो के बीच एक सहयोगी कार्यक्रम 'अंतरिक्ष महायात्रा' का आयोजन अगस्त-2023 से मार्च 2024 के दौरान महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर स्कूलों/कॉलेजों में 'स्पेस ऑन व्हील्स' के के माध्यम से किया गया। वैज्ञानिकों ने वर्धा, यवतमाल और नागपुर जिलों में विभिन्न स्कूलों/कॉलेजों का दौरा किया। कार्यक्रम के प्रतिभागियों को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम और देश के लिए इसके लाभों के बारे में विस्तार से बताया गया। मुख्य अतिथि श्री एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो और विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक, एनआरएससी की गरिमामयी उपस्थिति में समापन कार्यक्रम नागपुर में आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम - दिनांक 20-24 नवंबर, 2023 के दौरान इसरो आपदा प्रबंधन सहायता (DMS) कार्यक्रम के अंतर्गत शहरी बाढ़ जोखिम को कम करने और शमन हेतु अंतरिक्ष आधारित इनपुट पर पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। किसान

कल्याण एवं कृषि विकास संचालनालय, म.प्र. शासन के पदाधिकारियों के लिए सतत विकास के लिए चंबल लैंडस्केप के लक्षण वर्णन और प्रबंधन में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग पर प्रशिक्षण प्रदान किया गयाए।

हिंदी कार्यशाला- अप्रैल-जून, 2023 और जनवरी-मार्च, 2024 तिमाही के दौरान कार्यशाला संचालन क्रमशः डॉ शंकर कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) और श्री सोनू जैन, उप निदेशक (रा.भा.) द्वारा किया गया। केंद्र से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

विश्व हिंदी दिवस 2024- 10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस-2024 के अवसर पर केंद्र के पदाधिकारियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को नकद पुरस्कार दिए गए।

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह 2023 (World Space Week 2023) आरआरएससी-मध्य, एनआरएससी, नागपुर ने 4-10 अक्टूबर 2023 के दौरान केंद्र में विश्व अंतरिक्ष सप्ताह - 2023 का आयोजन किया। विश्व अंतरिक्ष सप्ताह विज्ञान और प्रौद्योगिकी और मानव स्थिति की बेहतरी में उनके योगदान को एक अंतरराष्ट्रीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व अंतरिक्ष सप्ताह का विषय "अंतरिक्ष और उद्यमिता" था। विश्व अंतरिक्ष सप्ताह - 2023 के

10 मई 2023 को निदेशक, एनआरएससी के कर कमलों से आऊटरीच सुविधा का उद्घाटन

स्वच्छता पखवाड़ा, अंबेडकर जयंती एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

उपलक्ष्य में, हमारे केंद्र में स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें लगभग 1500 छात्रों, शिक्षकों और अन्य आम जनता ने भाग लिया। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जो निम्नानुसार हैं: अंतरिक्ष जागरूकता कार्यक्रम, अंतरिक्ष प्रदर्शनी, 'Think India' Meet the Scientist programme.

एनआरएससी स्वर्ण जयंती समारोह: आरआरएससी-मध्य द्वारा 26 जुलाई 2024 को "समाज और स्थिरता के लिए अंतरिक्ष: भारत की अंतरिक्ष गाथा" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र - (उत्तर) दिल्ली

मुख्य गतिविधियां-

1.**भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग (GSTA) प्रौद्योगिकी कार्यक्रम:** अंतरिक्ष विभाग के क्षमता निर्माण और सार्वजनिक आउटरीच (CBPO) की पहल के रूप में "भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग" प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। पहले चरण का आयोजन आरआरएससी उत्तर/एनआरएससी, नई दिल्ली और उत्तर-पूर्व अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (NESAC), शिलांग में नवंबर 2023 के दौरान किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री एस. सोमनाथ, सचिव, अंतरिक्ष विभाग एवं अन्य वरिष्ठ गणमान्यों की उपस्थिति में माननीय राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा ऑनलाइन मोड में किया गया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के कुल 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, भारतीय खान ब्यूरो, खान मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (NCCR), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, राष्ट्रीय ध्रुवीय और महासागर अनुसंधान केंद्र (NCPOR), रक्षा मंत्रालय, इस्पात मंत्रालय, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, हिमालयन बायोरेसोर्स टेक्नोलॉजी संस्थान (CSIR-IHBT), नीति आयोग, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भूमि संसाधन विभाग और गृह मंत्रालय के अंतर्गत इंटेलिजेंस ब्यूरो शामिल थे।

1. विश्व अंतरिक्ष सप्ताह उत्सव का आयोजन: विश्व अंतरिक्ष सप्ताह (10 अक्टूबर 2023) के अवसर पर आरआरएससी-उत्तर में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली और एनसीआर के स्कूलों और कॉलेजों के लगभग 107 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. समीर सरन ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम पर व्याख्यान दिया। अंतरिक्ष और उद्यमिता पर NSIL द्वारा एक ऑनलाइन व्याख्यान भी आयोजित किया गया।

2. इसरो जियोपोर्टल सेवाएं और जागरूकता गतिविधियां प्रशिक्षण कार्यक्रम: 14 दिसंबर 2023 को आरआरएससी-उत्तर में विदेश मंत्रालय (MEA) के अधिकारियों के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन डॉ. प्रकाश चौहान, निदेशक एनआरएससी की अध्यक्षता में किया गया। विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व- सुश्री मुआनपी सियावी, संयुक्त सचिव (निरस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मामले) ने किया। कार्यशाला में भुवन की क्षमताओं, भारत-ओमान अंतरिक्ष कार्यक्रम, भूटान (वनाग्नि और भूस्खलन), मॉरीशस, भारत-प्रशांत द्वीप समूह सहयोग मंच (FIPIC) के लिए प्रशांत द्वीप देशों को सशक्त बनाने के लिए डेटा वेयरहाउस (DWEPIC) पोर्टल आदि के तहत उपलब्ध कराए गए डेटा और सेवाओं का प्रदर्शन किया गया। जलवायु और पर्यावरण अध्ययन के लिए राष्ट्रीय सूचना प्रणाली (NICES) के साथ वेदास और मोसडैक पोर्टल पर भी प्रस्तुतियां दी गईं। निदेशक, एनआरएससी और संयुक्त सचिव (D&ISA) कर कमलों द्वारा MEA से संबंधित इसरो के जियोपोर्टल पर मूल्यवान जानकारी वाली एक संदर्भ पुस्तक का विमोचन किया गया।

3. आपदा प्रबंधन के लिए भारतीय पृथ्वी अवलोकन पोर्टल प्रशिक्षण कार्यक्रम-

20 दिसंबर 2023 को आरआरएससी-उत्तर ने इसरो आपदा प्रबंधन सहायता (DMS) कार्यक्रम के तहत "आपदा प्रबंधन के लिए भारतीय पृथ्वी अवलोकन पोर्टल" पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को भारत में प्राकृतिक आपदाओं के प्रभावी प्रबंधन में उपग्रह डेटा और इसरो के जियोपोर्टल की महत्वपूर्ण भूमिका से परिचित कराना था। एनडीएमए के संयुक्त सचिव श्री कुणाल सत्यार्थी IFS ने मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्यशाला में 17 विभिन्न संगठनों और विभागों के 49 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

4. हिंदी पखवाड़ा (14-29 सितंबर 2023)

हिंदी पखवाड़ा 2023 इसरो/अं.वि. शाखा सचिवालय के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। आरआरएससी-उत्तर के कर्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

5. वन्य अनुप्रयोगों के लिए उन्नत रिमोट सेंसिंग तकनीकों पर कार्यशाला: भारतीय वन सेवा (IFS) अधिकारियों और भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (ICFRE) के वैज्ञानिकों के लिए दो दिवसीय (29 से 30 जनवरी 2024) कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमती कंचन देवी, महानिदेशक द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (ICFRE) की विभिन्न प्रयोगशालाओं से 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

6. आपदा प्रबंधन के लिए पृथ्वी अवलोकन समर्थन प्रशिक्षण कार्यक्रम: 11 से 15 मार्च, 2024 तक इसरो-डीएमएस कार्यक्रम के तहत आपदा प्रबंधन के लिए पृथ्वी अवलोकन समर्थन पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण आयोजित किया। इस प्रशिक्षण में 18 विभिन्न संगठनों और विभागों के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के प्रतिभागियों में विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार की एजेंसियों, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और शैक्षणिक संस्थानों के नामित प्रतिनिधि शामिल थे।

7. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 12 मार्च 2024: 12 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इसरो दिल्ली कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। एमएफ अंतरिक्ष आयोग की सदस्य, सुश्री सीमा जैन ने समापन समारोह की शोभा बढ़ाई ।

8. रिमोट सेंसिंग तकनीकों पर एक दिवसीय कार्यशाला: पानीपत इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (**PIET**) के यूजी/पीजी छात्रों के लिए 15 अप्रैल 2024 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजित किया गया, जिसमें 37 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

9. डिजिटल इमेज प्रोसेसिंग (DIP) प्रशिक्षण कार्यक्रम:

1-4 अप्रैल 2024 के दौरान JMI, नई दिल्ली के भूगोल में एम.ए./एम.एससी कर रहे छात्रों के लिए 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। JMI के भूगोल विभाग के 29 छात्रों ने 4 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। कुलपति (VC), JMI ने प्रारंभिक कार्यक्रम में उपस्थिति दी।

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-(दक्षिण) बेंगलुरू

मुख्य गतिविधियां-

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण के क्षेत्रीय विषय बागवानी, कृषि/ मिट्टी विज्ञान, वानिकी, ग्रामीण-विकास, पुरातत्व, शहरी अध्ययन, जल संसाधन, भू-सूचना विज्ञान और कंप्यूटर अनुप्रयोग, मशीन लर्निंग/डीप लर्निंग आदि हैं। इस केंद्र ने देश की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयोग आधारित बड़ी संख्या में परियोजनाएं की हैं। इसके साथ-साथ केंद्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन पर भी समुचित ध्यान दिया जाता है। केंद्र को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए वर्ष 2020-21 के लिए प्रथम'क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार',दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र के लिए आयोजित राजभाषा सम्मेलन 2023 के दौरान तिरूवनंतपुरम में 17 फरवरी 2023 को केरल के माननीय राज्यपाल-महामहिम आरिफ मोहम्मद खान और माननीय गृह राज्य मंत्री द्वारा प्रदान किया गया।

माननीय राज्यपाल द्वारा शिल्ड प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक, क्षे.कें.-दक्षिण और माननीय गृह राज्यमंत्री से प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी तथा पुरस्कार के साथ महा प्रबंधक एवं सहायक निदेशक(रा.भा.), एनआरएससी

केंद्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नराकास, बेंगलुरू द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु तृतीय पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक, क्षे.कें. दक्षिण एवं कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र-दक्षिण, बेंगलूरु के राजभाषा समारोह के आयोजन एवं पुरस्कार वितरण की झलकियां

नाविक और सुदूर संवेदन भू -केंद्र

रंजीत कुमार ,एनआरएससी, हैदराबाद

सुदूर संवेदन भू-केन्द्र के समय व्यवस्था में नाविक की भूमिका : समय व्यवस्था किसी भी सुदूर संवेदन भू-केन्द्र का एक प्रमुख अंग होता है। कोऑर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम दूनिया का स्टेंडर्ड टाइम कहा जाता है जो एटॉमिक घड़ियों पर आधारित समय होता है। 1 सितंबर 1947 में भारत ने अपना मानक समय IST को अपनाया था जो कि कोऑर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम से 03:30 आगे रहता है।

वर्तमान समय में भारतीय महादीप के सारे सुदूर संवेदन भू-केन्द्र नाविक युक्त समय व्यवस्था से लैस हैं । नाविक युक्त समय व्यवस्था नाविक उपग्रहों से संपर्क साध-कर भू-केन्द्र के समय को एटॉमिक घड़ियों के समय से सिंक्रनाइज करती है । इस सिंक्रनाइज प्रक्रिया के कारण भू-केन्द्र के समय की शुद्धता कोऑर्डिनेटेड यूनिवर्सल टाइम से 50 नैनो सेकंड की हो जाती है।

नाविक एक स्वायत्त क्षेत्रीय उपग्रह नेविगेशन प्रणाली है जो सटीक वास्तविक समय स्थिति और समय स्थिति और समय सेवाएं प्रदान करता है। इसमें भारत और इसके चारों ओर 1500 कि.मी. तक फैला क्षेत्र शामिल है और आगे विस्तार की योजना है ।

हमारे सुदूर संवेदन भू-केन्द्र में समय आईरीग – जी कोड और NTP पैकेट के रूप में प्रयोग में आता है । आईरीग जी कोड हर 10 माइक्रों सेकंड में अपने समय को अद्यतन करता है। यह समय VDH आंकड़े के प्रत्येक ढ़ांचे के आरंभ के 52 फलक पर उल्लेखित होता है जो उपग्रह के समय से सह – संबधित कर आगे के लेवल जीरो उत्पाद के उत्पक्ष करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है।

NTP समय भू-केन्द्र को हर कम्प्यूटर के समय को सुधार कर उसे शुद्ध बनाता है। इस तरह से भू-केन्द्र में उपयोग होने वाले ऐसे अनेक सॉफ्टवेयर जिनको एक खास समय पर सक्रिय होने में मदद करता है।

सुदूर संवेदन उपग्रह को जन PTS अंदाज में लक्ष्यानुसारण किया जाता है तब भी समय की शुद्धता की आवश्यकता होती है। एंटेना को एक खास समय में एक खास दिगंश और एक खास उत्कर्ष के लिए घुमाया जाता है ताकि उपग्रह से आंकड़े के सीधे आंर्जित किया जा सके । इसके लिए समय की सटीकता की आवश्यकता होती है।

नाविक में दोहरी आवृतियाँ (S और L बैंड) हैं जो GPS के केवल L बैंड से बेहतर है। आवृति त्रुटि का आकलन करने के लिए GPS एक वायुमंडलीय मॉडल पर निर्भर करता है, और सटीक त्रुटि का आकलन करने के लिए इसे समय -समय पर इस मॉडल को अद्यतन करना पड़ता है। नाविक में, वास्तविक विलंब का आकलन दो आवृतियों (S और L बैंड) के विलंब में अंतर को मापकर किया जाता है। इसलिए नाविक, आवृत्ति त्रुटि खोजने के लिए किसी मॉडल पर निर्भर नहीं है और GPS से अधिक सटीक हो सकता है ।

कलाकृति

कु. रचना अग्रवाल
सुपुत्री श्री रणजीत कुमार

2047 की हिंदी

राधेश्याम यादव, आरआरएससी, बेंगलुरू

प्रस्तावना

'भविष्य काल व्याकुल करे, भूतकाल भरमाए। वर्तमान में जो जिए, वह जीना सीख जाए।।'

वैश्वीकरण और भाषायी मिलावट के दौर में दुनिया की तमाम भाषाएं और बोलियां अपने अस्तित्व एवं वर्चस्व के लिए जूझ रहीं हैं। भाषाशास्त्री मानते हैं कि दुनिया में लगभग छः हजार भाषाएं हैं। 21वी सदी के अंत तक 90% लुप्त हो सकती हैं। पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (PLSI) की ओर से करवाए गए बेसलाइन सर्वे के अनुसार वर्तमान में भारत देश में करीब 780 भाषाएं बोली जाती हैं और 66 लिपियां मौजूद हैं। पिछले पांच दशक में हमारी 220 भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं। कुल 197 भाषाएं संकट में हैं। ऐसे परिदृश्य में आज से 23 वर्ष बाद 2047 में जब हमारा देश अपनी आजादी की शताब्दी मना रहा होगा उस समय 'कोटि-कोटि कंठों की भाषा, जन-गण-मन की आशा-अभिलाषा' हमारे देश की राजभाषा हिंदी कैसी होगी, इस पर चिंता-चिंतन और चर्चा परमावश्यक है।

हिंदी का सफरनामा: हमारा देश सांस्कृतिक एवं भाषिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध एवं विविधताओं से भरा-पूरा है। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली हैं, लेकिन कबीर ने जिस 'भाषा' को 'बहता नीर' कहा था, वह हिंदी ही है जो देवभाषा से लोकभाषा बनकर सदियों से देश को सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक रुप से जोड़ती रही है। 'तुर्की, अरबी, हिन्दुई, भाषा जेती आहि। जेहि मँह मारग प्रेम का, सबै सराहे ताहि।' कहते हुए महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी ने हिंदी में ही 'पद्मावत' रचा तो रसखान ने कृष्ण भक्ति-भावना से भीगी – 'मानुष हौं तो वही रसखान, वसों संग गोकुल गाँव के ग्वारन.. पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो परछत्र पुरंदर कारन।' जैसी रचनाएं रचकर सांप्रदायिक सद्भाव-सौहार्द्र की अद्‌भुत मिसाल पेश की। हिंदी में ही कृष्ण-लीला', 'रामचरित मानस' रचकर 'सूर सूर तुलसी शशि, उदगण केशव दास' ने भारतीय जनमानस को आलोकित किया। हिंदी को ही देश के महापुरुषों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वदेशी आंदोलन का सूत्रधार बनाया। बंकिमचंद्र चटर्जी ने 'वंदे मातरम्' गाया तो नेताजी ने 'जय हिंद', 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' का उद्‌घोष सुनाया। हालांकि हिंदी का चारों धामों की संपर्कभाषा से जन-गण की राजभाषा बनने का सफर बड़ा संघर्षमय रहा है। 1899 में मदनमोहन मालवीय के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने उत्तर-पश्चिम एवं अवध प्रांत (आज के उत्तर प्रदेश) के गवर्नर सर एंथनी मेकडोनाल्ड को ज्ञापन देकर मांग की कि अदालतों का कामकाज नागरी में भी किए जाना चाहिए। मेकडोनाल्ड द्वारा यह मांग मानने के बाद बीसवीं सदी में हिंदी के प्रचार-प्रसार में उछाल आया। गांधीजी ने दक्षिण भारत में हिंदी शिक्षण का अभियान चलाकर लाखों लोगों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। 1925 में कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में अखिल भारत स्तरीय कार्यवाही हिंदी में चलाए जाने का प्रस्ताव पारित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उसी राष्ट्रीय भावना से अभिप्रेत गोपालस्वामी आयंगर ने 12 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में राजभाषा संबंधी प्रस्ताव प्रस्तुत किया। लम्बी बहस के बाद 14 सितम्बर को लगभग एकमत से हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। 26 जनवरी 1950 से संविधान लागू होने के साथ संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी देश की राजभाषा बन गई। इसे विकसित कर भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का दायित्व भारत सरकार को सौंपा गया। तब यह तय किया गया कि आगामी 15 वर्षों तक हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही सरकारी कामकाज की भाषा बनी रहेगी और उसके बाद हिंदी को पूर्णतः स्वीकार कर लिया जायेगा। लेकिन 1965 की अवधि पूरी होने से पहले ही कुछ राजनेताओं के क्षुद्र स्वार्थ एवं क्षेत्रीयता की संकीर्ण भावना के कारण राष्ट्रीय स्तर पर भाषिक एकता की उत्कट भावना क्षीण होने लगी। तमिलनाडु, केरल, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक आदि राज्यों में हिंदी विरोधी आंदोलन शुरू हो गए जिसे सुलझाने के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया कि जब तक संसद के दोनों सदन और देश के सभी राज्य अपनी विधानसभाओं में प्रस्ताव पास कर हिंदी को राजभाषा के रूप में नहीं स्वीकार कर लेते तब तक अंग्रेजी भी सरकारी कामकाज में इस्तेमाल होती रहेगी। कालांतर में 1967 में राजभाषा अधिनियम में संशोधन किया गया और 1976 में राजभाषा नियम बनाया गया जो राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित हुआ।

वर्ष 1971 की जनगणना के अनुसार भारत की पूरी आबादी 54,81,95,652 में से हिंदी को मातृभाषा मानने वालों की संख्या 20,85,14,005 थी। यह राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, दिल्ली की प्रमुख भाषा और चंडीगढ़, पंजाब, पश्चिम बंगाल, अंडमान निकोबार में दूसरी तथा जम्मू-कश्मीर, असम, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश एवं त्रिपुरा में तीसरी प्रमुख भाषा थी। यानि हिंदी राष्ट्रभर के लोगों की प्रिय भाषा थी। 26.8 % लोगों की यह द्वितीय भाषा थी। वर्ष 1999 की जनगणना के अनुसार, देश की कुल आबादी 91,69,36,830 में से हिंदी जानने वालों की संख्या 67,22,41,910 यानि 73.31% थी। डॉ. नौटियाल की शोध रिपोर्ट-2015 के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1,27,41,90,992 में से 1,01,21,31,433 यानि 79.43% एवं विश्व की 18% आबादी

हिंदी जानती है। इस प्रकार देश-दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार लगातार बढ़ रहा है जिसकी गति नई शिक्षा नीति के अंतर्गत गुणात्मक रुप से बढ़ने की आशा- अपेक्षा है।

बहुभाषिक राज्यों का उभार: 1956 में लिंग्विस्टिक स्टेट रिऑर्गनाइजेशन बना था। उस दौर में यह सोच थी कि हर प्रमुख भाषा का अपना राज्य हो। लेकिन बीते 6 दशकों में स्थितियां बदल गई हैं। कभी भाषायी आधार पर गठित आंध्रप्रदेश तेलंगाना राज्य आज बंट चुके हैं। बेहतर कैरियर व रोजी-रोटी की तलाश में गांव की आबादी द्वारा शहर की ओर पलायन से अब तो हर राज्य की राजधानी, बहुभाषी बनती जा रही है। राजनीति से हटकर देखा जाए तो क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिंदी का मेल-मिलाप और शब्दों का आदान-प्रदान सहज रुप से बढ़ रहा है। भविष्य में बहुत सारे राज्य बहुभाषिक राज्य के स्वरूप में उभरने लगेंगे। इसमें हिंदी का सहज रुप से सर्वाधिक प्रसार संभावित है।

भाषाई मिलावट और हिंदी :जहाँ तक भाषा में मिलावट की बात है तो कुएं/तालाब में जहर घुल सकता है मगर बादलों के पानी में मिलावट नहीं हो सकती। कलियाँ खिलती हैं पर फूल झड़ते हैं, मुरझाए फूलों से बगीचे की रौनक नहीं बढ़ती। वैश्वीकरण के दौर में कोई भी भाषा शुद्धता का दावा नहीं कर सकती। विश्व की अन्य भाषाओं की तरह हिंदी भी रिमिक्सिंग का शिकार हो रही है। लेकिन हिंदी को जड़ बनाना भी उचित नहीं होगा। इसे संकीर्णता से बचाकर परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी के दौर में बाजार की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम/समर्थ बनाना होगा।

चुनौतियों एवं उपलब्धियों के बीच वैश्विक (ग्लोबल) बनी हिंदी :हिंदुस्तान के हृदय की भाषा हिंदी की अनुगूंज विश्व पटल पर सुनाई पड़ रही है, यह यथार्थ है। तमाम भारतीय पेशेवर विश्व भर में पहुंच रहें हैं और बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में निवेश के लिये आ रही हैं। हर देशी -विदेशी कम्पनी/ विज्ञापनदाता भारत में पैठ जमाने के लिए हिंदी का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार हिंदी जनाकांक्षा के साथ साथ आजिविका से भी जुड़ रही है, जो हिंदी के भविष्य के लिए शुभ संकेत हैं। भारत देश के वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लगातार हिंदी में संबोधन दिए जाने से हिंदी के प्रति संवेदनशीलता एवं स्वीकार्यता बढ़ी है।

भविष्य की हिंदी और हिंदी के भविष्य को सजाने-संवारने के लिए कुछ उपाय : भारत IT की दुनिया का बादशाह है। आशा और विश्वास है कि यह 2047 में नवाचार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक उच्च शिक्षित, कुशल कार्यबल एवं क्षमता के साथ अग्रणी देश के रुप में स्थापित हो चुका होगा। विज्ञान–प्रौद्योगिकी और नवाचार के सहज समुचित शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए हमें अपनी मातृभाषा/ हिंदी में काम करने में सक्षम कम्प्यूटर की प्रोग्रामिंग विकसित करनी चाहिए। साहित्येत्तर विज्ञान- प्रौद्योगिकी जैसे विषयों में उच्च-स्तरीय हिंदी किताबो का निरंतर लेखन, प्रकाशन एवं प्रसारण करना होगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 348 (1) (अ) में स्पष्ट निर्देश है कि सुप्रीम कोर्ट व हाईकोर्ट की समस्त कार्यवाही अंग्रेजी भाषा में होगी। इसमें संशोधन करके अनुच्छेद 120 की तर्ज पर हिंदी को अंग्रेजी के साथ वैकल्पिक भाषा के रूप में संयोजित किया जाना चाहिए। अंग्रेजी की तरह हिंदी में ऑटो-स्पेलचेक सॉफ्टवेयर बनाया जाए जो हिंदी की स्पेलिंग जांचने एवं शब्दकोश समृद्ध करने में मदद करे। **उपसंहार :** निष्कर्षतः 2047 की हिंदी का चेहरा अनूदित एवं आंचलिक भाषाओं के अलावा वैश्विक खिचड़ी भाषा के रूप में विकसित हो सकता है जिसमें समस्त भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों के अलावा अंग्रेजी के शब्द सहज समाहित होंगे। चर्चा है कि हिंदी भाषा का स्वरूप बदल जायेगा। हिंग्रेजी/ हिंग्लिश के दौर में हिंदी शब्दों का अस्तित्व खत्म हो जायेगा। पर यथार्थ का दूसरा पहलू यह भी है कि आज ई-बुक्स आ गई है। किताबें CD के रूप में, आवाज में रिकार्ड हो रहीं हैं। मोबाइल कम्प्यूटर पर वॉयस टाइपिंग, तत्काल अनुवाद की सहज सुविधाओं का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है जिसके फलस्वरुप जन-संचार, सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी देश-दुनिया के कोने-कोने पहुंच रही है प्रिंट-मीडिया कम्पनी DB कॉर्प्स के अनुसार सोशल मीडिया, इंटरनेट पर स्थानीय भाषाओं के उपयोगकर्त्ताओं में प्रतिवर्ष 47% की वृद्धि हो रही है। देश में प्रतिवर्ष बनने वाली 3 हजार से अधिक फिल्मों में सर्वाधिक फिल्में भी हिंदी भाषा में बनती हैं। वस्तुतः हिंदी के शब्द खत्म होने की बात ही नहीं है, हिंदी कभी खत्म नहीं होगी, हाँ कलम की जगह कम्प्यूटर ने ले ली है। डिजिटल हिंदी में इजाफा होगा पर लिखित साहित्य में शब्द की सत्ता हमेशा रहेगी। आने वाले समय में वही भाषाएं जीवित रहेगी जो बाजार की भाषाएं होगी। इस कसौटी पर दुनिया के सबसे बड़े बाजार 'यंग-इंडिया' की संपर्क भाषा हिंदी का भविष्य उज्जवल है और उज्जवल ही रहेगा बशर्ते हम 140 करोड़ देशवासी मानसिक गुलामी से ऊपर उठते हुए सर्वांगीण रुप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में संकल्प करें कि "हिंदी न सिर्फ भाषा, हिंदी हर हिंद वाला। कन्याकुमारी कश्मीर गुजरात असम वाला, सब हिंदिये हैं मिलके हम हिंद को सजायेंगे, दुनिया मे हिंद वाले हम हिंदी बनके छायेंगे।"

डुआर्स की एक अनोखी यात्रा...

डॉ.आरती पाल एवं अतिन पॉल, आरआरएससी, कोलकाता

इस वसंत में हम पहाड़ी ढलानों, दूर-दूर तक फैले हरे-भरे चाय के बागानों, चांदी जैसी पहाड़ी नदियों और ऊंचे साल के जंगलों से होकर यात्रा पर निकले। यह आकर्षक गंतव्य, 'डुआर्स', पश्चिम बंगाल में पूर्वी हिमालय की तलहटी में स्थित है। डुआर्स का अर्थ है दरवाजा, जो भारत से भूटान के लिये एक प्रवेश द्वार है। यह संकोश नदी द्वारा दो भागों में विभाजित है - पूर्वी डुआर्स और पश्चिमी डुआर्स। पश्चिमी डुआर्स में गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान और चपरामारी वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं, जबकि पूर्वी डुआर्स में जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान, चिलापाता वन और बक्सा टाइगर रिजर्व शामिल हैं।

बक्सा टाइगर रिजर्व

हमारी पहली मंजिल डुआर्स की रानी जयंती थी। बक्सा जंगल के बगल में स्थित इस छोटे से गाँव का नाम जयंती नदी के नाम पर रखा गया है। जयंती नदी के किनारे का अत्यधिक मनमोहक दृश्य निकट और दूर-दूर से कई पर्यटकों को आकर्षित करता है। जयंती की यात्रा अपने आप में रोमांचक थी। खाली सड़क के दोनों ओर घने जंगलों के साथ, हमें वास्तव में ऐसा महसूस हुआ जैसे हम एक सफारी पर थे। हमें जंगल की शांति में पशु-पक्षियों की आवाजें भी सुनाई दीं। जयंती नदी का तल चट्टानों के एक विशाल गीले रेगिस्तान जैसा था जो क्षितिज पर हरे पहाड़ों के साथ मिश्रित होकर समाप्त हो रहा था। हम लोग शाम को वहाँ टहलने गये, नदी पैदल ही पार की जा सकती थी। यह खाली नदीतल मानसून के मौसम में पानी से भर जाता है। अगली सुबह हम नदी के किनारे स्थित भूटान के सीमावर्ती पहाड़ों पर छोटा महाकाल धाम दर्शन करने गए। यह एक शानदार झरने के बगल में, प्रकृति के बीच एक प्यारा सा आध्यात्मिक स्थान था। हमने भगवान शिव की पूजा की, और चूंकि उस दिन होली थी, इसलिए हमने वहां गुलाल भी खेला। दोपहर में, हमने जयंती नदी में स्नान किया, और, एक स्वादिष्ट भोजन के बाद बाकी दिन हम होटल में बिताए।

जयंती नदीतल

अगले दिन हम जलदापारा गए, और हमारा कमरा वहां "अरण्य टूरिज़्म प्रॉपर्टी" के लकड़ी के ब्लॉक में था। अपने विशाल कमरे में थोड़ा आराम करने के बाद (जो एक बार बालकनी पर बंदरों द्वारा बाधित किया गया था), हम आस-पास के स्थानों का पता लगाने के लिए गए। अगले दिन, हम जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान में जंगल सफारी करने के लिए जल्दी उठे। हमने पहले ही तय कर लिया था कि अगर इस सफ़ारी में दूर से भी गैंडा मिल गया तो हमारी यात्रा सफल हो जायेगी। और मौका हमारे काम आया जब हमने एक गैंडा और एक सांभर हिरण को एक जलधारा में पानी पीते देखा। हमने हाथियों के कुछ बच्चे भी देखे जिन्हें उनके झुंड ने छोड़ दिया था और बाद में उन्हें मनुष्यों ने ढूंढकर पालतू बना लिया। हमने बड़ी संख्या में मोर देखे, और हमारी सफारी के मुख्य बिंदु पर हमें कुछ बाइसन भी मिले। वापस जाते समय, हमने होलोंग बंगले का दौरा किया, और कुछ भौंकने वाले हिरण और जंगली सूअर देखे। हमारे ड्राइवर ने चलती गाड़ी से ही एक छिपा हुआ हॉर्नबिल देखा। कुल मिलाकर, सफ़ारी का परिणाम संतोषजनक से अधिक था।

तोर्सा नदी

इसके बाद, हम मूर्ति की ओर बढ़े, जहां हमारा रिसॉर्ट बहुत बड़ा था, जिसमें 3 पार्क और कई कॉटेज थे। रिज़ॉर्ट में वातावरण लगभग पूरी तरह से प्राकृतिक और बेहद शांतिपूर्ण था, इसलिए हमने बाकी दिन का अधिकांश समय वहीं बिताया। दोपहर के समय, हम मूर्ति नदी के किनारे टहलने गए। लगभग 8:00 बजे, हमने रिसॉर्ट में अलाव के साथ एक शानदार आदिवासी नृत्य का आनंद लिया। कुल मिलाकर दिन आनंदपूर्वक बीता।

अगली सुबह, हमने मूर्ति नदी के ठंडे पानी में स्नान किया और धूपझोड़ा हाथी शिविर में चले गए। यह स्थान असली पेड़ पर बने ट्री हाउस के कारण प्रसिद्ध था। यह मूल रूप से एक मैदान पर बने स्टिल्ट हाउसों का संग्रह था, जिसके एक तरफ गोरूमारा जंगल था, दूसरी तरफ सड़क थी और बाकी दो तरफ चाय के बागान थे। हमें यह जगह वाकई पसंद आयी। शिविर के ठीक बगल में एक विशाल आश्रय स्थल में कुछ हाथी दिन-रात भोजन कर रहे थे। उनमें से एक ने विशेष रूप से हमारी नज़र खींची, क्योंकि वह खाने से पहले भूसे का उपयोग करके खुद को खुजला रहा था ! दोपहर के करीब, हम चाय बागानों में घूमने गए और एक हाथी को नहाते हुए देखा। रात में, सोने से पहले, खबर आई कि एक जंगली हाथी चाय के बागानों में घूम रहा है, और हम चाँद की रोशनी में उसकी एक झलक पाने की उम्मीद में व्यर्थ ही जागते रहे। आख़िरकार, स्थिति की बेरुखी का एहसास होने पर हम सो गए।

अगली सुबह गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान में हमारी हाथी सफ़ारी थी। इसकी शुरुआत अच्छी रही। यात्रा शुरू करने के तुरंत बाद हमें कुछ मोर और बाइसन दिखाई दिए। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, हमें पता चला कि मोर ही एकमात्र ऐसे प्राणी थे जिन्हें सफारी पथ के पास देखा गया था। जैसा कि हम जानते थे, बेचारे हाथी को केवल सूखी पत्तियाँ और घास-फूस खिलाया जाता था। अब उसे ताज़ी पत्तियाँ मिल रही थीं, और वह कुछ खाने की कोशिश कर रही थी। सफ़ारी के दौरान हमने मूर्ति नदी को पार किया, और अंत में, एक शर्मीला छोटा भौंकने वाला हिरण देखा जो हमें देखकर तुरंत भाग गया। पूरे घने जंगल में, हमने हाथी की सवारी का आनंद लिया।

गोरुमारा जंगल के अंदर मूर्ति नदी

अपनी सफारी के बाद, हमने डुआर्स के सात प्रसिद्ध स्थानों, जैसे झालोंग, बिंदू, मूर्ति, सैमसिंग चाय बागान, रॉकी द्वीप, सुनतालेखोला और लालीगुलास दृश्य बिंदु पर ले जाने के लिए एक गाड़ी बुक की। हमारी योजना थी कि पहले सबसे ऊँचे और सुदूर स्थान 'बिंदु' पर जाएँ और फिर एक-एक करके अन्य स्थानों को देखते हुए पहाड़ से नीचे आएँ। बिंदु पर, एक बांध था, और वहां हमने जलढाका नदी के बांध के किनारे के अद्भुत दृश्य का आनंद लिया। फिर हमने नीचे की ओर अपनी यात्रा शुरू की। हम झालोंग और लालीगुलास दृश्य बिंदु पर गए, जहां हमने क्रमशः जलढाका नदी का शानदार दृश्य और पहाड़ों का सुंदर दृश्य देखा। रास्ते में, हमने एप्पल स्टोन होटल में दोपहर का भोजन किया, जिसका नाम इसके ठीक पास स्थित विशाल सेब के आकार के पत्थर के नाम पर रखा गया है। सुन्तालेखोला में, हमें प्रसिद्ध हैंगिंग ब्रिज तक पहुँचने के लिए नेओरा वैली नेशनल पार्क के जंगलों से होकर लगभग एक किलोमीटर पैदल चलना पड़ा। यह एक वैध पुल था जो केवल कई मोटी रस्सियों से लटका हुआ था। पुल नाजुक था और इस पर एक समय में केवल 6 लोगों को ही चढ़ने की अनुमति थी।

जलढाका नदी

इसके बाद हम पास ही रॉकी आइलैंड गए, जो मूर्ति नदी पर एक खूबसूरत जगह थी। यह वास्तव में एक द्वीप नहीं था, लेकिन समय बिताने के लिए यह एक सुंदर जगह थी। रॉकी द्वीप पर आनंद लेने के बाद, हम सैमसिंग चाय बागान के लिए रवाना हो गए। वहां हमने कुछ पल बिताए और फिर सिलीगुड़ी के लिए निकल पड़े। हम रास्ते में केवल एक बार शानदार 'गाजोल डोबा' बांध देखने और वहां के विशेष झींगा फ्राइज़ खाने के लिए रुके थे। इस स्थान पर सूर्यास्त के मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्य के साथ हमारी यात्रा समाप्त हुई। आख़िरकार, हम बस पकड़ने के लिए अपने गंतव्य पर पहुँचे, और सुरक्षित और स्वस्थ घर पहुँच गए।

व्यक्तिगत उपलब्धियां

मास्टर आर्यन राज रेड्डी, सुपुत्र श्री राम राज रेड्डी को हिंदी ओलंपियाड फाउंडेशन,नई दिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड में रजत पदक जीतने पर संपादक मंडल की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

होली के रंग - आओ, दीप जलाएं

आशीष कुमार शर्मा, आरआरएससी, नागपुर

होली के रंग

मुझ पर इस बार प्यार का रंग ही छिड़कना
बाकी रंग तो मैंने बहुत लगा के देख लिए
मुझे आज प्यार से है नहाना
पानी से भाई हम बहुत नहा लिए...

बाकी रंग तो बहुत जल्द छूट जाते हैं
यह प्यार का रंग बहुत चलता है
सारे रंग इस के आगे हार जाते हैं
इतनी आसानी से यह क्या मिटता है?

तो,इस होली, बाल्टी में प्यार मिलाना मत भूलना
हवाओं में गुलाल के साथ मिठास घोलना मत भूलना
एक साल लगेगा इसे फिर आने में
किसी भी एक बेरंग जीवन में ख़ुशी के रंग डालना मत भूलना.

आओ, दीप जलाएं

आओ, बहुत सारे दीप जलाएं
अन्दर-बाहर के अंधियारों को मिटायें
खुद महकें, औरों को महकाएं,
चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ फैलाएं,
आओ, बहुत सारे दीप जलाएं...

चलो, इस दीवाली अंधकार को हराएँ
हवाओं में खुशबू घोलें, जहर से इसे बचाएं,
अमन-चैन को हवा दें, नफरत की आग बुझायें
आओ, बहुत सारे दीप जलाएं...

जब जलेगा दीप अन्दर का और बाहर का
तब दीवाली असली दीवाली होगी
"तमसो म ज्योतिर्गमय" तभी चरितार्थ होगा
जब हर जगह रौशनी ही रौशनी होगी।

देश के वैज्ञानिकों के नाम-शुभ संदेश

विजयलक्ष्मी जांगिड़, बहन संदीप जांगिड़, एनआरएससी, हैदराबाद

भारत तुम्हें प्रणाम करता है

अपने ज्ञान के बल पर तुमने, फिर दुनिया को दिखलाया ।
चंद्रयान को चंद्र धरा पर, अपनी प्रतिभा से पहुंचाया ।
रुके नहीं, अगणित बाधाएं ...जीती ,साहस दिखलाया ।
23 अगस्त 2023 में इसरो कदम चाँद पर धरता है ।
ज्ञान ही हर युग में साथी, युग-युग की चाल बदलता है ।

याद हमें है वो दिन, जब भारत में *शून्य* डोला था ।
याद हमें है वो दिन, जब भारत ने *वेद* बोला था ।
सदियों की लम्बी यात्रा में गूढ़ *रहस्यों* को खोला था ।
विवश होकर तब दुनिया ने जय *विश्व गुरु* की बोला था ।
ये *विजय* नहीं भौतिकता की जयगान , *भरतमहि* का है ।

आँखें खोल कर दुनिया देखे, ये भारत *नई सदी* का है ।
साईकल पर सपने लेकर, जब कोई *कलाम* चलता है ।
तब *गुदड़ी का लाल* कोई, भारत की *तकदीर* बदलता है ।
माँ भारती के सच्चे सपूतों, भारत तुम्हे *प्रणाम* करता है ।

कलाकृति

कु. टी. ज्ञान निधि
सुपुत्री, श्रीमती स्वप्न रानी

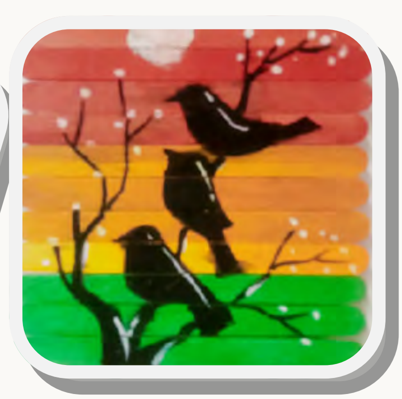

मनुष्य तू बड़ा महान

सुब्बलक्ष्मी एस, एनआरएससी, हैदराबाद

हे मानव तुझमें है बड़ी शक्ति
अपने महानता पर हो, हृदय से गर्व
मनुष्य तू बड़ा महान है ।
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान ।
धरती की शान तू है, प्रभु की सन्तान ।
मनुष्य तू बड़ा महान है,
भूल मत, मनुष्य तू बड़ा महान है ।

निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे।
भूल मत मनुष्य, तू महान है रे।

पृथ्वी का लाल तू है,
धरती सा धीर, अग्नि सा वीर
तू जो चाहे ताल को भी याम ले
तू जो अगर हिम्मत से काम ले ।
गुरु सा मतिमान
पवन सा गतिमान
तेरी नभ से ऊँची उड़ान
मनुष्य तू बड़ा महान है ।

हे मानव तूने किए हैं
कितने महान कार्य,
तू चाँद पर गया, अंतरिक्ष में गया
चाँद पर पी एस एल वी को भेजा ।
चंद्रयान को भेजा
और विश्व में है बड़ा नाम कमाया ।
मनुष्य तू बड़ा महान है ।

तू चलाता है ट्रेन, विमान
और हेलीकॉफ्टर आदि
तुझमें निडरता है,
बड़ा ही हिम्मतवाला ।
अपनी जान की भी परवाह किए बिना
पुलिस के रूप में लोगों की रक्षा
प्रधानमंत्री के रूप में देश का परिपालन।
राष्ट्रपति, जो है एक मानव
एक गवर्नर और मंत्री है
एक मानव कलेक्टर है
एक मानव डाक्टर है
एक मानव जो लोगों के प्राणों की रक्षा करे
एक मानव ही तो है, जो अग्नि को भी
रोकता है ।
बाढ़ आने पर, लोगों की रक्षा करे
एक सिपाही, जवान और सैनिक है
जो युद्ध भूमि में कूदकर, अपनी जान की
परवाह किए बिना
लोगों के प्राणों की रक्षा करे ।
हे मानव तुझको है सलाम
तू है बड़ा महान ।

हे मनुष्य तेरे हैं कई अवतार
एक अध्यापक, जो लोगों को पढ़ाकर कुछ
काबिल है बनाता।
एक गायक, एक नर्तक, जो लोगों का दिल
बहलाता और मुनोरंजन है करता।
एक लॉयर और एक न्यायाधीश
जो लोगों को है न्याय दिलाता ।
एक इंजीनियर, जो विश्व संपदा का निर्माण
करता

एक किसान, जो अन्न उगाता और
लोगों का पेट है भरता ।
एक सफाईवाला, जो सफाई कर लोगों
के स्वास्थ्य की रक्षा है करता ।
हे मनुष्य तू बड़ा महान ।

हे मानव तू कभी कार्पेंटर
तो कभी प्लंबर
कभी टेक्निशियन,
तो कभी इलैक्ट्रिशियन
एक अफसर, तो एक निदेशक
एक सहायक, सहायक निदेशक
एक वेटर तो एक पेंटर
आदि है कई अवतार
मनुष्य तू बड़ा महान ।
मानव तूने किये हैं, कई अविष्कार,
मैड़म क्यूरी ने रेडियम, ग्राहम बेल ने
टेलीफोन और रंटजन ने एक्सरे ।
कोलंबस ने किया अमरीका की खोज।
सेलफोन का अविष्कार, इंटरनेट का
प्रयोग।
नोटों की आपाधापी से चलती है दुनिया
नोटो के बिना जीना है दुश्वार
हे मानव, तू बड़ा महान ।

व्यक्तिगत उपलब्धियां

सुश्री एन. अनन्या, सुपुत्री एन. अशोक कुमार को माध्यमिक परीक्षा में हिंदी विषय में 93 % अंक प्राप्त करने पर संपादक मंडल की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

पिता का आशीर्वाद -विश्वास बड़ी चीज है

शंभू सिंह टाक ,आरआरएससी, जोधपुर

संसार में जिसने जन्म लिया है उसे एक न एक दिन तो जाना ही होता है। जब मृत्यु का समय निकट आया तो पिता ने अपने इकलौते पुत्र सत्यपाल को बुलाकर कहा कि "बेटा मेरे पास धन-संपत्ति तो नहीं है, मैंने जो भी कमाया है, वह सच्चाई और प्रमाणिकता से कमाया है। मैं तुम्हें आशीर्वाद के अलावा और कुछ नहीं दे सकता हूं। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम अपने जीवन में बहुत सुखी रहोगे और धूल को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जाएगी।"

पुत्र सत्यपाल ने सिर झुकाकर पिताजी के पैर छुए, पिताजी ने सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया और संतोष से अपने प्राण त्याग दिए।

अब घर का सारा खर्च बेटे सत्यपाल को संभालना था। उसने एक छोटी सी ठेला गाड़ी पर अपना व्यापार शुरु किया। धीरे-धीरे व्यापार बढ़ने लगा, फिर उससे उसने एक छोटी सी दुकान खरीद ली। व्यापार बहुत तेजी से बढ़ने लगा, अब तो नगर के संपन्न लोगों में उसकी गिनती होने लगी। उसको विश्वास था कि यह सब मेरे पिताजी के आशीर्वाद का ही फल है क्योंकि उन्होंने जीवन में जो भी दुख उठाया पर कभी अपना धैर्य नहीं छोड़ा, श्रद्धा नहीं छोड़ी, इसलिए उनकी वाणी में विश्वास और बल था और उनका आशीर्वाद फलीभूत हुआ और मैं सुखी हुआ। उसके मुँह से बार-बार यह बात निकलती रहती थी।

एक दिन उसके एक मित्र ने पूछा, "तुम्हारे पिताजी में इतना बल था तो वह स्वयं संपन्न क्यों नहीं हुए ?" सत्यपाल ने कहा "मैं पताजी की ताकत की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं तो उनके आशीर्वाद की ताकत की बात कर रहा हूँ।"

इस प्रकार वह बार-बार अपने पिताजी के आशीर्वाद की बात करता तो लोगों ने उसका नाम ही रख दिया "पिता का आशीर्वाद"। ऐसा करते हुए कई साल बीत गए। अब वह विदेशों में भी व्यापार करने लगा। वह जहाँ भी व्यापार करता उसे बहुत लाभ होता। एक बार उसके मन में आया कि मुझे हर बार लाभ ही लाभ होता है तो मैं एक बार नुकसान का भी अनुभव करुँ। तो उसने अपने एक मित्र से पूछा कि "ऐसा व्यापार बताओ कि जिसमें मुझे नुकसान होवे"। मित्र को लगा कि इसको अपनी सफलता और पिता के आशीर्वाद पर इतना विश्वास है और पैसों का घमंड हो गया है। इसका घमंड दूर करने के लिये इसको ऐसा धंधा बतलाऊँगा कि इसको नुकसान ही नुकसान हो।

उसके मित्र ने उसको बताया कि , "तुम भारत में लौंग खरीदो और जहाज में भरकर अफ्रीका के जंजीबार में जाकर बेच आओ"। सत्यपाल को यह बात ठीक लगी। जंजीबार तो लौंग का देश है, वहाँ से लौंग भारत में लाते हैं और यहाँ 8-10 गुना ज्यादा भाव में बेचते हैं।

सत्यपाल ने तय किया कि मैं भारत में लौंग खरीदकर जंजीबार खुद लेकर जाऊंगा। देखूँ कि पिताजी का आशीर्वाद कितना साथ देता है। नुकसान का अनुभव करने के लिए उसने भारत में लौंग खरीदे और जहाज में भरकर खुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुँचा।

सत्यपाल जहाज से उतर कर वहाँ के व्यापारियों से मिलने के लिए लंबे रेतीले रास्ते पर जा रहा था। उसे सामने से सुल्तान जैसा व्यक्ति पैदल सिपाहियों के साथ आता हुआ दिखाई दिया। उसने किसी से पूछा कि, "यह कौन है? उन्होंने कहा कि "यह यहाँ के सुल्तान हैं।"

सुल्तान ने उसको सामने देखकर उसका परिचय पूछा। उसने कहा "मैं भारत के मारवाड़ राज्य का व्यापारी हूँ और यहाँ पर व्यापार करने आया हूँ। सुल्तान ने उसका आदर किया और उससे बात करने लगा।

सत्यपाल ने देखा कि सुल्तान के साथ सैंकड़ों सिपाही हैं, परंतु बिना हथियार के, परंतु उनके हाथों में बड़ी-बड़ी छलनियां हैं। उसको आश्चर्य हुआ उसने विनम्रतापूर्वक सुल्तान से पूछा "आपके सैनिक छलनियां लेकर क्यों जा रहे हैं ? सुल्तान ने हंसकर कहा, "बात यह है कि आज सुबह मैं समुद्र तट पर घूमने आया था, तब मेरी उंगली में से एक अंगूठी यहीं कहीं निकल कर गिर गई, अब रेत में अंगूठी कहाँ गिरी पता नहीं, इसलिये सैनिकों से रेत छनवा रहा हूँ ताकि वे मेरी अंगूठी की तलाश कर सके।"

सत्यपाल ने कहा "अंगूठी बहुत महंगी होगी"। सुल्तान ने कहा "नहीं" उससे बहुत अधिक कीमती अनगिनत अगूंठियां मेरे पास हैं पर वह अंगूठी एक फकीर का आशीर्वाद है। मैं मानता हूँ कि मेरी सल्तनत इतनी मजबूत और सुखी उन फकीर के आशीर्वाद से है। इसलिए मेरे मन में उस अंगूठी का मूल्य सल्तनत से भी ज्यादा है।"

इतना कह कर सुल्तान ने फिर पूछा "बोलो सेठ आप क्या माल लेकर आए हो ?"सत्यपाल ने कहा कि "लौंग"। सुल्तान के आशचर्य का ठिकाना नहीं रहा, " यह तो लौंग का ही देश है सेठ, यहाँ लौंग बेचने आए हो? किसने आपको ऐसी सलाह दी, कोई आपका दुश्मन होगा यहाँ तो एक पैसे में मुट्ठी भर लौंग मिलते हैं। यहाँ कौन आपसे लौंग खरीदेगा और तुम क्या कमाओगे?

सत्यपाल ने कहा "मुझे यही देखना है कि यहाँ भी मुनाफा होता है या नहीं। मेरे पिताजी के आशीर्वाद से आज तक मैंने जो कोई धंधा किया उसमें मुनाफा ही मुनाफा हुआ, तो अब मैं देखना चाहता हूँ कि उनका आशीर्वाद यहाँ भी चलता है या नहीं।"
सुल्तान ने पूछा, " पिताजी का आशीर्वाद ! इसका क्या मतलब ?

सत्यपाल ने पूछा, " मेरे पिताजी सारा जीवन ईमानदारी और प्रमाणिकता से काम करते रहे परंतु धन नहीं कमा सके। उन्होंने मरते समय मुझे भगवान का नाम लेकर मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया था कि तेरे हाथ में धूल भी सोना बन जाएगी।" ऐसा बोलते-बोलते सत्यपाल नीचे झुका और जमीन की रेत से एक मुट्ठी भरी और सुल्तान के सामने मुट्ठी खोलकर उंगलियों के बीच में से रेत नीचे गिराई तो सत्यपाल और सुल्तान दोनों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसके हाथ में एक अंगूठी थी।

यह सुल्तान की वही गुम हुई अंगूठी थी। अंगूठी देखकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हो गये, बोले, "वाह! खुदा, आप की करामात का पार नहीं। आप पिता के आशीर्वाद को सच्चा करते हो। " सत्यपाल से सुल्तान बहुत खुश हुए। सत्यपाल को गले लगाया और कहा, "मांगो सेठ, आज जो मांगोगे मैं दूँगा। " सत्यपाल ने कहा " आप लंबी उम्र तक जीवित रहें और प्रजा का अच्छी तरह से पालन करते रहें इसके अलावा मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

सुल्तान और अधिक प्रसन्न हो गया। उन्होंने कहा, " सेठ आपका सारा माल आज मैं खरीदता हूँ और आपको मुँह मांगी कीमत दूँगा।" और इस तरह उसके पिता के आशीर्वाद ने सत्यपाल को वहाँ भी असफल नहीं होने दिया।
यह एक अखण्डनीय सत्य है कि – माता-पिता के आशीर्वाद में असीम शक्ति होती है तथा उनके आशीर्वाद जैसी कोई संपत्ति नहीं होती। उनकी सेवा में गुजारा हर पल, अवश्य फलदायी होता है। अपने बुजुर्गों का सम्मान करने में ही भगवान की सबसे बड़ी सेवा है।

कलाकृति

कु. आइज़ा
सुपुत्री श्री बी महबूब बाशा

स्ट्रोक का साक्षी:
अपने प्रियजनों की जान बचाने का आह्वान

सोनू सिंह तोमर,एनआरएससी, हैदराबाद

मुझे अच्छी तरह याद है 13 मार्च 2022 रविवार का दिन... जब हमलोग पूरे परिवार के साथ सप्ताहांत मना रहे थे और अचानाक पिताजी की तबियत.... पिताजी शुक्रवार को ही हमारे मूल स्थान शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) से हैदराबाद आए थे। इस सप्ताहांत में हमलोग मिल-बैठकर साथ बिताने वाले थे। सुबह में मैं और मेरी पत्नी प्रतिभा ने मिलकर नाश्ते में सांभर और डोसा बनाये थे। हम सबने पापा के साथ नाश्ता किया। पापा को डोसा बहुत ही पसंद आया और खाते-खाते हमने शाम को मॉल घूमने का भी प्लान बना लिया था। नाश्ते के बाद पिताजी हमेशा की तरह अपने कमरे में चले गए। दोपहर लगभग 1:00 बजे के आस-पास मेरी बहन ने पापा से दोपहर का भोजन खाने के लिए पूछा। उन्होंने संकेत दिया कि उन्हें अभी भूख नहीं लगी है। हमें भी लगा कि शायद वे पेट-भर नाश्ता किये हैं, इसलिए उन्हें अभी भूख नहीं लगी होगी और थोड़ी देर से खा लेंगे। यह सोचकर हमने उनके बिना ही भोजन कर लिया। यह एक साधारण सा खुशनुमा दिन था, कुछ भी असामान्य नहीं था।

प्रतिभा कुछ समय बाद (लगभग 3 बजे) पापा से फिर से खाने के लिए पूछने गई। जब प्रतिभा ने पापा को पुकारा, तो उन्होंने सामान्य रूप से उत्तर नहीं दिया। उनकी बोली अस्पष्ट थी, उनका दाहिना हिस्सा सुन्न लग रहा था, और वे उठ भी नहीं पा रहे थे। प्रतिभा ने तुरंत मुझे बुलाया। मैं यह सोचते हुए कि पापा की तबियत तो ठीक थी सुबह, अब अचानक से क्या हुआ, तेजी से पापा के कमरे में देखने गया। मैं देखा कि उन्होंने अनैच्छिक रूप से पेशाब बिस्तर पर ही कर दिए हैं। ऐसा लगा रहा था कि वे अपने शरीर पर नियंत्रण खोते जा रहे हैं। उन्हें बोलने में संघर्ष करते हुए देखना, उनके शरीर का साथ नहीं देना, और साथ में ही वे कुछ भी बता नहीं पा रहे थे। शायद उन्हें भी नहीं समझ आ रहा था, कि उनके साथ क्या हो रहा है। यह कुछ ऐसा था जिसे मैंने भी पहले कभी नहीं देखा था। मैं सदमे में था और बहुत डरा हुआ भी था।

हमारे क्षेत्र में, हम इस तरह के लक्षणों को "फालिज मारना" भी कहते हैं, जिसे मोटे तौर पर लकवा भी कहा जाता है। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि उनके साथ क्या हुआ है। मुझे यह भी नहीं पता था कि यह वास्तव में स्ट्रोक (stroke) हो सकता है। मैं स्ट्रोक के लक्षणों और उसके तुरंत उपचार की आवश्यकता के बारे में भी नहीं जानता था। ये कुछ ऐसा था जिसे मैंने पहली बार देखा था। घबराहट में, मैंने जल्दी से गूगल (इन्टरनेट) पर उन लक्षणों की खोज की, जिन्हें मैं देख पा रहा था। गूगल सर्च ने इन लक्षणों (जैसे चेहरे का एक तरफ झुकना, एक हाथ और पैर की कमजोरी और बोलने में कठिनाई) को परख कर स्ट्रोक की ओर इशारा किया।

इस बीच, मेरे पिता की स्थिति और बिगड़ती जा रही थी। उनकी हालत बिगड़ती देख, और अब वो बैठ और खड़े भी नहीं हो पा रहे थे, उन्हें कार में ले जाने का विकल्प भी अब समाप्त हो चुका था । मैंने तुरंत KIMS हॉस्पिटल, कोंडापुर को कॉल किया, उन्हें फ़ोन पर लक्षणों और तत्काल मदद की आवश्यकता बताकर एम्बुलेंस भेजने के लिए बोला। एम्बुलेंस 20-30 मिनट में आ गई, और हम तेजी से KIMS अस्पताल पहुंचे। इमरजेंसी डॉक्टर का पहला सवाल महत्वपूर्ण था: "आपने उन्हें आखिरी बार ठीक (नार्मल) कब देखा था?" मुझे सटीक समय के बारे में पूरी तरह यकीन नहीं था। मैंने दोपहर के आसपास का समय अनुमानित किया, और वही डॉक्टर को बताया। मैं समझ नहीं पाया कि इमरजेंसी डॉक्टर यह जानना चाह रहे थे कि क्या इस्केमिक (ischemic) स्ट्रोक के लिए एक विशिष्ट फर्स्ट ऐड लाइफ सेविंग उपचार किया जा सकता है? सटीक समय, इमरजेंसी डॉक्टर के लिए उपचार का निर्णय लेने में बहुत महत्वपूर्ण था।

बाद में मुझे पता चला कि "क्लॉट-बस्टिंग" दवा जिसे थ्रॉम्बोलिसिस कहा जाता है, इसे इस्केमिक स्ट्रोक के तीन घंटे के भीतर दिया जा सकता है। हालांकि, क्योंकि मैं सटीक समय नहीं बता सका और सवाल के महत्व को मैं पूरी तरह से नहीं समझ सका, इमरजेंसी डॉक्टरों ने मष्तिष्क का एमआरआई (MRI) किया और फिर बिना "क्लॉट-बस्टिंग" दवा दिए, नियमित स्ट्रोक उपचार शुरू किया।

मेरे पिता चार दिन आईसीयू में रहे और कुल मिलाकर ग्यारह दिन अस्पताल में रहे। उन्होंने छह महीने की फिजियोथेरेपी भी की। वे बच गए, लेकिन स्ट्रोक अपनी छाप छोड़ चुका था। उनके शरीर का दाहिना हिस्सा अभी भी कमजोर है, और वो अभी भी स्पष्ट नहीं बोल पाते हैं। उनके मस्तिष्क का बायां हिस्सा, जो स्ट्रोक से प्रभावित हुआ था, उसने उनके दाहिने हिस्से में लकवा और उनके बोलने और लिखने की क्षमता को बाधित कर दिया है।

जागरूकता का महत्व: मैं कोई डॉक्टर नहीं हूं। मैं सिर्फ एक व्यक्ति हूँ जिसने इस भयावह अनुभव को जिया है। मैं वह व्यक्ति हूँ जिसे सही समय पर स्ट्रोक और इसके लक्षणों के बारे में पर्याप्त जानकारी न होने का अफसोस अभी तक है। पीछे मुड़कर देखने पर मुझे एहसास होता है कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि हर कोई यह समझे कि स्ट्रोक कैसा दिखता है और जब ऐसा होता है, तो क्या करना चाहिए।

स्कूलों और कॉलेजों में हमें बहुत सी चीजें सिखाई जाती हैं, लेकिन जीवन रक्षक जानकारी जैसे- स्ट्रोक जागरूकता को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। अगर मुझे समय की महत्वपूर्णता और लक्षणों की पहचान के महत्व के बारे में पता होता, तो मेरे पिता का इलाज शायद थोड़ा अलग और जल्दी हो सकता था। उन महत्वपूर्ण क्षणों में हर मिनट, हर सेकंड कीमती है। यदि मैं बेहतर रूप से सूचित होता, तो शायद मैंने इसे तुरंत पहचान लिया होता और कुछ समय बचा लिया होता। स्ट्रोक में हर सेकंड महत्वपूर्ण होता है।

स्ट्रोक के बारे में तथ्य

ग्लोबल बर्डन ऑफ डिज़ीज़ (GBD) के अनुसार, भारत में स्ट्रोक का सबसे अधिक बोझ है। भारत में हर साल लगभग 1,85,000 स्ट्रोक केस होते हैं, जो लगभग हर 40 सेकंड में एक स्ट्रोक के बराबर है। भारत में लगभग हर 4 मिनट में एक व्यक्ति की मौत स्ट्रोक से होती है। मस्तिष्क स्ट्रोक तब होता है जब मस्तिष्क में रक्त की आपूर्ति बंद हो जाती है। स्ट्रोक के दो प्रकार – इस्केमिक (ischemic) स्ट्रोक (खून के थक्के के कारण) और हेमोरेजिक (hemorrhagic) स्ट्रोक (रक्त वाहिकाओं के फटने के कारण) होते हैं।

एक सर्वेक्षण जिसका शीर्षक "द स्टेट ऑफ स्ट्रोक: ऐ सर्वे ऑन अवेयरनेस अबाउट स्ट्रोक इन अर्बन इंडिया," 12 शहरों में 4,742 लोगों के सैंपल के साथ किया गया, जिसमें खुलासा हुआ कि केवल 22% उत्तरदाताओं को मस्तिष्क स्ट्रोक के जोखिम कारकों और लक्षणों के बारे में जानकारी थी। साथ ही उपचार विकल्पों के बारे में जागरूकता स्तर तो केवल 10% ही था। सर्वेक्षण से पता चला कि 85% से अधिक स्ट्रोक रोगियों को लक्षणों के बारे में जानकारी नहीं थी, जो कि चिंताजनक विषय है। भारत में मस्तिष्क स्ट्रोक, कोरोनरी आर्टरी डिजीज (CAD) के बाद मौत का दूसरा सबसे आम कारण है। सर्वेक्षण के अनुसार, स्ट्रोक के मामलों में वृद्धि का एक प्रमुख कारण इसके रोकथाम और उपचार के बारे में जागरूकता की कमी है।

एक कार्रवाई की पुकार (कॉल टू एक्शन): यह कहानी सिर्फ मेरे पिता के स्ट्रोक के बारे में नहीं है। यह एक याद दिलाने वाली सीख है कि जागरूकता जीवन बचा सकती है। हम सभी को स्ट्रोक के लक्षण जानने की जरूरत है - FAST (Face drooping, Arm weakness, Speech difficulty, and Time to call emergency services) फास्ट (चेहरे का झुकना, हाथ की कमजोरी, बोलने में कठिनाई, और आपातकालीन सेवाओं को बुलाने का समय)। हमें इस ज्ञान को जितना हो सके उतने लोगों तक फैलाने की जरूरत है, क्योंकि यह जीवन और मृत्यु के बीच; पूर्ण रिकवरी और जीवनभर की अक्षमता के बीच का अंतर हो सकता है। फास्ट (FAST) संक्षिप्त रूप को राष्ट्रीय स्ट्रोक एसोसिएशन, अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन और अन्य द्वारा स्ट्रोक के लक्षणों का पता लगाने के लिए और जनता को शिक्षित करने के लिए उपयोग किया जाता है। अधिक जानकारी आप WSO (World Stroke Organization) / (world-stroke.org) और Indian Stroke Association (stroke-india.org) की वेबसाइटस पर पा सकते हैं।

अगर मेरा अनुभव किसी एक व्यक्ति को स्ट्रोक की पहचान करने और समय रहते कार्रवाई करने में मदद कर सके, तो इस कहानी को साझा करना मेरे लिए सार्थक साबित होगा। जागरूकता हमारी सबसे अच्छा रक्षा-कवच है, इसे फैलाकर हम जीवन बचा सकते हैं। आइए स्ट्रोक जागरूकता को सभी की प्राथमिकता बनाएं।

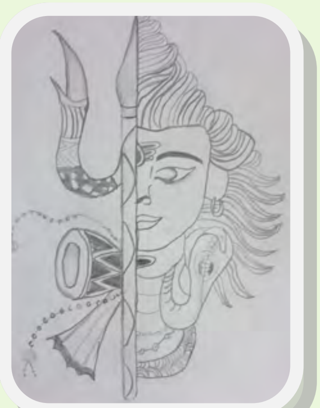

कलाकृति

कु. ऋषिक जी
पौत्र, श्रीमती के भवानी

विनम्रता और धैर्य

हरीश जी ,एनआरएससी, हैदराबाद

""जैसे एक बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर झूल रहा हो" ये शब्द 29 जनवरी को नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड से लौटते समय हवाई अड्डे की सुरक्षा पंक्ति में एक क्रोधित सहयात्री ने मेरे बारे में कहा था।

मुझे समझ में आ गया कि दोपहर 13:30 बजे हैं, यह पीक लंच ऑवर है, जहाँ भूख के कारण गुस्सा आना स्वभाविक है क्योंकि मैंने पहले भी ऐसा अनुभव किया है। संभवतः बैग खोलने और बंद करने, इलेक्ट्रॉनिक सामान, तरल पदार्थ और बेल्ट/बूट को अलग-अलग ट्रे में करते देख मेरे साथी यात्री द्वारा मेरी गति को कतार में आगे निकलने के प्रयास के रूप में ......गलत समझा, अतः उन्होंने ऐसा कहा होगा......

हालाँकि, मैंने उनके अपमानजनक शब्दों को सहन करते हुए धैर्य बनाए रखा, क्योंकि मुझे लगा कि प्रतिशोध लेने की अपेक्षा उन्हें सहन करना अधिक आसान है, क्योंकि मैं जानता था कि इससे स्थिति और भी खराब हो सकती थी।

मैंने माफ़ी मांगी, यह जानते हुए कि यह मेरी मूर्खता नहीं थी, ताकि वह शांत हो जाए। लेकिन, पारंपरिक ज्ञान यह है कि लोग अक्सर अपनी कुंठा को दूर करने और अपने दबे हुए गुस्से को बाहर निकालने के लिए कमज़ोर और नरम बोलने वाले लोगों को निशाना बनाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम दफ़्तर में अधीनस्थ कार्मिकों और घर में बच्चों को इसका शिकार होते देखते हैं। इस इन्सान को मेरा शांत व्यवहार से और भी अधिक ताकत मिल गई। परिस्थिति बदतर हो गई, क्योंकि ऐसा करने पर उसने अपनी आवाज़ इतनी ऊँची कर दी और उसकी आवाज़ सभी काउंटरों पर सुनाई देने लगी।

मैंने अपना सिर नीचे झुका लिया जैसे कि मैं भी यह सब पाने का हकदार हूँ, जैसा कि एक गुलाम अपने मालिक के सामने करता है। मुझे यकीन है कि खड़े लोगों और दर्शकों को यह धारणा मिली होगी। वास्तव में, मुझे ऐसा करना बहुत मुश्किल नहीं लगा क्योंकि मैं जानता था कि कभी-कभी अपमान का सबसे अच्छा जवाब मौन रहना होता है। हालाँकि, उसके बाद जो हुआ उसने मुझे चौंका दिया! वह तो शांत हो गया .... चेकिंग के दौरान CISF कांस्टेबल ने मेरा इसरो पहचान पत्र देखा और आश्चर्य जताया कि मैंने उस कुंठित व्यक्ति को उनके हिसाब से जवाब क्यों नहीं दिया। परंतु मैंने जवाब दिया कि हमारे संगठन में हमें सभी नागरिकों के प्रति विनम्रता और धैर्य सिखाया जाता है, इसलिए हमें किसी भी परिस्थिति में एक ईमानदार लोक सेवक बनने के लिए तैयार किया जाता है। इसलिए, मैं किसी साथी भारतीय की पीड़ा के खिलाफ अपनी आवाज नहीं उठाना चाहता, इस प्रकार मैं अपने पेशेवर नैतिकता को बनाए रखूंगा।

आस-पास के अन्य CISF कर्मियों ने धैर्य और सहनशीलता की ऐसी नैतिकता की काफी प्रशंसा की, जिसका श्रेय मैं अपने संगठन 'इसरो' को देता हूँ। सम्मान के प्रतीक के रूप में और ऐसी विनम्रता का अभिनंदन करते हुए, वे मुझे प्राथमिकता (बिजनेस/प्रथम श्रेणी) कतार में जाने देने के लिए तैयार थे। इसके बाद, उन्होंने मुझे 'इकोनॉमी' टिकट होने के बावजूद इसरो पहचान पत्र दिखाने और प्राथमिकता वाली लेन में आगे बढ़ने की सलाह दी। हालाँकि मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा, लेकिन उनकी तालियों और हाव-भाव ने मुझे गहराई से छू लिया, जिससे मुझे पुरस्कृत होने का एहसास हुआ। यह एक वास्तविक घटना है जिसमें अपमान के बाद पुरस्कार दिया गया, तथा वह भी सार्वजनिक रूप से, हालांकि पुरस्कार पहले वाले से अधिक भारी भरकम था.......

कलाकृति

मास्टर अतिन पाल
सुपुत्र श्रीमती आरती पाल

धर्म और विकास

धनंजय गो. निनावे, आरआरएससी,नागपुर

आज हमें अच्छा जीवन व्यतित करना हैं तो, हमें अच्छी शिक्षा,अच्छी वैधकीय सेवा तथा अच्छे रोजगार के अवसर या अच्छा रोजगार होना चाहिये, ताकि हम सभी अच्छा जीवन जी सकें और परिवार को समृद्ध कर सकें। अच्छी शिक्षाप्राप्त करने से व्यक्ति का अच्छा बौद्धिक स्तर रहेगा, अच्छे विचारों का आदान-प्रदान होगा, और देश कार्य के लिये अच्छे नागरिक बन सकेंगे।

परंतु, हमारे देश कि यह विडंबना है कि लोगों को धर्म, जाति-पाति के नाम से गुमराह किया जा रहा है। लोग एक दुसरे का आदर करने की बजाय नफरत करते हैं, जिससे देश बिखरता नजर आ रहा है। धर्म के नाम पर दंगा-फसाद हुआ तो सामान्य नागरिक मारा जाता है या तो गंभीर रुप से जख्मी होता हैं, जिसके कारण परिवार बर्बाद होने लगता है। बच्चों के ऊपर से उनके माता पिता का साया निकल जाता है। परिणामस्वरूप, वह परिवार बिखरनेलगता है। नेता लोग तो अपनी राजनैतिकरोटियां सेंकते हैं। राज्य सरकार भी मृत व्यक्ति को ₹ 2लाख और गम्भीर रूप से जख्मी व्यक्ति को ₹ 50 हजार का मुआवजा घोषित करती हैं, परंतु जिन्होंने अपनी जान गवाईं हैं, क्या उनके परिवार को ₹ 2 लाख रुपयों से दिलासा दिलाया जा सकता? क्या उनकी जान वापिस आ सकती है? बीच-बीच में यह नारा लगाया जाता है कि हिंदु खतरे में है, मुस्लिम खतरे में है और इस चक्कर मे सैकड़ों निरपराध लोग अपनी जान गंवा बैठते है। इससे दहशत का माहोल बना रहता है।

विकास के कई सारे मुद्दे हैं, जैसे कि स्वच्छ जल, अच्छी सड़कें, साफ-सफाई, सार्वजनिक शौचालय, ग्रंथालय, खेलकूद के लिये अच्छे मैदान, अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं,अच्छे विद्यालय, जो सभी एक समान शिक्षा प्रदान करें। सभी को अच्छे रोजगार के अवसर मिलें, जिससे व्यक्ति और उसके परिवार का विकास हो सके।

आजकल हम सभी को धर्म के नाम पर अंधा बनाया जाता है, जिसके आगे हम सोच ही नहीं सकते। धर्म और विकास ये दोनों पहलु भिन्न है, जिसका एक दूसरे के साथ दूर-दूर तक वास्ता नहीं है। **धर्म अंधा और विकास वास्तव है।**

कलाकृति

कु. राहुल यादव
सुपुत्र, श्री राधेश्याम यादव

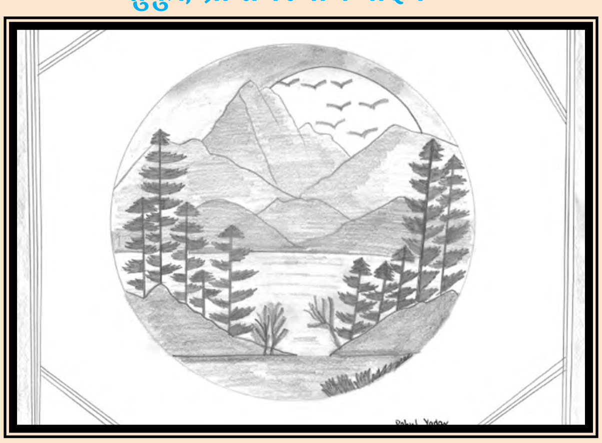

कु. रागिनी यादव
सुपुत्री, श्री राधेश्याम यादव

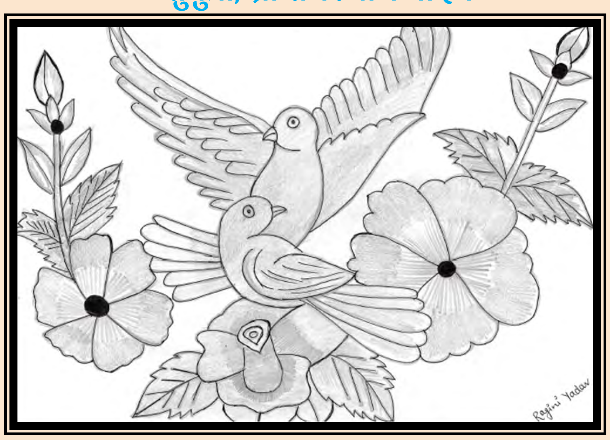

सफलता की राह

सुमैया तबस्सुम, धर्मपत्नी, बी महबूब बाशा ,आरआरएससी, बेंगलुरु

एक समय की बात है, एक किसान था जो बहुत मेहनती था। वह बड़ी मेहनत से खेतों में फसलें उगाता था और उनकी देखभाल करता था। अक्सर प्राकृतिक आपदाओं के कारण उसकी फसलें खराब हो जाती थीं। कभी सूखा पड़ता था तो कभी अधिक बारिश होती थी। कभी चिलचिलाती धूप तो कभी तूफान, उसकी फसलें खराब हो जाती थीं। एक दिन किसान एक पेड़ के नीचे बैठा अपनी फसल देख रहा था। उसने गुस्से से आसमान की ओर देखा और भगवान से बोला। "हे भगवान" लोग तुम्हें महान मानते हैं और सर्वज्ञ। वे कहते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप समझते हैं कि फसलें कैसे उगेंगी। यदि आप ऐसा करते तो लगातार बाढ़ और तूफ़ान नहीं आते, आप नहीं जानते कि हम किसानों को कितना नुकसान होता है। अगर मुझे पता होता मौसम को नियंत्रित करने की शक्ति, आप देखेंगे कि मैं अपनी फसलें कितनी अच्छी तरह उगा सकता हूं। उसे आश्चर्य हुआ, उसने आकाश से एक आवाज सुनी जिसने उत्तर दिया, मैं आपको इस मौसम में यह शक्ति देता हूं, आप अपने फायदे के लिए मौसम को नियंत्रित करने का निर्णय ले सकते हैं। आकाश से वह दिव्य आवाज सुनकर किसान खुश हो गया। कुछ दिनों के बाद, किसान ने अपने खेत में गेहूं बोया। अब किसान के पास मौसम को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करने की शक्ति थी। उसने अपनी फसल को तूफ़ान, बारिश और चिलचिलाती धूप से बचाया। उस वर्ष उसने ऐसी फसल पैदा की जैसी उसने पहले कभी नहीं की थी। किसान खुश था और साथ ही वह सोच रहा था कि वह भगवान से कहेंगे कि इसे शक्ति का सही उपयोग कहा जाता है। कुछ और दिनों के बाद जब फसल कटने के लिए तैयार हो गई, तो किसान ने बड़े उत्साह के साथ फसल काटना शुरू कर दिया। लेकिन जैसे ही उसने कटाई शुरू की, वह हैरान हो गया। उसने देखा कि वहां गेहूं नहीं था, केवल खाली भूसी थी। परेशान होकर फिर से भगवान को पुकारने लगा वह जोर से चिल्लाया "हे भगवान" क्या तुमने मुझे दंडित किया है? तभी ऊपर से आवाज़ आई। मैंने तुम्हें सज़ा नहीं दी है। बल्कि इसके लिए तुम ज़िम्मेदार हो। तुमने अपने पौधों को संघर्ष करने का मौक़ा नहीं दिया। तुमने उन्हें बारिश, तूफ़ान और चिलचिलाती धूप का सामना नहीं करने दिया। तुमने उन्हें हर चीज़ से बचाया, जब पौधे तूफान, बारिश और धूप का सामना करते हैं तो वे संघर्ष करते हैं और ताकत विकसित करते हैं। यह ताकत गेहूं के दाने का निर्माण करती है। आपने उन्हें उन कठिन समय से गुजरने नहीं दिया जो उन्हें मजबूत बनाते। इसलिए सारी भूसी खोखली है। यदि हम अपने जीवन में देखें तो पाते हैं कि हमारे विकास के लिए संघर्ष और चुनौतियाँ आवश्यक हैं, जैसे एक फसल को मजबूत और फलदायी बनने के लिए कठोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। लोगों को विकसित होने के लिए कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। चुनौतियाँ सज़ा नहीं हैं, बल्कि अवसर हैं ताकत बनाने के लिए"। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में कभी संघर्ष नहीं किया वह कभी सफल नहीं हो सकता। जो छात्र पूरे वर्ष लगन से पढ़ाई नहीं करता, वह अपनी कक्षा में शीर्ष पर आने की उम्मीद नहीं कर सकता। जो खिलाड़ी कड़ी मेहनत नहीं करता, वह स्वर्ण पदक नहीं जीत सकता। इसलिए जब भी आपको जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तो हमेशा याद रखें कि ये **कठिनाइयाँ हमें मजबूत और सक्षम बनने में मदद करती** हैं। इसलिए चुनौतियों को सीखने और जीवन में सफल होने के अवसर के रूप में लें।

व्यक्तिगत उपलब्धियां

सुश्री कर्नाटि श्री, सुपुत्री कर्नाटि कृष्णय्या को माध्यमिक परीक्षा में हिंदी विषय में 10/10 अंक प्राप्त करने पर संपादक मंडल की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

सितंबर-2023 से अक्तूबर 2024 के दौरान एनआरएससी / क्षेत्रीय केंद्रों से सेवानिवृत्त/ स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति कर्मचारीगण...

सायोनारा...

डॉ देबाशीष चक्रवर्ती

राजश्री वि. बोथले

मृत्युंजय रेड्डी

मालाकोंडेश्वर राव के

जॉन बोस्को

के. नागसेशय्या

सत्यनारायण टी

सुरेश मदन कुमार एम

रवि कुमार एम वी

नटराज शेखर पी

अंजम्मा जी

सीमा कुलकर्णी

विनोद कुमार के

श्यामा राव डी

रघु वर्मा टी

रामुलु एन

श्रीनिवास रेड्डी पी

पद्म वेंकटेश्वरन

राम करण

कृष्णा रेड्डी पी

उमेश सी एच

विजय शेखर रेड्डी ई

रवीन्द्र महादेवराव हिंगे

प्रमोद कुमार डी

मंजू शर्मा

"सरल है, सुबोध है, सुन्दर अभिव्यक्ति है, हिंदी ही सभ्यता है, हिंदी ही संस्कृति है"

सितंबर-2023 से अक्तूबर 2024 के दौरान राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र / क्षेत्रीय केंद्रों से सेवानिवृत्त/ स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति कर्मचारीगण...

सायोनारा...

कृष्णा किशोर बाबू जे

पाण्डु ओ

गोपा कुमार के

नरसिंह राव एस

गोवर्धन टी

राजेंद्र प्रसाद एस

चंद्रु जी. मंदारे

श्रीराम मूर्ति सी

सुनीता लता

नरसिम्हा बी

शिवन्नारायण टी

शांतन कुमार डी

आनंद कुमार सिंह बी

नागार्जुन डी

वर प्रसाद आर

राम मूर्ति एल

डी. वेंकट रमनी

वी. गणेश वेंकटचलपति

के. वेंकट रमना

श्री. जी. सिरी

के. जगन्नाधम

चंद्र मोहन जुतुरु

सूर्यवरा प्रसादिनी सीएच

विश्वास की ताकत...

संतोष पी, एनआरएससी, हैदराबाद

विश्वास एक महत्वपूर्ण भावना है जो हमारे जीवन में गहरी प्रासंगिकता रखती है। यह हमें जीवन में सामंजस्य, सहयोग, और स्थिरता के लिए आगाह करती है। विश्वास का मतलब है दूसरों पर पूरा भरोसा करना, स्थिर रहना, और अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखना। यह संवाद का मूल तत्व है जो व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को सुदृढ़ करता है। विश्वास का संबंध अधिकतर व्यक्ति के अंतर्निहित विचारों और अनुभवों से होता है। यह एक निरंतर प्रक्रिया है जो समय-समय पर परीक्षण के लिए आता है, लेकिन यदि विश्वास स्थिर और सच्चा है, तो यह अपने मूल्य को सिद्ध करता है। विश्वास की अवधारणा व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके नैतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में बदलती है। एक स्थिर व्यक्ति विश्वास-योग्य और स्वयं के प्रति संवेदनशील होता है, जो उसके आसपास के लोगों के बीच संबंधों में निर्माणशील योगदान करता है।

विश्वास का स्वरूप भिन्न-भिन्न हो सकता है। किसी व्यक्ति या परिस्थिति पर पूरी तरह से भरोसा करने के लिए पूरी शक्ति की आवश्यकता होती है, जबकि किसी दूसरे परिस्थिति में विश्वास में कुछ संदेह भी हो सकता है। विश्वास और संदेह का यह संयोग हमारे जीवन में नैतिकता और धार्मिकता की भी एक परीक्षा है। जीवन में अटूट श्रद्धा व विश्वास का होना अति आवश्यक है। कहते हैं आधा असर दवाई करती है और आधा असर दुआ या डॉक्टर के प्रति मरीज का विश्वास। विश्वास में प्रचंड शक्ति होती है, विश्वास बड़े से बड़े युद्ध में विजय दिलाता है, विषम से विषम स्थिति या संकट से सुरक्षित निकाल लेती है। मंत्र, जप, हवन, यज्ञ, तंत्र, मंत्र, शांति-कर्म तथा धर्मोपचार व प्रार्थना, पूजा आदि में तरंगों-(शब्द तथा विचारों की) की सूक्ष्म शक्ति, तथा विधान के अलावा साधक की अपनी श्रद्धा एवं विश्वास का भी विशेष स्थान होता है। पूर्ण लाभ के लिए अथवा तीव्र प्रभाव के लिए श्रद्धा एवं विश्वास का दृढ़ होना भी आवश्यक होता है, इसीलिए श्रद्धा को परम कल्याणदायिनी माना गया है। समस्त पूजनों व उपचारों में श्रद्धा, आस्था तथा विश्वास होना ही चाहिए। श्रद्धा, विश्वास एवं विधि-विधानों व नियमों का अक्षरशः पालन ही सफलता की सीढ़ियां है। इनके अभाव में कोई भी उपचार अथवा अनुष्ठान पूर्ण फलदायक नहीं हो सकता।

विश्वास एक ऐसी अनमोल भावना है जो हमारे जीवन में गहरी प्रासंगिकता और महत्वपूर्ण रखता है। यह न केवल हमें अपने आप में स्थिरता और आत्मविश्वास प्रदान करता है, बल्कि समाज में भी संबंधों को मजबूत और स्थिर बनाता है। विश्वास की शक्ति के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए, इसके महत्वपूर्ण पहलुओं को जानते हैं:

1. समृद्ध संबंधों की नींव

विश्वास समृद्ध संबंधों की नींव होता है। जब हम किसी पर पूरा विश्वास करते हैं, तो हमारे बीच संबंधों में स्थिरता आती है। यह संबंधों को विश्वास और समर्थन से भर देता है और हमें अपने संबंधों को मजबूत बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

2. आत्मविश्वास को बढ़ावा

विश्वास से भरा व्यक्ति अपने आत्मविश्वास को सुधार पाता है। यह उसे अपनी क्षमताओं को समझने और उन्हें विकसित करने में मदद करता है। अगर हमें अपनी क्षमताओं पर पूरा विश्वास है, तो हम सकारात्मक दृष्टिकोण और निर्णय लेते हैं जो हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

3. संघर्षों को पार करने की क्षमता

विश्वास से युक्त व्यक्ति को संघर्षों को पार करने की शक्ति मिलती है। जीवन में हमें हमेशा चुनौतियां और कठिनाइयां आती हैं, लेकिन विश्वास वाले व्यक्ति को इन संघर्षों का समाधान निकालने की क्षमता होती है। यह उसको अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण और संघर्षशीलता प्रदान करता है।

4. सहयोग और समर्थन

विश्वास से युक्त होने से हमें अपने आसपास के लोगों के सहयोग और समर्थन की अधिक संभावना होती है। अन्य लोग हमें अधिक सहानुभूति और समर्थन प्रदान करते हैं, जो हमें अपने लक्ष्यों की दिशा अग्रसर करने में मदद करता है।

5. समाज में सकारात्मक परिवर्तन

विश्वास से युक्त होने से व्यक्ति के अंदर सकारात्मक परिवर्तन आते हैं और वह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होता है। यह उसकी स्थायी और स्थिर प्रभावशीलता को दिखाता है और समाज को प्रेरित करता है कि वह भी सकारात्मक दिशा में अग्रसर हो।

इन सभी पहलुओं से स्पष्ट होता है कि विश्वास की शक्ति हमारे जीवन को सुधारने में और हमें अपने लक्ष्यों की दिशा में सफलता प्राप्त करने में मदद कर सकती है। यह हमें एक सुरक्षित और स्थिर मार्ग प्रदान करता है जो हमें स्वाधीन और समृद्ध बनाता है।

भारतीय समाज पर अंबेडकर का प्रभाव

डॉ. वी. पूंपावै, आरआरएससी, बेंगलूरु

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर, जिन्हें प्यार से 'बाबासाहेब' कहा जाता है, भारतीय संविधान के निर्माता हैं। अम्बेडकर ने हाशिये पर पड़े समुदायों के अधिकारों की लगातार वकालत की और सामाजिक अन्याय और असमानताओं को खत्म करने का प्रयास किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांत राष्ट्र के शासन के लिए मार्गदर्शक स्तंभ हैं। अंबेडकर, 2012 में आउटलुक मैगज़ीन द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण में 'महानतम भारतीय' (स्वतंत्रता के बाद से) साबित हुए। देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था और भू-राजनीतिक प्रभाव के कारण, स्वतंत्र भारत को एक वैश्विक नेता के रूप में उभरने में अम्बेडकर का बहुत बड़ा प्रभाव है। डॉ.बी.आर.अम्बेडकर की विरासत समकालीन भारत में जारी है और उनकी विचारधाराएँ प्रेरित करती रहती हैं। उनकी शिक्षाएं एक समावेशी और समतावादी राष्ट्र की दिशा में कानूनी, नीतियों और सामाजिक बदलाव पर कायम हैं।

संविधान की प्रारूपण समिति के सदस्य

अंबेडकर की भूमिकाएं:

- सामाजिक-राजनीतिक सुधारक
- आर्थिक दूरदर्शी
- मजदूरों के कल्याण के लिए मशाल वाहक
- कानून विशेषज्ञ
- सामाजिक न्याय के चैंपियन
- महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की वकालत

उनकी शिक्षाएं एक समावेशी और समतावादी राष्ट्र की दिशा में कानूनी ढांचे, नीतियों और सामाजिक बदलाव पर कायम हैं।

14 अप्रैल 1942 को अपने जन्मदिन पर महिला कार्यकर्ताओं के साथ

बाबासाहेब अंबेडकर के विभिन्न पहलू भारत के संवैधानिक लोकतंत्र के लिए मार्गदर्शक अवधारणाएं रहे हैं और एक दूरदर्शी भारत के लिए आधार तैयार किया है। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में मान्यता दी और जाति और लिंग के बावजूद सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर दिया।

न्याय और समानता के लिए डॉ.बी.आर.अंबेडकर की अथक खोज आधुनिक भारत का मार्गदर्शन करने वाली एक किरण है। पीड़ित समुदायों की आवाज बनने की उनकी यात्रा हर व्यक्ति के लिए प्रेरणाश्रोत है। आइए हम सामूहिक प्रयास और समर्पण के साथ एक समतापूर्ण समाज के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें।

अंबेडकर जी के कथन :

" मुझे अपने देश भारत पर गर्व है कि इसका संविधान लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों को स्थापित करता है "

" मैं किसी समुदाय की प्रगति को, महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति के आधार पर मापता हूं "

"भाषा के माध्यम से संस्कृति सुरक्षित रहती है। चूँकि भारतीय एक होकर सामान्य सांस्कृतिक विकास करने के आकांक्षी हैं, अतः सभी भारतीयों का अनिवार्य कर्तव्य है कि वे हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएँ "

\- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

जीवन में असफलताओं से निपटना

डॉ. एन अपर्णा, एनआरएससी, हैदराबाद

आज फिर मैं अपनी कलम लेकर एक नए अनुभव के बारे में लिखने बैठी हूं जो जिंदगी ने मुझे दिया है। आजकल हम देख रहे हैं कि युवा पीढ़ी अवसादग्रस्त हो रही है और असामान्य व्यवहार कर रही है। वे असफलताओं या किसी से "नहीं" स्वीकार करने की स्थिति में नहीं हैं। हम देख रहे हैं कि पीढ़ी दर पीढ़ी मानसिक शक्ति कम होती जा रही है।

कई बार मैंने युवा पीढ़ी को देखा है, जब भी ऑफिस में हमारी समीक्षा होती है या कोई परीक्षा होती है, तो वे बहुत तनावग्रस्त और चिंतित हो जाते हैं। यदि वे सफल नहीं होते हैं तो वे सिस्टम को दोष देना या बॉस आदि को दोष देना शुरू कर देंगे। इससे कार्यालय का पूरा माहौल काम करने के लिए अनुकूल नहीं रह जाता है। वे काम करना या भार साझा करना भी बंद कर देते हैं। जीवन के साथ इस तरह व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। जीवन हर दिन एक नई चुनौती है और हर दिन एक सीखने का दिन है।

वास्तव में कुछ लोगों का मानना है कि अपने बच्चों के व्यवहार के लिए केवल हम ही दोषी हैं। हम अत्यधिक सुरक्षात्मक रहे हैं और देखा है कि उन्हें जीवन में किसी भी समस्या या असफलता का सामना नहीं करना पड़ता है। जब वे बड़े होते हैं तो वे उम्मीद करते हैं कि जीवन भी वैसा ही होगा, लेकिन जीवन पूरी तरह से अलग है। यह किसी दर्शन या किसी अन्य चीज़ के बारे में नहीं है, बल्कि युवा पीढ़ी को जीवन के लिए तैयार करने के बारे में है।

विफलता, तनाव और असफलताओं से निपटने की क्षमता महत्वपूर्ण है, लेकिन कई युवाओं में जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक भावनात्मक लचीलेपन की कमी होती है।

अगर आज युवाओं के सामने आने वाली वास्तविक समस्याओं पर गौर करना शुरू करें तो वे बहुआयामी हैं, जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और मनोवैज्ञानिक कारकों से उपजी हैं।

उच्च शैक्षणिक दबाव, नौकरी की असुरक्षा और सामाजिक तुलना जैसे उच्च तनाव और चिंता, जो अक्सर सोशल मीडिया द्वारा बढ़ाए जाते हैं, तनाव और चिंता को बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त यह देखा गया है कि युवा लोगों में आत्महत्या की दर बढ़ रही है, जो अक्सर मानसिक स्वास्थ्य संघर्ष, धमकाने और सामाजिक अलगाव से जुड़ी होती है।

जीवन में असफलताओं से निपटना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन यह वृद्धि और विकास का एक अनिवार्य हिस्सा भी है। जब आप असफल होते हैं तो निराश, या परेशान होना स्वाभाविक है। अपने आप को बिना किसी निर्णय के इन भावनाओं को महसूस करने दें। उन्हें दबाने से बाद में और भी महत्वपूर्ण मुद्दे पैदा हो सकते हैं।

अनुभव के आधार पर मैं केवल यह सुझाव दे सकती हूं कि विफलता को एक गतिरोध के रूप में देखने के बजाय, कृपया युवाओं को इसे सीखने के अवसर के रूप में देखने के लिए कहें। हर असफलता आपको इस अनुभव से सीख देगी। मानसिकता में यह बदलाव विफलताओं को मूल्यवान सबक में बदल सकता है।

असफलता में अपनी भूमिका स्वीकार करें। इसका मतलब खुद को कठोरता से दोष देना नहीं है, बल्कि यह पहचानना है कि आपसे कहां गलती हुई है। जिम्मेदारी लेना सुधार की दिशा में पहला कदम है। स्थिति को तोड़ें और उन कारकों की पहचान करें जिनके कारण विफलता हुई। इन तत्वों को समझने से आपको भविष्य में इसी तरह के नुकसान से बचने में मदद मिल सकती है।

विशेष रूप से कार्यालय के माहौल में संतुलित रहना और संतुलित दृष्टिकोण रखना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। हम सभी को गीता के इस वाक्यांश को समझना चाहिए कि अपना काम करते रहो और परिणाम की आशा मत करो। जब आप परिणामों के बारे में चिंता नहीं करेंगे तो चीजें अपने आप ठीक हो जाएंगी। हमें खुश रहने और खुशियां फैलाने की सीख देनी होगी।

" राजनीति, वाणिज्य तथा कला के क्षेत्र में देश की अखंडता के लिए हिंदी की महत्ता की ओर सभी भारतीयों को ध्यान देना चाहिए, चाहे वे किसी भी क्षेत्र के रहने वाले और अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाएँ बोलने वाले हों '

- चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
बालानगर, हैदराबाद - 500037